वीर		म हिर
	दिल्ल	री
	*	
	a	د است
क्रम संख्या	13	-8 Z
काल न०	2 2 8	ब (रु
लण्ड ———		ِ "ت

थेर-गाथा

राहुलसङ्किच्चानेन स्रानन्दकोसङ्कानेन जगदीसकस्सपेन च सम्पा_{वितो}

उत्तमभिक्खुना पकासितो २४८१ बुद्धबन्छरे (1937 A. C.) PRINTED BY M. PANDEY AT THE A. I. J. PRESS, ALLAHABAD AND PUBLISHED BY UTTAM BURKSHU, RANGOON

प्राङ्निवेदनम्

पालिबाङ्गमयस्य नागराक्षरे मुद्रण अत्यपेक्षितमिति नाविदितचरं भारती-येतिहामविविदिषुणाम् । सम्कृतपालिभाषयोग्तिमामीप्यादिष यत् परम्महसभ्य जिज्ञासुभ्यः सम्कृतजेभ्य पालिग्रन्थरात्रयवगाहन दुष्करमिव प्रतिभाति तत् लिपि-भेदादेव । एतदर्थमयमस्माकमिनवः प्रयासः । अत्र नृतना अपि पाठभेदाः निधेया इत्यासीदस्माकं मनीषा परं कालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदादन्यत्र न तत् कृतमभूत् । अधोटिप्पणीषु मिन्नवेशिताः पाठभेदाः । प्रायः Pali Text Society मृद्धितेभ्यो ग्रन्थभ्य उद्धनाः ।

अर्थमाहाय्यं विना अस्मत्ममीहित हृदि निग्हितमेव स्यात् । तत्र भदन्तेन उत्तमस्यविरेण साहाय्य प्रदाय महद्गुकृतमिति निवेदयित--

कात्तिकशुक्लैकादश्या | २४८० बुद्धाब्दे | राहुलः सांकृत्यायनः आनन्दः कौसल्यायनः जगदीशः काश्यपश्च

विषय-सूची

	वृष्ठ	gg
?⊸एकनि <mark>पा</mark> तो	ą	गोसाळो थेरो ६
१- वग्गी पठमी	` २	मुगन्धो थेरो ६ नन्दियो थेरो ६
पुण्णो मन्तानिपुत्तो थेरो	२	अभयो थेरो ७
दब्बो थेरो	२	ळोमसकङ्गियो थेरो ७
सीतवनियो थेरो	२	 जम्बुगासिकपुत्तो थेरो ७
भल्लियो थेरो	₹	हारितो थेरो ७
वीरो थेरो	₹	्र जितयो थेरो ७
पिलिन्दवच्छो थेरो	ş	४ व्यग्गो चतुत्थी ८
२-वग्गो दुतियो	8	गह्वरतीरिया भि ष ्तु
पुण्णमासी थेरो	R	सुप्पियो थेरो प
चूलवच्छो थेरो	8	सोपाको थेरो द
महागवच्छो थेरो	8	पोसियो थेरो द
वनवच्छत्थेरो	У	सामञ्जकानि थेरो द
वनवच्छस्स थेरस्स सामणेरो	8	कुमीपुत्तो थेरो द
कुण्डधानो थेरो	Х	कुमापुत्तस्सथेरस्स सहायको थेरो ६
वेलट्ठसीसो थेरो	¥	गवम्पति थेरो ६
दासको थेरो	¥	तिस्सो थेरो ६
सिगालपिता थेरो	¥	वड्ढमानो थेरो ६
कुळो थेरो	×	५-व्रगो पञ्चमी १०
३-वग्गो ततीयो	Ę	सिरिवड्ढो थेरो १०
अजितो थेरो	Ę	खद्दिरवनियो थेरो १०
निप्रोधत्येरो	Ę	सुमङ्गळो थेरो १०
वित्तको थेरो	Ę	साहु थेरो १०

	<i>বৃ</i> ষ্ট		प्रष्ठ
रमणीयविहारी थेरो	१०	आतुमो थेरो	१६
समिद्धि थेरो	१०	माणवो थेरो	१६
उज्जयो थेरो	११	सुयामनो थेरो	१६
सङ्जयो थेरो	११	सूसारदो थेरो	१६
रामगेय्यको थेरो	११	विधङजहो थेरो	१६
६-वरगो खट्टो	१२	हत्यारोहपुत्तो थेरो	१७
विमलो थेरो	-	मेण्डसिरो थेरो	१७
ावमला थरा गोधिको थेरो	१२	रिक्खतो थेरो	१७
	१२	उग्गो थेरो	१७
सुबाहु थेरो वस्लिया थेरो	१२ १२	୯-वग्गो नवमो	१८
उत्तियो थेरो	१२ १२	समितिगुत्तो थेरो	?=
अञ्जनावनियो थेरो	१२	कस्सपो थेरो	१=
कुटिविहारी थेरो	१२	सीहो थेरो	१८
कुटिविहारी थेरो	१३	नीतो थेरो	१८
रमणीयकुटिको थेरो	१३	सुनागो थेरो	१८
कोसलविहारी थेरो	१३	नागितो थेरो	१८
9-वग्गी सत्तमी	१४	पविड्ठो थेरो	38
वप्पो थेरो	6.R	अञ्जुनो थेरो	38
वज्जिपुत्तो थेरो	१४ र॰	देवसभो थेरी	38
पश्लो थेरो	१४ १०	सामिदत्तो थेरो	38
विमलकोण्डङजो थेरो	१४	१० वर्गी दसमी	२०
उक्खेपकतवच्छो येरो	6 8	परियुण्णको थेरो	२०
मेघियो थेरो	8.R	विजयो थेरो	२०
एकधम्मसवनीयो थेरो	१४	एरको थेरो	२०
एकुद्दानियो थेरो	१५	मेत्तजि थेरो	२०
छन्नो थेरो	१५	चक्खुपालो थेरो	२०
पुण्णो थेरो	१प्र	खण्डसुमनो घेरो	२०
J		तिस्सो थेरो	२१
८-वग्गो श्रहमो	१६	अभयो थेरो	२१
वच्छपालो थेरो	१६	उत्तियो थेरो	२१

	पृष्ठ	-	पृष्ठ
देवसभो थेरो	२१	सुराधो थेरो	२७
११-वग्गो एकाइसयो	२२	गोतमो येरो	२७
वेलट्ठकानि थेरो	२२	वसभो थेरो	२७
सेतुच्छत्थेरो	२२	२-वग्गो दुतियो	२ ୯
बन्धुरो येरो	२२	महाचुन्दो थेरो	२६
खितको थेरो	२२	जोतिदासो थेरो	38
मलितवम्बो थेरो	२२	हेरञ्जकानि थेरो	38
सुहेमन्तो थेरो	२२	सोभमित्तो थेरो	३०
धम्मसबो थेरो	२३	सम्बमित्तो थेरो	३०
धम्मसविपत्तु थेरो	२३	महाकालो थेरो	₹०
सङ्घरिक्खतो थेरो	२३	तिस्सो थेरो	₹0
उसभो थेरो	२३	किम्बिलो थेरो	३०
१२-वग्गो द्वादसयो	78	नन्दो थेरो	3 8
जेन्तो थेरो	٠٠ ٦४	सिरिमा थेरो	38
वच्छगोत्तो थेरो	78	३वग्गो ततियो	३२
	•	३वग्गो ततियो उत्तरो थेरो	३२ ३२
वच्छगोत्तो थेरो	२४	•	•
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो	२४ २४	् उत्तरो थेरो	३ २
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो	48 48	उत्तरो थेरो भद्दजि थेरो	३२ ३२
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो	48 48 48	उत्तरो थेरो भद्दजि थेरो सोभितो थेरो	३२ ३२ ३२
बच्छगोत्तो थेरो बनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो	78 78 78 78 78	उत्तरो थेरो भद्दजि थेरो सोभितो थेरो विल्लियो थेरो	३२ ३२ ३२ ३२
बच्छगोत्तो थेरो बनबच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो	78 78 78 78 78 78	उत्तरो थेरो भद्दजि थेरो सोभितो थेरो विल्लयो थेरो बीतसोको थेरो	** ** ** **
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो	28 28 28 28 28 28 28	उत्तरो थेरो भद्दजि थेरो सोभितो थेरो विल्लयो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो वज्जिपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो	? & ? & ? & ? & ? & ? & ? & ? &	उत्तरो थेरो भह्जि थेरो सोभितो थेरो विल्लयो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो विज्जपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो	? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?	उत्तरो थेरो भद्दजि थेरो सोभितो थेरो बल्लियो थेरो बोतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो	***********
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बज्जिपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो विल्लयो थेरो		उत्तरो थेरो भट्टिज थेरो सोभितो थेरो विल्लयो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्वको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो	? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बिज्जिपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकिनिपातो विल्ल्यो थेरो गङ्गातीरियो भिक्ख		उत्तरो थेरो भइजि थेरो सोभितो थेरो बिल्लयो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो कण्हविसो थेरो	??????????????????????????????????????
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बिज्जिपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो विल्ल्यो थेरो गङ्गातीरियो भिक्खु अजिनो थेरो	. ** ** * * * * * * * * * * * * * * * *	उत्तरो थेरो भहिज थेरो सोभितो थेरो बिल्लियो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो कण्हिबसो थेरो ४—खग्गो चतुरूथो मिगसिरो थेरो	
वच्छगोत्तो थेरो वनवच्छो थेरो अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बिज्जिपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकिनिपातो विल्ल्यो थेरो गङ्गातीरियो भिक्ख		उत्तरो थेरो भइजि थेरो सोभितो थेरो बिल्लयो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो कण्हविसो थेरो	??????????????????????????????????????

	वृष्ठ		ââ
इसिविन्नो थेरो	₹६	उत्तरपालो थेरो	88
सम्बुलकच्यानो येरो	३६	अभिभूत स्थेरो	88
खितको थेरो	३६	गोतमो थेरो	ጸጸ
सोणोपोदिरियपुत्तो थेरो	₹	हारितो थरो	ጸጸ
निसभो थेरो	३६	विमलो थेरो	ሄሂ
उसभो घेरो	₹७	४−चतुकनिपात <u>ो</u>	४६
कप्पटकुटो घेरो	३७	नागसमाल थेरो	४६
५-वग्गो पञ्चमो	ş⊏	भगु थेरो	४६
कुमारकस्सपो थेरो	3=	सभियो थेरो	४७
धम्मपालो थेरो	3 C	नन्दको थेरो	४७
बह्मालि येरो	3 C	जम्बुको थेरो	४७
मोघराजा थेरो	₹5	सेनको थेरो	४७
विसाखोपञ्चालिपुत्तो थेरो	₹¢ 3€	सम्भूतो थेरो	४द
चूलको थेरो	3 E	राहुलो थेरो	४८
अनुपमो थेरो	3 F	चन्दनो थेरो	४८
वज्जितो येरो	36	धम्मिको थेरो	. ४६
सन्धितो घेरो	38	सप्पको थेरो	38
	70	मुदितो थेरो	38
३−तिकनिपातो	४१	५ <i>−</i> पञ्चनिपातो	५०
अङ्गणिक भारद्वाजयेरी	88	राजदत्तो थेरो	५०
पञ्चमो थेरो	88	मुभूतो थेरो	५०
वाकुल थेरो	४२	गिरिमानन्दो थेरो	५१
धनियो थेरो	४२	सुमनो थेरो	५१
मातङ्गपुत्तो थेरो	४२	वड्ढो थेरो	* 8
खुण्जसोभितो थेरो	४२	नविकस्सपो थेरो	५२
वारणो थेरो	४३	गयाकस्सपो थेरो	५२
पस्सिकत्थेरो	ΧŞ	वक्कली थेरो	ХŞ
यसोजत्थेरी	8.9	विजितसेनो थेरो	४३
साटिमत्तियत्थेरो	8.8	यसवत्तो येरो	χş
उपालि थेरो	ጸጸ	सोणो कुटिकण्णो थेरो	ХR

	()	t)	
	प्रष्ठ		प्रष्ट
कोसियो थेरो	አጸ	काकुदायी थेरी	٦. دد
६छनिपातो	ધ ષ	एकविहारियो थेरो	ĘĒ
र आगारता उह्रवेळकस्सपो थेरो	\ \ \\	महाकम्पिनो थेरो	90
तेकिच्छकानि थेरी	<u> </u>	चूलपन्यको थेरो	७१
महानागो थेरो	પ્રદ	कप्पो थेरो	७१
कुल्लो थेरो	४६	उपसेनो बङ्गन्तपुत्तो थेरो	७२
मालङ्क्यपुत्तो थेरो	५७	गोतमो थेरो	७३
सप्पदासत्थेरो	४७	११ –एकाटसनिपातो	98
कातियानो थेरो	४८	संकिच्च थेरो	હય
मिगजालो थेरो	ሂፍ	१२–द्वादसनिपातो	७६
जेन्तो पुरोहितपुत्तो थेरो	3,8	ऽ	-
सुमनो थेरो	४९	सालबत्यरा सुणीतो थेरो	99
न्हातकमुनि थेरो	६०		છછ
ब्रह्मदत्तो थेरो	६०	१३–तेरसनिपातो	96
सिरिमण्डो थेरो	Ęo	सोणो कोळिविसो थेरो	30
सब्बकामो थेरो	६१	१४-चुइसनिपातो	८०
७-सत्तनिपातो	६२	रेवतो थेरो	50
सुन्दरसमुद्दो थेरो	६२	गोदत्तो थेरो	5 و
लकुण्टको थेरो	६३	१६-सोळसनिपातो	८ २
भद्दो थेरो	६३	. २ साळसानगरा। अञ्जाकोण्डञ्जो थेरो	E 3
सोपाको येरो	६४	जञ्जाकाण्डञ्जा यरा उदायो थेरो	न्द इ४
सरभङ्गो थेरो	ÉR		
८−त्र्रहनिपातो	६५	२० −वीसतिनिपातो	८४
महाकच्चायनो थेरो	६५	अधिमुतो थेरो	د ٤
सिरिमित्तो थेरो	६६	पारापरियो थेरो	55
महायन्यको थेरो	६६	तेलकानि थेरो	<u>۾ 3</u>
६-नवनिपातो	६७	रट्ठपालो थेरो	83
भूतो थेरो	Ęu	मालुक्यपुत्तो थेरो सेलो खेरो	६२
१०दसनिपातो	६८		83
१ - युषागत्रासा	70	अङ्गलिमालो थेरो	६६

(६)

	हरु		प्रष्ठ
अनिरुद्धो थेरो	€=	महाकस्सपो थेरो	११०
पारापरियो थेरो	१००		
३०-तिंसनिपातो	१०१	५०-पञ्ञासनिपातो	१११
फुस्सत्येरो	१०३	तालपुटो थेरो	११४
सारिपुत्तो थेरो	१०५		0.0
आनन्दो थेरो	१०७	६०-सद्विकनिपातो	११५
४० -चत्तालीसनिपात ो	१०=	महानिपातो	१२०

थेर-गाथा

नमें) तन्स भगवती बरहती सम्मा सम्बद्धाःस

सीहानं व नदन्तान दाठीनं गिरिगब्भरे । सुणाथ भावितत्तान गाथा अत्तुपनायिका ॥१॥ यथा नामा यथा गोता यथा धम्म विहारिनो यथाधिमुत्ता सप्पञ्ञा विहिष्सु अनिन्दिता ॥२॥ तत्थ तत्थ विपस्सिन्वा फुसित्वा अच्चुत पदं कतन्तं पच्चवेक्वन्ता इम अत्थं अभासिस् ॥३॥

एकनिपातो

वग्गो पठमो

छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, वस्स देव यथा सुखं;
चित्त मे सुसमाहितं विमुत्तं, आतापी विहरामि, वस्सदेवा 'ति ॥१॥
इत्यं सुद आयस्मा सुभूति थेरो गायमभासित्या'ति ।
उपसन्तो उपरतो मन्तभाणी अनुद्धतो
धुनाति पापके धम्मे दुमयत्त व मालुतो 'ति ॥२॥
इत्यं सुदं आयस्मा महाकोद्विकथेरो गायमभासित्य ।
पञ्ज इमं पस्स तथागतानं, अग्गि यथा पज्जलितो निसीये ।
आलोकदा चक्खुददा भवन्ति ये आगतानं विनयन्ति कङ्खिन ॥३॥
इत्यं सुदं आयस्मा कङ्खारेवतो थेरो गायं अभासित्य ।
सिक्भरेव समासेय पण्डितेहत्थदिस्सिभः
अत्यं महन्त गम्भीरं दुइसं निपुणं अणुं
धीरा समधिगच्छिन्त अप्पमत्ता विचक्खणा 'ति ॥४॥

श्रायस्मा पुण्णो मन्तानिप्रत्तो थेरो

यो दुद्दमयो दमेन दन्तो दब्बो सन्तुसितो वितिण्णकझलो विजितावि अपेतभेरवो हि दब्बो सो परिनिब्बतो ठितत्तो 'ति ॥५॥

त्रायस्मा दब्बो थेरो

यो सीतवनं उपागा भिक्खु एको सन्तुसिनो समाहितत्तो विजितावि अपेनलोमहंसो रक्खं कायगतासित भितीमा 'ति ॥६॥

श्रायस्मा सीतवनियो थेरो

यो पानुदि मञ्चुराजस्स सेनं नळसेतुं व सुदुब्बलं महोघो विजितावि अपेतभेरवो हि दन्तो सो परिनिब्बुतो ठितत्तो 'ति ॥७॥

श्रायस्मा भक्तियो थेरो

यो दुहमयो दमेन दन्तो वीरो सन्तुसितो वितिष्णकद्भवो विजितावि अपेतलोमहंसो वीरो सो परिनिब्बुतो ठितत्तो 'ति ॥८॥

वीरो थेरो

स्वागतं नापगतं न पिदं दुम्मन्तितं मम । संविभत्तेसु धम्मेसु यं सेट्ठ तदुपागमिन्ति ॥९॥

पिलिन्दवच्छो थेरो

बिहरि अपेक्स टघ वा हुर वा यो वेदगू समितो यनतो । सब्बमु धम्मेसु अनुपलितो लोकस्स जञ्ञा उदयब्बयञ्चा 'ति ॥१०॥ वस्सो पठमो

उद्दानं

सुभुति कोट्टिको थेरो कट्खाकेत सुब्बती मन्तानिपुत्ती दस्बी च सीतशनियो च भक्षियो वीरो पिलिन्दवच्छी च पुण्यमासी तमोनुदोर ति ।

वग्गो दुतियो

पुराणमामी थेरो

पामुज्जबहुलो भिक्खु धम्मे बृद्धप्पवेदिने । अधिगच्छे पद सन्त सम्बारूपसम सुखन्ति ॥११॥

चूलगक्चो यरो

पञ्जाबली सीलवत्पपन्नो समाहितो झानरतो सतीमा । यदित्यय भोजन भुञ्जमानो कद्धत्येत काल ३६ वीनरागो 'ति ॥१२॥

महागवच्छो थरो

नीलब्भवण्या रुचिरा सीनवारी सुचिन्धरा । गोपइन्दकसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मन्ति ॥१३॥

वनवच्छत्थरो

उपज्झायो म अवचासि इतो गच्छामि सीवव गामे मे वसति कायो अरञ्ञ मे गतो मनो से मानको पि गच्छामि, नित्य सगो विजानतन्ति ॥१४॥

वनवच्छस्स थरस्स सामगोरो

पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च चुत्तरि भावये, पञ्चमघातिगो भिक्खु ओघतिष्णो 'नि वृच्चती ति ॥१५॥

कुगडधानो थरो

ययापि भद्दो आजञ्ञा नङ्गला वत्तनी सिखी गच्छति अप्पकसिरेन, एव रित्तन्दिवा मम गच्छन्ति अप्पकसिरेन मुखे लढे निरामिसे 'ति ॥१६॥

बेलट्उसीसो थेरो

मिद्धी यदा होति महम्बसी च निद्दायिता सम्परिवत्तसायी महावराहो व निवापपुट्ठो पुनप्पुनं गब्भमुपेति गन्दो 'नि ॥१७॥

दासको थेरो

अहू बुद्धस्स दायादो भिक्खु भेसकळावने केवलं अट्टिसञ्जाय अफरि पट्टीव इमं मञ्जो 'हं कामराग मो लिप्पमेव पट्टीयतीति ॥१८॥

सिगालपिता थेरो

उदक हि नयन्ति नेत्तिका उसुकारा नमयन्ति तेजन, दारु नमयन्ति तच्छका, अत्तान दमयन्ति सुख्यतानी 'नि ॥१९॥

कुळो थरो

मरणे मे भयं नित्थ, निकन्ती नित्थ जीविते, सन्देहं निक्षिपस्सामि सम्पजानो पितस्सतो 'ति ॥२०॥

वग्गो दुतियो

उद्दानं

चृजवरस्त्री महावच्छी वसवरस्त्री च सीवकी कुण्डमानी व बेजट्रित दासकी च तती परं सिङ्गाजीपनिकी थेगी कुजी च ऋजिनी दसा पीन ॥२०॥

वग्गो ततियो

अजितो थेरो

नाह भयस्स भायामि, सत्था नो अमतस्स कोविदो ॥ यत्थ भयं नावतिद्वति तेन मग्गेन वजन्ति भिक्खवो 'ति ॥२१॥

निम्रोष्ट्यरा

नीला सुगीवा सिखिनो मोरा कारविय अभिनदन्ति, ते सीतवात कलिता सूत्त झाय निबोधेन्तीति ॥२२॥

चित्तको थरो

अह सो वेद्धगुम्बिस्म भुत्वान मधुपायास पदिक्लण सम्मसन्तो खन्धान उदयब्बय सानु पटिगिमस्सामि विवेकमनुबूह्यन्ति ॥२३॥

गोसाको थरो

अनुवस्सिको पब्बजितो, पस्स धम्मसुधम्मतं, तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२४॥

सुगन्धो थरो

ओभासजातं फलग चित्तं यस्स अभिण्हसो, तादिसं भिक्खु आसज्ज कण्ह दुक्खं निगच्छसीति ॥२५॥

🚁 🛫 नन्दियो थेरो

सुत्वा सुन्धासितं वाच बृद्धस्सादिच्चवन्धुनो पच्च व्याधि हि निपुणं वालग्ग उसुना यथा 'ति ॥२६॥

अभया थेरो

दब्ब कुस पोटिकलं उसीरं मुञ्जापब्बजं उरसा पनुदहिस्सामि विवेकमनुबूहयन्ति ॥२७॥

ळोमसकङ्गियो थेरो

कच्चि नो वत्यपमुतो, कच्चि नो भूसनारतो, कच्चि सीलमयं गन्धं त्व वासि नेतरा पजा 'नि ॥२८॥

जम्बुगामिकपुत्तो थेरो

समुन्नमयमत्तानं उसुकारो व तेजनं चित्तं उजु करित्वान अविज्जं छिन्द हारिता 'नि ॥२९॥

हारितो येरो

आबाधे में समुष्पन्ने सित में उपपज्जथ अबाधों में समुष्पन्नों कालों में न ष्पमज्जित्नि ॥३०॥

उत्तियो थरो

वग्गो ततियो

उद्दानं

निम्रोधो चित्तको थेरो घोसालत्थेरो सुगन्धो नन्दियो अभयो थेरो थेरो लोमसकंगियो जम्बुगामिक पुत्तो च हारितो उत्तियो इसीति।

वग्गो चतुत्यो

फुट्ठो डसेहि मकसेहि अरञ्ज्ञास्म ब्रहावने नागो संगामसीमे व सतो तत्राधिवासये 'ति ॥३१॥

गह्नरतीरिया भिक्ख

अजर जीरमानेन तप्पमानेन निब्धृतिं निम्मिस परमं सन्ति योगक्खेम अनुत्तरन्ति ॥३२॥

सुप्पियो थेरो

यथापि एकपुत्तस्मि पियस्मिं कुसली सिया एवं सब्बेमु पाणेसु सब्वत्य कुसली सिया 'ति ॥३३॥

सोपाको यरो

अनासन्नवरा एता निच्चमेव विजानता गामा अरङ्घामागम्म ततो गेह उपाविमि ततो उद्वाय पक्कामि अनामन्तेत्वा पोसियो 'ति ॥३४॥

पोसियो थरो

मुख मुखन्थो लभते तदाचर, कित्तिञ्च पप्पोति, यसस्म वड्डति यो अरियमटुङगिकमञ्जम उज् भावेति मर्ग्ग अमतस्म पत्तिया 'ति ॥३५॥

सामञ्जकानि थेरो

साधु सुत साघु चरितक साघ् सदा अनिकेतविहारो अत्यपुरछन पदक्खिणकम्म एत सामञ्जामिकञ्चनस्सा 'ति ॥३६॥

कुमीपुत्तो थरो

नाना जनपदं यन्ति विचरन्ता असञ्ज्ञता समाधिञ्च विराधेन्ति, कि सु रट्टचरिया करिस्सति तस्मा विनेय्य सारम्भं झापेय्य अपूरक्खतो 'ति ॥३७॥

कुमापुत्तन्सथरस्य सहायको थरो

यो इद्विया सरभुं अट्ठपेसि सो गवम्पति असितो अनेजो, त सब्बसङ्गातिगतं महामुनि देवा नमस्सन्ति भवस्सपारगुन्ति ॥३८॥

गवम्पति थरो

सित्तया विय ओमट्ठो डय्हमाने व मन्थके कामरागपहानाय मतो भिक्ख परिवक्को ति' ॥३६॥

तिस्सो यरो

सत्तिया विय ओमट्ठो डय्हमाने व मत्थके भवरागपहानाय सतो भि*म*व परिब्वजे 'ति ॥४०॥

बड्डमानो थरो

वग्गो चतुत्थो

उद्दानं

गह् वरतीरियो सुष्पियो सो पाको च पीसियो च सामञ्ज्ञकानि कुमापुत्तो कुमापुत्त सहायको गवम्पति तिस्सत्थेरो वड्ढमानो महायसो 'ति । विवरमनुपतन्ति विज्जुता वेभारस्स च पण्डवस्स च, नगविवरगतो च झायति पुत्तो अप्पटिमस्स तादिनो 'ति ॥४१॥

वग्गो पञ्चमो

सिरिवड्ढो थेरो

चाले उपचाले सीसूपचाले पतिस्सतिका नु स्रो विहरय, आगतो वो वाल विय वेधीति ॥४२॥

खदिखनियो येरो

मुमुत्तिको सुमेत्तिको साहु सुमुत्तिकोम्हि तीहि खुज्जकेहि, असितामु मया नक्ष्मलासु मया खुद्कुद्दालासु मया । यदि पि इघमेव इधमेव अथवापि अलमेव अलमेव, झाय मुमद्भगल झाय सुमद्भगल, अप्पमत्तो विहर सुमद्भगला 'ति ॥४३॥

सुमङ्गको थेरो

मतं वा अम्म रोदन्ति वो वा जीवं न दिस्सनि । जीवन्तं म अम्म दिस्सन्ती कस्मा मं अम्म रोदसीति ॥४४॥

साहु यरो

यथापि भहो आजञ्ञो बिलित्वा पतितिद्वति एवं दस्सनसम्पन्न सम्मासम्बद्धसावकन्ति ॥४५॥

रमण्गियविहारी थरो

सद्वायाह पब्बजितो अगारस्मा अनगारिय, सित पञ्ञा च मे बुड्ढा चित्तञ्च सुसमाहितं कामं करस्सु रूपानि, नेवमं व्याधियस्ससोति ॥४६॥

समिद्धि थरो

नमो ते बुद्धवीरत्यु, विष्पमुत्तो सि सब्बधि तुय्हापदाने विहरं विहरामि अनासवो 'ति ॥४७॥

उज्जयो थरो

यथो अहं पब्बजितो, अगारस्मा अनगारियं नाभिजानामि संकप्पं अनरियं दोससंहितन्ति ॥४८॥

सञ्जयो थरो

विहविहामिनदिते सिप्पिकाभिरुतेहि च न मे तं फन्दति चित्त, एकत्तनिरतं हि मे ॥४९॥

रामगोय्यको थेरो

धरणी च सिच्चिति वाति मालुतो विज्जुता चरित नभे उपसम्मन्ति वितक्का चित्तं सुसमाहित ममा 'ति ॥५०॥

वरगो पञ्चमो

उद्दानं

सिरिवड्ढो रेवतो थेरो सुमझ्गलो सानुसब्हयो रमणीयविहारी च सिमद्धुज्जय-सञ्जयो रामणेय्यो च सो थेरो विमलो चरणञ्जयो 'ति ।

वग्गो इद्दो

विमली थरो

वस्सति देवो यथा सुगीत छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, चित्त सुममाहितञ्च मय्ह, अथ चे पत्थयसि पवस्स देवा' नि ॥५१॥

गोधिको थेरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना में कुटिका मुखा निवाता, चित्तं सुसमाहितञ्च काये अथ चे पत्थयसि पवस्म देवा 'ति ॥५२॥

सुबाहु थेरो

वस्सिति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, तस्सं विहरामि अप्पमत्तो, अथ चे पत्थयसि पवस्सदेवा 'ति ॥५३॥

विख्या थेगे

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाना, तस्सं विहरामि अदुनियो, अथ चे पत्थयमि पवस्म देवा 'नि ॥५४॥

उत्तियो यरो

आसन्दि कुँटिकं ऋषा ओगय्ह अञ्जनं वनं निस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कत बुद्धस्म सासनन्नि ॥५५॥

अञ्जनावनिया थरो

को कुटिकाय, भिक्खु कुटिकाय वीतरागो सुसमाहितचित्तां एव जानाहि आवुसो अमोघा ते कुटिका कता 'ति ॥५६॥

कुटिविहारी थरो

अयमाहु पुराणिया कुटि, अञ्ञ पत्थयसे नवं कुटि आसं कुटिया विराजय दुक्खा भिक्खु पुन नवा कुटीति ॥५७॥

कुटिविहारी थरो

रमणीया में कुटिका मद्वा देय्या मनोरमा न में अत्यो कुमारीहि, येस अत्यो तहि गच्छथ नारियो 'ति ॥५८॥

रमणोयक्रटिको थेरो

सद्धायाह पब्बिजितो, अरङ्शे मे कुटिका कता, अप्पमत्तो च आतापी सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥५९॥

कोसलविहारी थेरो

ते मे इज्झिसु मकप्पा यदत्थो पविसि बुटि, विज्जा विमुत्ति पच्चेस्स मानानुसयमुज्जहन्ति ॥६०॥

वरमो छट्टो

उद्दान

गोधिको च सुबाहु च विल्लयो उत्तियो इसि अञ्जनार्वानयो थेरो दुवे कुटिविहारिनो रमणीय कुटिको च कोसल्लब्हय-सीवलीति

वन्नो सत्तमो

क्पो थेरो

पस्सति पस्सो पस्सन्तं अपस्सन्तञ्च पस्सति; अपस्सन्तो अपस्सन्तं पस्सन्तं च न पस्सतीति ॥६१॥

वन्जिपुत्तो थेरो

एकका मयं अरञ्जे विहराम अपिवद्ध व वनस्मिदारुकं; तस्स मे बहुका पिहयन्ति नेरीयका विय सम्मगामिनन्ति ॥६२॥ चृता पतन्ति पतिता गिद्धा च पुनरागता कर्ते किच्चं रतं रम्मं सुखेन 'अन्वागतं सुखन्ति ॥६३॥

पक्सवो थेरो

दुमव्हयाय उप्पन्नो जातो पण्डरकेतुना केतुहा केतुना येव महाकेतुं पर्धसंयीति ॥६४॥

विमलकोगडञ्जो थरो

उक्लेपकतवच्छस्स संकलितं बहूहि वस्सेहि। तं भासति गहट्टानं सुनिसिन्नो उळारपामुज्जो 'ति ॥६५॥

उक्खेपकतक्छो थेरो

अनुसासि महावीरो सब्बधम्मान पारगु; तस्साहं धम्मं सुत्वान विहासि सन्तिके रतो; तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुढस्स सासनन्ति ॥६६॥

मेधियो थेरो

किलेसा झापिता मय्हं भवा सब्बे समूहता विक्खीणो जातिसंसारो नित्य दानि पुनब्भवो 'ति ॥६७॥

एकधम्मसवनीयो थेरो

अधिचेतसो अप्पमञ्जतो मुनिनो मोनपयेसु सिक्खतो सोका न भवन्ति तादिनो उपसन्तस्स सदा सतीमतो 'ति ॥६८॥

एकुद्दानियो थेरो

सुत्वान धम्मं महतो महारसं सब्बञ्जातञ्ञाणवरेन देसितं मग्गं पपज्जि अमतस्स पत्तिया, सो योगक्षेमस्स पथस्स कोविदो'ति ॥६९॥

बन्नो थेरो

सीलमेव इध अग्गं, पञ्जावा पन उत्तमो; मनुस्सेसु च देवेमु सीलपञ्जाणतो जयन्ति ॥७०॥

वग्गो सप्तमो

उद्दानं

वप्पो च विज्जिपुत्तो च पक्को विमलकोण्डञ्ञो उक्क्षेपकतवच्छो च मेधियो एक धिम्मको एकुद्दानिय-छन्नो च पुण्णथेरो महब्बलो 'नि.

प्रयाो थेरो

वग्गो स्रद्गमो

सुसुखमनिपुणस्थदस्सिना मित कुसलेन निवानवृत्तिना ससैवितबुद्धसीलिना निब्बानं निह तेन दुल्लभन्ति ॥७१॥

वच्छपाली थेरो

यथा कलीरो सुसु वड्ढिनग्गो दुन्निक्खमो होति पसाखजातो एव अहं भरियायांजीताय; अनुमञ्जा मं पब्बन्नितो 'म्हि दानीति ॥७२॥

श्रातमो थरो

जिष्णञ्च दिस्वा दुक्खितञ्च व्याधित मतञ्चदिस्वा गतमायुसंखयं । ततो अहं निक्समितून पब्बजि पहाय कामानि मनोरमानीति ॥७३॥

माणवो थरो

कामच्छन्दो च ब्यापादो थीनिमद्धञ्च भिक्खुनो उद्धच्चं विचिकिच्छा च सब्बसो 'व न विज्जतीति ॥७४॥

सुयामनो धरो

साम् सुविहितान दस्सन, कद्मशा छिज्जित, बुद्धि बड्ढिन, बालम्पि करोन्ति पण्डिनं, तस्मा साधु सत समागमो 'नि ॥७५॥

सुसारदो थेरो

उप्पतन्तेसु निपते, निपतन्तेसु उप्पते, वसे अवसमानेसु रममानेसु नो रमे 'ति ॥७६॥

पियञ्जहो थेरो

इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं येनिच्छकं यत्यकामं यथामुखं तदज्जहं निग्गहिस्सामि योनिसो हत्थिप्पभिन्नं विय अबकुसग्गहो 'ति ॥७७॥

हत्थारोहपुत्तो थरो

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं, तस्स मे दुक्खजातस्स दुक्खक्ष्यन्थो अपरदो 'नि ॥७८॥

मंगडिं भरो थरो

सब्बो रागो पहीनो मे, सब्बो दोमो ममूहतो, सब्बो में विगतो मोहो, सीतिभूतो 'स्मि निब्बुनो 'ति ॥७९॥

रक्खितो थरो

यं मया पकतं कम्म अप्पं वा यदि वा बहु सब्बमेतं परिकलीणं नत्थि दानि पुनक्भवो 'ति ॥८०॥

उग्गो थरो

वग्गो अहमो

उद्दानं

वच्छपालो च यो थेरो आनुमो माणवो इसि मुयामनो मुसारदो थेरो यो च पियञ्जहो आरोहपुनो मेण्डसिरो रक्वितो उग्गमब्हयो 'ति।

वग्गी दसमी

न तथामत सतरस सुधन्न य मयज्ज परिभुतं अपरिमितदस्सिना गोतमेन बृद्धेन देसितो धम्मो 'ति ॥९१॥ परिपुरास्को थेरो

यस्सासवा परिक्लीण आहारे च अनिस्सितो

सुञ्जातो अनिमित्तो च विमोक्खो यस्स गोचरो, आकासे व सकुन्तानं पदन्तस्स दुरन्नयन्ति ॥९२॥

विजयो थेरो

दुक्खा कामा एरक, न सुखा कामा एरक, यो कामे कामयति दुक्ख सो कामयति एरक, यो कामेन कामयति दुक्खं सो न कामयति एरका 'ति ॥९३॥

एरको थेरो

नमो हि तस्स भगवतो सक्यपुत्तस्स सिरीमतो तेनाय अग्गपत्तेन अग्गथम्मो सुदेसिनो 'ति ॥९४॥

मत्तजि थेरो

अन्धो 'ह हतनेत्तो 'स्मि, कन्तारद्धान पक्षक्रो, सयमानो पि गच्छिस्स न सहायेन पापेना 'ति ॥९५॥

चक्खुपालो थरो

एकपुष्फं चजित्वान असीति वस्सकोटियो सग्गेसु परिचारेत्वा सेसकेनम्हि निब्बुतो 'ति ॥९६॥

खरडसुमनो थेरो

हित्वा सतपल कंसं सोवण्णं सतराजिकं अग्गहि मत्तिकापत्तं इदं दुतियाभिसेचनन्ति ॥९७॥

तिस्सो थरो

रूपं दिस्वा सति मुट्ठा पियनिमित्तं मनिसकरोतो, मारत्त चित्तो वेदेति तञ्च अज्झोस निट्ठति, तस्म बड्ढिन्ति आसवा भवमूळोपगामिनो 'ति ॥९८॥

श्रभयो थरो

सद्दं मुत्वा सित मुट्ठा पियनिमित्तं मनसिकरोतो, सारत्तचित्तो वेदेति तञ्च अज्झोम तिट्ठति, तस्स बड्ढिन्ति आसवा संसारमुपर्गामिनो 'ति ॥९९॥

उत्तियो यरो

सम्मप्पधानसम्पन्नो सतिषट्ठानगोवरो विमृत्तिकुसुमसञ्छन्नो परि निब्बिस्मत्यनासवो 'ति ॥१००॥

देवसभी थेरो

वग्गो दसमो

उद्दानं

परिपुष्णको च विजयो एनको मेत्तजी मुनि चक्खुपालो खण्डसुमनो तिस्मो अभयो च उत्तियो महापञ्जो थेरो देवसभो पि चा 'ति।

वग्गी एकादसयी

हित्वा गिहित्व अनवोसितत्तो मुखनद्भगली ओदरिको कुसीतो महावराहो व निवापपुट्ठो पुनप्पुनं गब्भमुपेति मन्दो 'ति ॥१०१॥

वेलट्डकानि येरो

मानेन वञ्चितासे संखारेसु मंकिलिस्समानासे लाभालाभेन मिषता समाधि नाधिगच्छन्तीति ॥१०२॥

सेतुच्छत्थेरो

नाहं एतेन अत्थिको सुखितो धम्मरसेन तिप्पतो, पीत्वान रसग्गमृतमं न च काहामि विसेन सन्थवन्ति ॥१०३॥

बन्धुरो थरो

लहुको वत में कायो फुट्ठो च पीतिसुखेन विपुलेन तूलामिव एरित मालुतेन पिलवित व मे कायो 'ति ॥१०४॥

खितको थेरो

उक्किण्टितो पि न वसे रममानो पि पक्कमे न त्वेवानत्थसहितं वसे वासं विचक्खणो 'ति ॥१०५॥

मलितवम्बी थेरो

सतलिङगस्स अत्यस्स सतलक्खणधारिनो एकङगदस्सी दुम्मेघो सतदस्सी च पण्डितो 'ति ॥१०६॥

सुहैमन्तो थेरो

पब्बजि तुलयित्वान अगारस्मा अनगारियं; तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥१०७॥

धम्मसवो थेरो

सवीसंवस्ससतिको पब्बजि अनगारियं; तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥१०८॥

धम्मसविषत्तु थेरो

न नूनाय परमहितानुकस्पिनो रहोगतो अनुविगणेति सासनं ; तथा हयं बिहरति पाकतिन्द्रियो मिगी यथा नरुणजातिका व नेति ।।१०९।।

सङ्घरक्खितो थरो

नगा नगरमेसु सुमंविरूळहा उदरगमेचेन नवेन सित्ता विवेककामस्स अरञ्ञासञ्ज्ञानो जनेति भिय्यो उसभस्स कल्यतन्ति ॥११०॥

उसमो थेरो

वरगो एकादसमो

उद्दानं

बेलट्टकानि सेतुबच्छो बन्धुरा खितको इसि मिलतवम्भो सुहेमन्तो धम्मसवी धम्मसविपता सघरिक्षतथेरी च उसभो च महामुनि ।

वग्गो द्वादसयो

दुप्पब्बज्ज वे, दुरिधवासा गेहा, धम्मो गम्भीरो, दुरिधगमा भोगा; किच्छावुत्तिनो इतरीतरेनेव, युत्त चिन्तेतु सततमनिच्चतन्ति ॥१११॥

नेन्तो थेरो

तेविज्जो 'ह महाझायी चेतो समथकोविदो, सदत्थो मे अनुष्पत्तो, कत बुद्धस्स सासनन्ति ॥११२॥

क्छगोत्तो थेरो

अच्छोदिका पुथुसिला गोनङगुलमिगायुता अम्बुसेवालसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मन्ति ॥११३॥

वनवच्छो थेरो

कायदुट्ठुल्लगरुनो हिय्यमानम्हि जीविते सरीरसुखगिद्धस्स कुतो समणसाधृता 'ति ॥११४॥

श्रधिमुत्तो थेरो

एसावहिय्यसे पब्बतेन बहुकुटजसल्लकिकेन नेसादकेन गिरिना यसस्सिना परिच्छदेना 'ति ॥११५॥

महानामो थेरो

छ फस्सायतने हित्वा गुत्तद्वारो सुसंवृतो अघमूलं वमित्वान पत्तो मे असवक्खयो ॥११६॥

पारापरियो थरो

मुविलित्तो सुवसनो सब्बाभरणभूसितो तिस्सो विज्जा अज्झगिम कत बुद्धस्स सासनिन्त ॥११७॥

यसो थेरो

अभिसत्थो व निपतित वयो, रूपमञ्ज्ञामिव तथेव सन्तं; तस्सेव सतो अविष्पवसतो अञ्ज्ञास्सेव सरामि अत्तानन्ति ॥११८॥

किम्बिलो थेरो

रुक्खमूलगहनं पसिक्कय निब्बानं हदयस्मि ओसिय झाय गोतम मा च पमादो, किन्ते बिळिबिळिका करिस्सतीति ॥११९॥

वज्जिपुत्तो थेरो

पञ्चक्खन्धा परिञ्ञाता तिट्ठन्ति छिन्नमूलका, दुक्खक्खयो अनुष्पत्तो, पत्तो मे आसवक्खयो 'ति ॥१२०॥

इसिदत्ती थेरो

वग्गो हादसमो, तत्रुहानं भवतिः

जेन्तो च बच्छगोत्तो च बच्छो च वनपव्हयो अधिमुत्तो महानामो पारापरियो यसो पि च किम्बिलो विज्जिपुत्तो च इमिदत्तो महायसो 'ति ॥ वीमुत्तरसत थेरा कतकिच्चा अनासवा एकके 'व निपातिम्ह सुसंगीता महेसिभीति ।

निद्वितो एकनिपातो

दुकनिपातो

नित्य कोचि भवो निच्चो संखारा वापि सस्सता,
उप्पज्जित्त च ते खन्धा चवित्त अपरापरं ॥१२१॥
एतं आदीनवं ञात्वा भवे न 'अम्हि अनित्यको,
निरसटो सब्बकामेहि, पत्तो मे आसवक्खयो 'ति ॥१२२॥
इत्यं युदं आयस्मा उत्तरो थेरो गाथायो अभासित्था'ति
न इदं अनयेन जीवितं, नाहारो हदयस्स सन्तिको,
आहारद्वितिको समुस्सयो, इति दिस्वान चरामि एसनं ॥१२३॥
पडको'ति हि नं अवेदयुं यायं वन्दनपूजना कुलेसु,
सुखुमं सत्छं दुरुबहं सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो'ति ॥१२४॥
इत्यं सुदं आयस्मा पिण्डोळभारद्वाजो थेरो गाथायो अभासित्था'ति ।
मक्कटो पञ्चद्वारायं कुटिकायं पसिक्कय
इारेन अनुपरियेति घट्टयन्तो मुहुं मुहु ॥१२५॥
तिट्ठ मक्कट मा धावि, न हि ते तं यथा पुरे;
निग्गहीतो 'सि पञ्जाय, नेतो दूरं गमिस्ससीति ॥१२६॥

विख्यो थेरो

तिण्ण में ताळपत्तान गडमातीरे कुटी कता, छविसत्तो व में पत्तो , पंसुकूल्य्य बीवरं ॥१२७॥ द्वित्र अन्तरवस्सानं एका वाचा में भासिता, तितये अन्तरवस्साम्ह तमोखन्धो पदालितो'ति ॥१२८॥

गङ्गातीरियो भिक्खु

अपि चे होति तेविज्जो मच्चुहायी अनासवो अप्पञ्ञातो'ति नं वाला अवजानन्ति अजानता ॥१२९॥ यो च खो अन्नपानस्स लाभी होति'ष पुग्गलो, पाप धम्मो पि चे होति, सो नेस होति सक्कतो'ति ॥१३०॥

अजिनो येरो

यदाहं धम्ममस्सोींस भासमानस्स सत्युनो, न कद्भसमिजानामि सब्बञ्जा अपराजिने ॥१३१॥ सत्य बाहे महावीरे सारथीनं वहत्तमेः मन्ये पटिप्पदायं वा कद्भशा मय्हं न विज्जतीति ॥१३२॥

मेळिननो येरो

यथा अगार दुच्छन्नं बृद्धि समितिविज्झिति, एवं अभावित चित्तं रागो समितिविज्झित ॥१३३॥ यथा अगारं सुच्छन्नं बृद्धि न समितिविज्झिति एवं सुभासितं चित्तं रागो न समितिविज्झिति ॥१३४॥

राधो थेरो

खीणा हि मयहं जाति, वृक्षित जिनसासनं - पहीनो जालसंखानो, भवनेति समूहता ॥१३५॥ यस्सत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारिय, सो मे अत्थो अनुष्पतो सब्बसंयोजनक्षयो ॥१३६॥

सुराधो थेरो

सुख सुपन्ति मृनयो ये इत्थीसु न बज्झरे सदा वे रिक्खितब्बासु यासु सच्चं सुदुल्लभं ॥१३७॥ वधं चारिम्ह ते काम, अनणा दानि ते मय, गच्छाम दानि निब्बानं यत्थ गन्त्वा न सोचनीति ॥१३८॥

गोतमो यरो

पुब्बे हनति अत्तान पच्छा हनति सो परे; सुहतं हन्ति अत्तानं वीतं सेनेव पक्खिमा ॥१३९॥ न बाह्मणो बहिवण्णो, अन्तो वण्णोहि बाह्मणो, यस्मि पापानि कम्मानि सवे कण्हो सुजम्पतीति ॥१४०॥

वसभो थेरो

वग्गो पठमो

उद्दानं

उत्तरों चे व पिण्डोलो विल्लयो तीरियो इसि अजिनो च मेळिजिनो राधो सुराधो गोतमो वसभेन इमे होन्ति दस थेरा महिद्धिका'नि.

वग्गो दुतियो

सुस्मूसा सुतबड्ढनी सुतं पञ्ञाय वड्ढनं, अञ्ञाय अत्य जानाति, जातो अत्यो मुखावहो ॥१४१॥ सेवेय पन्तानि सेनासनानि, चरेय्य-संयोजनविष्पमोक्खं : मचे रित नाधिगच्छेय्य तत्य सधे-वसे रिक्खितनो सतीमा'नि ॥१४२॥

महाचुन्दो थरो

ये खो ते वेधिसस्सेन नानत्थेन च कम्मुना मनुस्मे उपरुष्धित्त फरुमुप्यकमा जना, ते पि तथेव कीरन्ति, न हि कम्मं पनस्सिति ॥१४३॥ य करोति नरो कम्मं कल्याणं यदि पापक, तस्स नस्सेन दायादो यं य कम्मं पकुब्बतीनि ॥१४४॥

जोतिदासो थेरो

अच्चयन्ति अहोरत्ता, जीवितं उपरुज्झति, आयु सीयित मच्चान कुछडीन व वोदकं ॥१४५॥ अथ पापानि कम्मानि करं बालो न बुज्झति पच्छास्स कटुकं होति, विपाको हिम्म पापको'नि ॥१४६॥

हेरञ्जकानि थेरो

परित्तं दाग्नमाह्स्य यथा सीदे महण्णवे एव कुसीतमागम्म साधुजीवी पि सीदित; तस्मा त परिवज्जेय्य कुसीतं हीनवीरिय ॥१४७॥ पविवित्तेहि अरियेहि पहितत्तेहि झायिहि निच्च आरद्धविरियेहि पण्डितेहि सहाबसेंति ॥१४८॥

सोभिनतो थेरो

जनो जनिम्ह सम्बद्धो, जनमेविस्सितो जनो, जनो जनेन हेठियति, हेठेति च जनो जनं ॥१४९॥ कोहि तस्स जनेनत्थो जनेन जनितेन वा जनं ओहाय गच्छन्तं हेटयित्वा बहुं जनन्ति ॥१५०॥

सन्विमत्तो थेरो

काली इत्थि बहती धङ्ककरूपा सत्थिञ्च भेत्वा अपरञ्च सित्थिञ् बाहञ्च भेत्वा अपरञ्च बाहुं सीसञ्च भेत्वा दिधयालक व एसा निसिन्ना अभिसहिहत्वा ॥१५१॥ यो वे अविद्वा उपिध करोति पुनप्पुनं दुक्खमुपेति मन्दो तस्मा पजान उपिध न कथिरा माहं पुन भिन्नसिरो सियस्सन्ति ॥१५२॥

महाकालो थेरो

बाहू सपत्ते लभति मुण्डो संघाटिपास्तो लाभी अन्नस्स पानस्स वत्यस्स सयनस्स च ॥१५३॥ एतमादीनव ञात्वा सक्कारेसु महक्मय अप्पलाभो अनवस्सुतो सतो भिक्खु परिब्बजेंति ॥१५८॥

तिस्सो थेरो

पाचीनवंसदायम्हि सक्यपुता सहायका पहायनप्पके भोगे उञ्छापत्तागते रता ॥१५५॥ आरद्धविरिया पहिनत्ता निच्च दळ्हपरककमा रमन्ति घम्मरतिया हित्वान लोकिकं रतिन्ति ॥१५६॥

किम्बिलो थेरो

अयोनिसोमनसीकारा मण्डनं अनुयुञ्जिसं उद्धत्तो वपलो चासि कामरागेन अट्टिनो ॥१५७॥ उपायकुसलेनाहं बुद्धेनादिच्चबन्धुना योनिसो पटिपज्जित्वा भवे चित्तं उदब्बहिन्ति ॥१५८॥

नन्दो थेरो

परे च नं पसंसन्ति अत्ता वे असमाहितो :
. मोषं परे पसंसन्ति, अत्ता हि असमाहितो ॥१५९॥
परे च नं गरहन्ति अत्ता वे सुसमाहितो
मोषं परे गरहन्ति, अना हि सुसमाहितो ॥१६०॥

सिरिमा थेरो

वग्गो दुतियो

उद्दानं

चुन्दो च जातिदासो च थेरो हेरञ्ज्ञकानि यो सोमिमत्तो सञ्बमित्तो काळो तिस्सो च किम्बिलो नन्दो च सिरिमा चे व दस थेरा महिद्धिका'नि

वग्गो ततियो

खन्धा मया परिञ्ञाता, तण्हा मे सुसमूहता, भाविता मम बोज्झझ्गा, पत्तो मे आसवक्लयो ॥१६१॥ सो'हं खन्धे परिञ्ञाय अब्बहित्वान जालिनि भाविपत्वान बोज्झझ्मे निब्बायिस्सं अनासवो'ति ॥१६२॥

उत्तरो थेरो

पनादो नाम सो राजा यस्स यूपो सुवण्णयो तिरियं सोळसपब्बेघो उब्भमाहु सहस्सघा ॥१६३॥ सहस्सकण्डु सतभेण्डु घजालु हरितामयो, अनच्चुं तत्य गन्धव्या छ सहस्मानि सत्तधा'नि ॥१६४॥

भद्दजि थेरो

सितमा पञ्जावा भिक्ख आरद्धबलवीरियो पञ्चकप्पसतानाहं एकरीत्त अनुस्सरि ॥१६५॥ चत्तारो सितपट्टाने सत्त अट्ट च भावयं पञ्च कप्पसता नाह एकरीत्त अनुस्सरिन्ति ॥१६६॥

सोभितो थरो

यं किच्चं दळ्हिविरियेन यं किच्चं बोधुमिच्छता करिस्सं नावरिज्झिस्स, पस्स विरियपरक्कमं ॥१६७॥ त्वञ्च मे मग्गमक्खाहि अञ्जसं अमतोगधं; अहं मोनेन मोनिस्सं गद्भगासोतो व सागरन्ति ॥१६८॥

वल्लियो थरो

केसे मे ओलिखिस्सन्ति कप्पको उपमर्काम, ततो आदास आदाय सरीर पच्चवेक्खिस ॥१६९॥ तुच्छो कायो अदिसित्य, अन्धकारे तमो व्यगा; सब्बे चोळा समुच्छिन्ना नित्य दानि पुनब्बभवो'ति ॥१७०॥

वीतसोको थरो

पञ्चनीवरणे हित्वा योगक्षेमस्स पत्तिया धम्मादासं गहेत्वान ञाणदस्सजमत्तनो ॥१७१॥ पच्चवेत्तिवं इम काय सब्बं सन्तरबाहिरं अजझनञ्च बहिद्धा च तुच्छो कायो अदिस्सथा'नि ॥१७२॥

पुषणमासो थेरो

यथापि भहो आजञ्ञो खलित्वा पतितिद्वृति, भिय्यो लढ़ान सवेगं अदीनो वहते धुरं ॥१७३॥ एवं दस्सनसम्पन्न सम्मासम्बुद्धसावक आजानिय मं धारेथ पुत्तं बुद्धस्स ओरसन्ति ॥१७४॥

नन्दको धेरो

एहि नन्दक गच्छाम उपज्ज्ञायस्म सन्तिकं, सीहनाटं नदिस्साम बुद्धसेट्ठस्म सम्मुखा ॥१७५॥ याय नो अनुकस्पाय अम्हे पब्बाजिय मुनि, सो नो अत्थो अनुष्पत्तो सब्बसयोजनक्षयो नि ॥१७६॥

भरतो थेरो

नदन्ति एवं सप्पञ्ञा सीहा व गिरिगब्भरे वीरा विजितसंगामा जेत्वा मार सवाहन ॥१७७॥ सत्या च परिचिष्णो मे, धम्मो संघो च पूजितो, अहञ्च वित्तो सुमनो पुत्त दिस्वा अनासवन्ति ॥१७८॥

भारद्वाजो थरो

उपामिता सप्पुरिसा, मुता धम्मा अभिण्हसो, सुत्वान पटिपज्जिस्सं अञ्जसं अमतोगथ ॥१७९॥ भवरागहतस्स मे सतो भवरागो पुन मे न विञ्जति न चाहु न च मे भविस्सति न च मे एतरहि पि विज्जतीति ॥१८०॥

थेर-गाथा

कगहदिन्नो येरो

वग्गो ततियो

उद्दानं

उत्तरो भट्टिज थेरो सोभितो विल्लियो इसि वीतसोको च सो थेरो पुण्णमासो च नन्दको भरतो भारद्वाजो च कण्हदिन्नो महामुनीति.

वग्गी चतुत्थी

यतो अहं पब्बिजितो सम्मासम्बद्धसामने, विमुच्चमानो उग्गच्छि, कामधातु उपच्वग ॥१८१॥ ब्रह्मनो पेक्खमानस्स ततो चित्तं विमुच्चि मे, अकुष्पा मे विमृत्तीति सब्बसंयोजनक्खया 'ति ॥१८२॥

मिगसिरो थेरो

अनिच्चानि गहकानि तत्थ तत्थ पुनप्पुनं, गहकारं गवेमन्तो दुक्ष्वा जाति पुनप्पुन ॥१८३॥ गहकारक दिट्ठो'सि पुन गेह न काहसि; सब्बा ते फासुका भग्गा थूणीरा च विदालिता; विपरियादिकतं चित्तं इधेव विघमिस्सतीति ॥१८४॥

सिक्को थेरो

अरहं सुगतो लोके वातेहाबाधिनो मुनिः सचे उण्होदकं अत्थि मुनिनो देहि ब्राह्मण ॥१८५॥ पूजितौ पूजनेय्यानं सक्करेय्यान सक्कतो अपचितो अपचिनेय्यानं तस्स इच्छामि हातवे'ति ॥१८६॥

उपवानो थरो

दिट्ठा मया धम्मधरा उपासका कामा
अनिच्चा इति भासमाना
सारत्तरत्ता मणिकुण्डलेसु पुत्तेसु दारेसु
च ते अपेक्खा ॥१८७॥
अद्धा न जानन्ति यथा व धम्मं, कामा अनिच्चा इति
चापि आहु, रागञ्च तेसं न बलत्थि छेतु तस्मा
सिता पुत्तदारं धनञ्चा'ति ॥१८८॥

इसिदिन्नो थेरो

देवो च वस्सिति देवो च गळगळायिन एकको चाहं भेरवे बिले विहरामिः तस्स मय्हं एककस्स भेरवे बिले विहरतो नित्य भय वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा ॥१८९॥ धम्मता ममेसा यस्स मे एककस्स भेरवे बिले विहरतो नित्य भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसोवा'नि ॥१९०॥

सम्बुलकच्चानो थरो

कस्स सेळ्पमं चित्तं ठित नानुपकम्पति
विन्तं रजनीयेसु कुप्पनीये न कुप्पति
यस्सेवं भावितं चित्तं कुतो तं दुक्खमेस्सति ॥१९१॥
मम सेळूपम चित्त ठित नानुपकम्पति
विरत्त रजनीयेसु कुप्पनीये न कुप्पति
ममेवं भावित चित्तं, कुतो मं दुक्ख मेस्मतीति ॥१९२॥

खितको थेरो

न ताव मुपिनुं होति रित्त नक्क्वनमालिनी, पटिजिग्गतुमेवेसा रित्त होति विजानना ॥१९३॥ हित्यक्क्वन्धावपतित कुञ्जरो चे अनुक्कमे सगामे मे मत सेय्यो यञ्चे जीवे पराजिनो'नि ॥१९४॥

सोणो पोटिरियपुत्तो

पञ्च कामगुणे हित्वा पियरूपे मनोरमे सद्धाय अभिनिक्खम्म दुक्खस्सन्तकरो भवे ॥१९५॥ नाभि नन्दामि मरणं नाभि नन्दामि जीवितं कालञ्च पटिकझ्खामि सम्पजानो पनिस्सतो'नि ॥१९६॥

निसमो थेरो

अम्बपल्लवसंकामं अंसे कत्वान चीवरं निसिन्नो हित्थिगीवायं गामं पिण्डाय पाविसि ॥१९७॥ हित्थिक्सन्यतो ओरुय्ह संवेगं अलभिन्नदा सोहं दित्तो तदा सन्तो, पत्तो मे आसवक्खयो'नि ॥१९८॥

उसमो थेरो

अयं इति कप्पये कप्पटकुरो, अच्छाय अतिमरिताय अमतघटिकाय चम्मकतमत्तो, कतपदं झानानि ओचेतु ॥१९९॥ मा खो त्वं कप्पट पचालेसि मातं उपकण्णकम्हि तालेस्सं; न ह त्वं कप्पट मनमञ्जामि सधमज्ज्ञम्हि पचलायमानो'ति ॥२००॥

कप्पट कुटो येरो

वग्गो चतुत्थो, उद्दानं

मिगसिरो सिक्को व उपवानो च पण्डितो इसि दिन्नो च कच्चानो खिनको च महावसी पोटिरियपुलो निसभो उसभो कप्यट कुरो'ति

वग्गो पञ्चमी

अहो बुद्धा अहो धम्मा अहो नो सत्युसम्पदा यत्य एतादिस धम्म सोवको सच्छिकाहिति ॥२०१॥ असंखेय्येसु कप्पेसु सक्कायाधिगना अहु, तेसं अयं पच्छिमको, चरिमो, य समुस्सयो जातिमरणसंसारो, नत्थि दानि पुनक्भवो'ति ॥२०२॥

कुमारकस्सपो थरो

यो हवे दहदो भिक्ष्व युञ्जित बृद्धमासने, जागरो पति सुत्तेसु, अमोघन्तस्म जीवितं ॥२०३॥ तस्मा सद्धञ्च सीलञ्च पसादं धम्मदम्सन अनुयुञ्जेथ मेधावी सरं बृद्धान सासनन्ति ॥२०४॥

धम्मपालो थरो

कस्सिन्द्रियानि समय गतानि अस्सा
यथा सारिथना सुदन्ता
पहीनमानस्स अनासवस्स देवापि
तस्स पिहयन्ति तादिनो ॥२०५॥
मिय्हन्द्रियानि समथ गतानि अस्सा यथा सारिथना सुदन्ता
पहीतमानस्स अनासवस्स देवापि मयुहं पियहन्ति तादिनो'ति ॥२०६॥

ब्रह्मालि थेरो

ष्टविपापक चित्तभट्दक मोघराज ससतं समाहितो, हेमन्तिकसीतकालरात्तियो, भिक्खु त्वं 'सि कथं करिस्सिस ॥२०७॥ सम्पन्नसस्सा मगधा केवला इति मे सुतं; पढालच्छन्नको सेर्यं यथङ्को सुखजीविनो 'ति ॥२०८॥

मोघराजा थेरो

न उक्खिपे नो च परिक्खिपे परे, न ओक्खिरे पारगतं न एरए, न चत्तवण्णं परिसासु व्याहरे अनुद्धतो सम्मितभाणि मुब्बतो ॥२०९॥ मुसुख्मितपुणत्थदस्सिना मित कुसलेन निवात वृत्तिना संसेवितबुद्धसीलिना निब्बानं निहं तेन दुल्लभन्ति ॥२१०॥

विसाखोपञ्चालिपुत्तो थेरो

नदन्ति मोरा मुसिला सुपेखुणा मुनीलगीवा सुमुखा मुगज्जिनो, सुसद्ला चापि महा मही अयं सुब्यापितम्बु, सुवलाहक नभं ॥२११॥ सुकल्लरूपो सुमनस्स झायिनं सुनिक्खमो साघु मुबुद्धसासने; मुसुक्कमुक्कं निपुणं सुदुद्दमं फुसाहितं उत्तममच्चृतं पदन्ति ॥२१२॥

चूलको थेरो

नन्दमानागर्त चित्तं मूलमारोपमानकः, तेन तेनेव वजिस येन सूलं कलिङ्मारं ॥२१३॥ ताहं चित्तकलि बूमि नं बूमि चित्तदुब्भकः; मत्या ते दुल्लभो लढो; मानत्थे म नियोजयीति ॥२१४॥

श्रनुपमो पेरो

संसरं दीघमद्वानं गतीसु परिवत्तिसं अपस्सं अरियमच्चानि अन्धभूतो पुथुज्जनो ॥२१५॥ तस्स मे अप्पमत्तस्स संमारा विनलीकता, सब्बा गती समुच्छिन्ना, तत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥२१६॥

वज्जितो थेरो

अस्सत्ये हरितोभासे संविष्क्रह् म्हि पादपे एकं बुद्धगतं सञ्ज्ञं अलभित्यं पितस्सतो ॥२१७॥ एकितमे इतो कप्पे यं सञ्ज्ञ अलभिन्नदा, तस्सा सञ्ज्ञाय बाहसा पत्तो मे आसवस्खयो 'ति ॥२१८॥

सन्धितो थेरो

पश्चमो वग्गो

उद्दानं

कुमारकरसपो थेरो धम्मपालो च ब्रह्मालि मोघराजा विसालो च चूळको च अनूपमो विज्ञितो संधितो थेरो किलेसरजवाइनो 'ति गाथा दुकनिपातम्हि नवुति चेव अट्ट च थेरा एकूनपञ्ञारा भामिता नयकोविदा।

दुकनिपाती

तिकनिपातो

अयोनिर्मुद्ध अन्वेस आंग परिचरि वने,
मुद्धिमग्गमजानन्तो अकासि अमर तथ ॥२१९॥
तं मुखेन मुखं लद्धं, पस्स धम्ममुधम्मतः;
निस्सो विज्जा अनुष्पत्ता, कतं वृद्धम्म सामनं ॥२२०॥
ब्रह्मबन्धु पुरे आमि, इदानि खो'म्हि ब्राह्मणो,
तेविज्जो न्हानको चम्हि मोत्तियो चम्हि वेदग 'नि ॥२२१॥

श्रद्धात्ति भारद्वाज थेरो

पञ्चाहाह पञ्चिजितो सेखो अप्पत्तमानमो
विहार मे पविट्टम्स चेतसो पणिघी अहु ॥२२२॥
नासिस्मं न पविस्सामि विहारनो न निक्खमे
न पि पस्स निपातेस्सं तण्हासल्ले अनूहते ॥२२३॥
तस्स गेवं विहरतो पस्स विरियपरक्कम,
निस्सो विज्जा असुप्पत्ता, कनं बृद्धस्स सासनन्ति ॥२२४॥

पच्चमो थेरो

यो पुब्बं करणीयानि पच्छा मो कानुमिच्छिति, सुखा सो धमने ठाना पच्छा च मनुतप्पति ॥२२५॥ यिन्द्रि कियरा तिन्द्रि बदे, य न कियरा न तं बदे, अकरोन्त भासमानं परिजानन्ति पण्डिता ॥२२६॥ मुसुखं वत निब्बानं सम्मासम्बुद्धदेसित असोक विराजं खेमं यत्य दुक्खं निरुज्झतीति ॥२२७॥

वाकुल थेरो

मुखञ्चे जीविनु इच्छे सामञ्जास्म अपेक्सवा, संघिकं नातिमञ्जोय्य चीवरं पानभोजनं ॥२२८॥ सुखञ्चे जीविनुं इच्छे सामञ्जारंम अपेक्सवा, अहिमुसिकसोव्यं व सेवेथ सयनासनं ॥२२९॥ सुखञ्चे जीविनुं इच्छे सामञ्जास्म अपेक्सवा इतरीतरेन तुस्सेय्य एकधम्मञ्च भावये 'ति ॥२३०॥

धनियो थरो

अतिसीतं अत्युण्हं अतिमायं इदं अह, इति विस्सद्वकम्मन्ने खणा अच्चेन्ति माणवे ॥२३१॥ यो च सीतञ्च उण्हञ्च तिणा भिय्यो न मञ्जति करं पुरिसिकच्चानि, सो सुखा न विहायति ॥२३२॥ दक्षं कुसं पोटिकलं उमीरं मुञ्जपव्यज उरसा पनुदहिस्मामि विवेकमनबृहयन्ति ॥२३३॥

मातङ्गपुत्तो थरा

ये चित्तकथी बहुस्युता समणा पाटलिपुत्तवासिनो
तेसञ्जातरो यमायुवा द्वारे तिट्ठुति खुज्जमोलुभिनो ॥२३४॥
ये चित्तकथी बहुस्युता समणा पाटलिपुत्तवासिनो
तेसज्जतरो यमायुवा द्वारे तिट्ठुति मालुनेरिनो ॥२३५॥
सुयुद्धेन सुयिट्ठेन संगामविजयेन च
ब्रह्मचरियानुविण्णेन एवायं सुक्यमेधित ॥२३६॥

खुन्जसोभितो येरो

यो 'घ कोचि मनुस्सेमु परपाणातिहिंसति
अस्मा लोका परम्हा च उभया घंसते नरो ॥२३७॥
यो च मेत्तेन वित्तेन सब्बपाणानुकप्पति,
बहुं हि सो पसवित पुरुन्नं तादिसको नरो ॥२३८॥
मुभासितस्स सिक्लेष समणुपासजस्स च,
एकासनस्स च रहो वित्तबूगसमस्स चा 'ति ॥२३९॥

वारखो यरो

एको पि सद्धो मेघावी अस्सद्धानिष ज्यातिनं धम्मटठो सीलसम्पन्नो होति अत्याय बन्धुनं ॥२४०॥ निग्गय्ह अनुकम्पाय चोदिता ज्ञातयो मया ज्ञातिबन्धवपेमेन कारं कत्वान भिक्खुसु ॥२४१॥ ते अब्मतीता कालकता पत्ता ते तिदिवं सुखं, भातरो मय्हं माता च मोदन्ति कामकामिनो 'ति ॥२४२॥

पस्सिक्त्थरो

काला पञ्चक्रमसंकासो किसो घर्मानमंततो मत्तञ्जा अश्रपानिम्ह अदीनमन्सो नरो ॥२४३॥ फुट्ठो इंसेहि मकसेहि अरञ्ज्ञास्म ब्रहावने नागो संगामसीसे व सनो तत्राधिवासये ॥२४४॥ यथा ब्रह्मा तथा एको, यथा देवो तथा दुवे, यथा गामो तथा तयो, कोलाहलं ततुत्तरिन्ति ॥२४५॥

यसोजत्येरो

अहु तुप्ह पुरे सद्धा, सा ते अज्ज न विज्जिति ।
यं तुप्हं तुप्हं एवेतं; नित्य दुच्चिंग्त मन ॥२४६॥
अफ्रिच्चा हि चला सद्धा एवं दिट्टा हि सा मया;
रज्जिन पि विरज्जिन नन्य कि जिय्यते मुनि ॥२४७॥
पच्चित मुनिनो भत्तं योकं योकं कुले कुले;
पिण्डिकाय चरिस्सामि, अत्यि जद्भवलं ममांति ॥२४८॥

साटिमत्तियत्थेरो

सद्धाय अभिनिक्खम्म नव पब्बजितो नवो मित्ते भजेय्य कल्याणे सुद्धाजीवे अतन्दिते ॥२४९॥ सद्धाय अभिनिक्षम्म नवपब्बजितो नवो संघर्षम विहरं भिक्खु सिक्खेय विनयं बृधो ॥२५०॥ सद्धाय अभिनिक्खम्म नवपब्बजितो नवो कप्पा कप्पेसु कुसलो चरेय्य अपुरक्खतो ॥२५१॥

थेर-गाथा

उपालि थेरो

पण्डितं वत मं सन्तं अलमत्य विचिन्तकं पञ्चकामगुणा लोके सम्मोहा पार्तायसु मं ॥२५२॥ पवस्त्रक्षो मारविसये दळह् सल्लसमप्पितो अर्सावल मच्चुराजस्स अहं पासा पमृच्चितु ॥२५३॥ सब्बे कामा पहीना मे, भवा सब्बे पदालिना विकलीणो जाति ससारो नित्थ दानि पुनब्भवो 'ति ॥२५४॥

उत्तरपालो थेरो

मुणाथ ज्ञातयो सब्बे यावन्तेत्थ समागना,
धम्मं वो देसियस्सामि; दुक्खा जाति पृनप्पुनं ॥२५५॥
आरभथ निक्खमय युञ्ज्ञथ बुद्धमासने
धुनाथ मञ्जुनो सेनं नद्धागारं व कुञ्जरो ॥२५६॥
यो इमस्मि धम्मविनये अव्यमतो विहेस्सति,
पहाय जातिमसार दुक्यस्मन्तं करिरस्तीति ॥२५७॥

श्रभिभूतत्थेरो

संसर हि निरयं अगच्छिमं, पेतलोकमगमं पुनप्पुनं,
दुक्खममम्हि पि तिरच्छानयोनिया नेकघा हि बुसितं चिरं मया ॥२५८॥
मानुसो पि च भवो 'भिराधितो, सग्गकायमगमं सिंक सिक,
रूपधातुसु अरूपधातुसु नेवसिञ्जसु असिञ्जसु द्वितं ॥२५९॥
सम्भवा सुविदिता असारका संवता पचिलता सदेरिना,
त विदित्वा महमन्तसम्भवं सन्तिमेव,
स्तिमा समज्झगन्ति ॥२६०॥

गोतमो थेरो

यो पुब्बे करणीयानि . . (२६१-२६३= २२५-२२७) ॥२६१-२६३॥

हारितो थेरो

पार्पामने विवज्जेत्वा भजेय्युत्तमपुग्गले ओवादे चस्स तिट्ठेय्य पत्थेन्तो अचलं सुखं ॥२६४॥ परित्तं दारुम (२६५,२६६=१४७,१४८) ॥२६५-२६६॥

विमलो थेरो

उद्दानं

अङगणिको भारद्वाजो पच्चयो बाकुलो इसि धनियो मानङगपुत्तो सोभितो वारणो इसि पस्सिको च यसोजो च साटिमत्तियुपालि च उत्तरपालो अभिभूतो गोतमो हारितो पि च धरो निकपातम्हि निब्बाने विमलो कतो; अटुतालीस गाथायो घेरा सोळस कित्तिता 'नि ।।

तिकनिपातो निट्उितो

चतुकनिपातो

अलंकता मुबसना मालिनी चन्दनुस्सदा
मज्झे महापये नारी तुरिये नच्चित नट्ट्ची ॥२६७॥
पिण्डिकाय पिबट्ठो 'ह गच्छन्तो नं उदिन्खिसं
अलंकतं सुबसनं मच्चुपासं व ओड्डितं ॥२६८॥
ततो मे मनसीकारो योनिसो उदपज्जया
आदीनवो पातुरहू, निब्बदा समितिहुत, ॥२६९॥
ततो चित्तं विमुच्चि मे, पस्स धम्मसुष्रम्मतं ।
तिस्सो विज्ञा अनुष्पता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२७०॥

नागसमाल थेरो

अहं भिद्धेन पकतो विहारा उत्तिक्खिम; चक्रकमं अभिरूहन्तो तथेव पर्पात छमा ॥२७१॥ गत्तानि परिमज्जित्वा पुन पारुय्ह चक्रकमं चक्रकमे चक्रकमे तो 'हं अज्झत्तं सुममाहितो ॥२७२॥ ततो मे (२७३,२७४ = २६९,२७०) ॥२७३-२७४॥

भगुथेरो

परे च न विजानन्ति मयमेल्थ यमामसे;
ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेथगा ॥२७५॥
यदा च अविजानन्ता इरियन्त्यमरा विया,
विजानन्ति च ये धम्मं आतुरेसु अनातुरा ॥२७६॥
य' किञ्चि सिथिलं कम्मं संकिलिट्टञ्च यं वतं संकस्सरं ब्रह्मचरियं, न तं होति मह्ष्फलं ॥२७७॥
यस्स सब्रह्मचारीमु गारवो नूपळ्कमित,
आरका होति सद्धम्मा नमं पुषविया यथा 'ति ॥२७८॥

सभियो थेरो

षिरत्यु पूरे दुग्गन्धे मारपक्खे अवस्मुते;
नव सोतानि ते काये यानि सन्दन्ति सम्बदा ॥२७९॥
मा पुराणममिन्निल्यो मासादेसि तथागते;
सग्गे पि ते न रज्जन्ति किमद्धग पन मानुसे ॥२८०॥
ये च खो बाला दुम्मेधा दुम्मन्ती मोहपारुता
तादिसा तत्य रज्जन्ति नारिखित्तस्मि बन्धने ॥२८१॥
येसं रागो च दोसो च अविज्जा च विराजिता
तादी तत्य न रज्जन्ति छिन्नभुत्ता अवन्धना 'ति ॥२८२॥

नन्दको थेरो

पञ्चपञ्जास वस्सानि रजोजल्लमधार्यम,
भुञ्जलो मासिकं मतं केसगस्सु अलोचिय ॥२८३॥
एकपादेन अट्ठासि आसनं परिवज्जिय,
सुक्खगूथानि च खादि उद्देसञ्च न सादियि ॥२८४॥
एतादिसं करित्वान बहुं दुम्मतिगामिनं
वुय्हमानो महोषेन बुद्धं सरणमागमं ॥२८५॥
सरण गमनं पस्स, पस्स धम्मसुधम्मतं
तिस्सो विज्जा अनुप्मत्ता कत बुद्धस्स सासनन्ति ॥२८६॥

जम्बुको थेरो

स्वागतं वन में आसि गयायं गयफगुया
यं अह्सासि सम्बुद्धं देसेन्तं धम्ममुत्तमं ॥२८७॥
महप्पभ गणाचिरयं अग्गपतं विनायकं
सदेवकस्स लीकस्स जिनं अतुलदस्सनं ॥२८८॥
महानागं महावीरं महाजुतिमनासवं
सब्बासवपरिक्खीणं सत्थारमकुतोभयं ॥२८९॥
चिरसद्धिकलिट्टं वत विद्विसन्दानसन्दितं
विभोचयी सो भगवा सब्बगन्थेहि सेनकन्ति ॥२९०॥

सेनको थेरो

यो दन्धकाले तरित तरणीये च दन्धये, अयोनिसो संविधानेन बालो दुक्खं निगच्छति ॥२९१॥ तस्सत्था परिहायित कालपक्खे व बन्दिमा, आयसक्यञ्च पप्पोति मित्ते हि च विरुद्धतीति ॥२९२॥ यो दन्धकाले दन्धेति तरणीये च तारये, योनिसो संविधानेन मुखं पप्पोति पण्डितो ॥२९३॥ तस्सत्था परिपूरित सुक्कपक्खे व चन्दिमा, यसो कितिञ्च पप्पोति, मित्तेहि न विरुज्झतीति ॥२९४॥

सम्भूतो थेरो

उभयेतेव सम्पन्नो राहुलभहो 'ति मं विदु,
यञ्चिम्ह पुत्तो बुद्धस्स, यञ्च धम्मेषु चक्खुमा ॥२९५॥
यञ्च मे आसवा सीणा, यञ्च नित्व पुनन्भवो ।
अरहा दिक्सिणेय्यो 'म्हि तेविज्जो अमतह्सो ॥२९६॥
कामन्धा जालसञ्छन्ना तण्हाछदनच्छादिता
पमत्तवन्धुना बद्धा मच्छा व कुमिना मुखे ॥२९७॥
तं काममहमुज्झित्वा छेत्वा मारस्स बन्धनं
समूलं तण्हमब्बूयृह सीतिभूतो 'सिम निब्भुतो 'ति ॥२९८॥

राहुलो थेरो

जातरूपेन पच्छन्ना दासी गणपुरक्वता अङकेन पुत्तमादाय भरिया मं उपागीम ॥२९९॥ तञ्च दिस्वान आर्यान्त सकपुत्तस्य मातरं, अलङकतं सबुसनं मच्चुपासं व ओड्डिनं ॥३००॥ ततो मे-... (३०१,३०२==२६९,२७०) ॥३०१-३०२॥

चन्दनो थेरो

धम्मो हुवे रक्खित धम्मचारि, धम्मो सुविण्णो सुखमावहाति एसा निसंसो धम्मे सुविण्णे, न दुग्गति गच्छिति धम्मचारी ॥३०३॥ न हि धम्मो अधम्मो च उभो समिवपाकिनी; अधम्मो निरयं नैति, धम्मो पापेति सुग्गति ॥३०४॥ तस्मा हि धम्मेसु करेय्य छन्दं इति मोदमानो सुगतैन तादिना; धम्मे ठिता सुगतवरस्स साथका निय्यन्ति धीरा सरणवरगगगिनो ॥३०५॥ विष्फोटितो गण्डमुलो, तण्हाजालो समृहतो; सो खीणसंसारो न चित्य किञ्चनं चन्दो यथा दोसिना पूण्णमासिया 'ति ॥३०६॥

धम्मिको थरो

यदा बलाका सूचिपण्डरच्छदा काळस्स मेघस्स भयेन तज्जिता पलेहिति आलयमालयेसिनी, तदा नदी अजकरणी रमेनि मं।।३०७।। यदा वलाका सुविसुद्धपण्डरा काळस्स मेघस्स भयेन तज्जिता परियेसतिलेन मलेन, दस्सिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं ॥३०८॥ कन्नु तत्य न रमेन्ति जम्बुयो उभतो तहि, सोभेन्ति आपगा कुलं महालेनस्स पच्छतो ॥३०९॥ तामतमदसं घमुप्पहीना भेका मन्दवती पनादयन्ति, नाज्ज गिरि नदीहि विप्पवाससमयो. खेमा अजकरणी सिवा सूरम्मा 'ति ॥३१०॥

मप्पको थरो

पब्बाजि जीविकत्थो 'हं, लद्धान उपसम्पदं ततो सद्धं पटिलीभ, दळहविरियो परक्कमि ॥३११॥ कामं भिज्जत् 'यं कायो मंसपेसी विसीयहं, उभोजन्नुकसंधीहि जब्धायो पपतन्तु मे ॥३१२॥ नासिस्सं न पविस्सामि विहारा च न निक्क्षमे न पि पस्स निपातेस्सं तण्हासल्ले अनुहते ॥३१३॥ तस्स मेवं ... (= २२४) ॥३१४॥

मुदितो थेरो

उद्दानं

नागसमालो भगु च सभियो नन्दको पि च जम्बुको सेनको थेरो सम्भुतो राहुलो पि च भवति चन्दनो थेरो दसेते बद्ध सावका। धन्मिको सप्पको थेरो मुदितो चापि ते तयो गाथायो द्वे च पञ्जास थेरा सब्बे पि तेरसा 'ति ।

चतुक्कनिपातो निद्वितो

पश्चनिपातो

भिक्कु सीविषकं गल्वा अहमं इत्यिम्ज्झित अपविद्धं सुसानस्मि खज्जन्तिं किमिही फुट ॥३१५॥ यं हि एके जिगुच्छन्ति मतं दिस्वान पापकं, कामरागो पानुरह् अन्धो व सबती अहु ॥३१६॥ ओरं ओदनपाकम्हा तम्हा ठाना अपक्कीम, सितमा सम्पजानो 'ह एकमन्तं उपाविसि ॥३१७॥ ततो मे(३१८,३१९=२६९,२७०) ॥३१८-३१९॥

राजदत्तो थेरो

अयोगे युञ्जमत्तान पुग्सि किच्चमिच्छतो चरं चे नाविगच्छेय्य, तं मे दुन्भगलक्षणं ॥३२०॥ अब्बूळहं अगत विजितं एकञ्चे ओस्सजेय्य कली व सिया; सब्बानि पि चे ओस्सज्जेय्य अन्धो व सिया समविसमस्स अदस्सनतो ॥३२१॥

यिङ्ग् कियरा ... (= २२६) ॥३२२॥
यथापि रुचिरं पुष्फं वण्णवन्तं अगन्त्रकः,
एवं सुभासिता वाचा अपूला होति अकुब्बतो ॥३२३॥
यथापि रुचिरं पुष्फं वण्णवन्त मगन्धकः
एवं सुभासिता वाचा स-फला होति सकुब्बतो 'ति ॥३२४॥

सुभूतो धरो

वस्सति देवो यथा सुगीतं, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता तस्सं विहराधि वूपसन्तो, अथ चे पत्थयित पवस्स देव ॥३२५॥ वस्सति देवो यथा सुगीतं छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, तस्सं विहरामि सन्तवित्तो—प—तस्सं विहरामि वीतरागो ...वीत दोसो ...वीत मोहो अप चे पत्ययंसि पवस्स देवा 'ति ॥३२६-३२९॥

गिरिमानन्दो थरो

यं पत्थयानो घम्मेसु उपज्झायो अनुग्गहि
अमतं अभिकद्भलन्तं कतं कत्तव्बकं मया ॥३३०॥
अनुप्पत्तो सच्छिकतो सयं धम्मो अनीतिहो;
विसुद्धन्नाणो निक्कद्भलो व्याकरोमि तवन्तिके ॥३३१॥
पुब्येनिवासं जानामि दिव्यचक्यं विमोषितं,
सदत्यो मे अनुप्पन्तो कत बुद्धस्स सामनं ॥३३२॥
अप्पमत्तस्स मे सिक्या मुमुता तव मासने,
सब्बे मे आसवा खीणा नत्यि वानि पुनव्भवो ॥३३३॥
अनुसासि मं अरियवता अनुकम्पी अनुगाहि;
अमोषो नुष्हं ओवादो, अन्ते वासि 'म्हि सिक्खतो 'ति ॥३३४॥

सुमनी थेरो

साघु हि किर में माता पतोद उपदंसिय

यस्साहं वेचनं मुत्वा अनुभिट्ठो जनेत्तिया

आरद्धविरियो पहितत्तो पत्तो सम्बोधिमृत्तम ॥३३५॥

अरहा दिम्खणेय्यो 'भ्हि तेविज्जो अमतहसो

जित्वा नमुचिनो सेन विहरामि अनासवी ॥३३६॥

अज्ञसञ्च बहिद्धा च ये में विज्जिसु आसवा

सब्बे असेसा उच्छिन्ना न च उप्पज्जरे पुन ॥३३७॥

विसारदा लो भगिनी एतं अत्य अभासियः

अपि हा नून मिय पि वनथो ते न विज्जित ॥३३८॥

परियन्तकतं दुक्लं, अन्तिमो यं समुस्सयो

जातिमरणसंसारो नित्य दानि पुनक्मवो 'ति ॥३३९॥

बड्ढा थेरो

अत्थाय वत मे बुद्धो नर्दि नेरञ्जनं अगा, यस्साहं धम्मं सुत्वान मिच्छादिद्वि विवज्जयि ॥३४०॥ यिंज उच्चावचे यञ्जो, अगिष्ठुनं जुहि अहं
एसा सुद्धीति मञ्जानो अन्धमूतो पुष्ठजनो ॥३४१॥
विद्वि गहणपवंदातो परामागेन मोहितो
अमुद्धि मञ्जिम सुद्धि अन्धभूतो अविद्मु ॥३४२॥
भिच्छादिद्वि पहोना मे, भवा सब्बे विदालिता
जुहामि दन्तिकणेय्यामां नमस्सामि तथागतं ॥३४३॥
मोहा सब्बे पहीना मे भयतण्हा पदालिता
विक्लोणो जातिमसारो नात्थ दाणि पुन्टमवो 'ति ॥३४४॥

नदिकस्सपो थेरो

पातो मज्झन्तिक सायं तिक्बन् दिवसस्सह बोतिर उदकं सोतं गयाय गयफगुया ॥३४५॥ यं मया पकत पापं पुब्बे अञ्ञासु जातिमु तन्दानीथ पवाहेमि एवंदिष्टि पुरे अहुं ॥३४६॥ सुत्वा सुआसितं वाचं धम्मत्यसहित पद तथं यथावकं अत्य योनिसो पञ्चवेभिसम ॥३४७॥ निन्हातसब्बपापो 'म्हि निम्मलो पयतो सुचि सुद्धो मुद्धस्स दायादो पुतो बुद्धस्स ओरसो ॥३४८॥ ओगयहहुद्धांगकं सोत सब्बपाप पवाहिय, निस्सो विज्ञा अज्झयमि, कतं बुद्धस्म सासनिन ॥३४९॥

गयाकस्मपो थरो

वानरोगाभिनीतो त्वं विहरं कानने वने पिवद्वगोचरे लूखे कथं भिक्खु करिस्सित्त ॥३५०॥ पीतिमुखेन विपुलेन फरमानी समुस्ययं लूखिया अभिसम्मोन्तो विहरिस्सामि कानने ॥३५१॥ भावेन्तो सितपृष्ठाने इन्दियानि वलानि च बोज्झङ्ग्यानि च भावेन्तो विहरिस्सामि कानने ॥३५२॥ आरद्विविरये पहितने निच्चं दळहपरककमे समग्गे सिहते दिस्वा विहरिस्सामि कानने ॥३५३॥ अनुस्सरन्तो सम्बुद्धं अग्गदन्तं समाहितं अतन्दितो रित्तिववं विहरिस्सामि कानने 'ित ॥३५४॥

वक्कली थेरो

बोलगोसामि ते जित्त आणिहारे व हस्थिनं,
न तं पापे नियोजिस्सं कामजाल सरीरज ॥३५५॥
त्वं ओलग्गो न गच्छिसि हार्रविवरं गजो व अलभन्तो,
न च चित्तकलि पुनप्पुनं पसहम्पापरतो चरिस्सिसि ॥३५६॥
यथा कुञ्जरं अदन्त नवग्गहमङ्गुसग्गहो
बलवा आवन्तेति अकामं, एवं आवत्तयिस्सन्तं ॥३५७॥
यथा वरहयदमकुसलो सारिथ पवरो दमेति आजञ्जां,
एवं दमियम्सन्तं पितिहुतो पञ्चमु बलेमु ॥३५८॥
सतिया त निवन्धिस्मं, पयतनो वो दमेस्सामि;
विरियधुरिनगहीतो न यितो दूर गिमस्ससे चित्ता 'नि ॥३५९॥

विजितसेनो थेरो

उपारम्भिचनो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं; आरका होति सद्धम्मा नभसो पथवी यथा ॥३६०॥ उपारम्ग चित्तो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं। पित्हायति सद्धमा काळपक्षे व चित्तमा ॥३६१॥ उपारम्भ चित्तो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं परिसुम्मति सद्धमे मच्छो अप्पोदके यथा ॥३६२॥ उपारम्भिचनो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं न विक्हृति सद्धा मे खेते बीजं व पूतिकं॥३६३॥ यो च तुर्ठेन चिन्तेन सुणाति जिनसासनं खेपेत्वा आसवे सब्बे सच्छिवत्वा अकुप्पनं, पपुष्य पदमं सन्ति परिनिब्बानि अनासवो 'ति ॥३६४॥

यसदत्तो थेरो

उपसम्पदा च में लढ़ा, विमृतो चिम्ह अनासवो सो च में भगवा दिट्ठो, विहारे च सहाविस ॥३६५॥ बहुदेव रित्त भगवा अब्भोकासे 'तिनामिय विहारकुसलो सत्या विहारं पाविसी तदा ॥३६६॥ सन्यरित्वान संघाटि सेय्यं कप्पेसि गीतमो मीहो सेलगृहायं व पहीनभयभेरवो ॥३६७॥ ततो कत्याणवाक्करणो सम्मासम्बुद्धसावको सोणो अभामि सद्धम्मं बुद्धसेट्टस्स सम्मुखा ॥३६८॥ पञ्चक्नन्धे परिज्ञाय भाविष्टत्वान अञ्जसं पप्पुय्य परम सन्ति परिनिब्बस्सत्यनासवो 'ति ॥३६९॥

सोगो कुटिक्रणगो थरो

यो वे गरूनं वचनञ्ज् धीरो वसे च तम्हि जनयेथ पेम,
मो भित्तमा नाम च होति पण्डितो
'ञाला च धम्मेसु विसेसि अस्स ॥३७०॥
यं आपदा अप्यतिता उळारा नक्खम्भयन्ते पटिसखयन्त
सो यामवा नाम च होति पण्डितो ञाला च धम्मेसु विसेसि अस्स ॥३७१॥
यो वे समुद्दो व ठितो अनेजो गम्भीरपञ्जो निपुणत्थदस्सी,
असंहारियो नाम च होति . . . ॥३७२॥
बहुस्सुतो धम्मधरो च होति, धम्मस्स होति अनुधम्मचारी,
सो तादिसो नाम च होति . . . ॥३७३॥
अत्थञ्च यो जानाति भासितस्स अत्थञ्च ञाला न तथा करोति,
अत्थन्तरो नाम स होति पण्डितो ञाला च धम्मेसु
विसेसि अस्सा 'ति ॥३७४॥

कोसियो थेरो

उद्दानं

राजदत्तो सुभूतो च गिरिमानन्द-सुमनो बड्ढो च कस्सपो थेरो गयाकस्सप वक्कलि विजितो यसदत्तो च सोणो कोसि यस व्हथोः सिंद्र च पञ्च गाथायो थेरा च एत्थ द्वादसा 'ति

पश्चनिपातो

छनिपाती

दिस्वान पाटिहीरानि गोतमस्स यसिस्सनो न तावाहं पणिपति इस्सामानेन विञ्चतो ॥३७५॥ मम संकप्पमञ्जाय चोदेसि नरसारिय, ततो में आसि संवेगो अब्भुतो लोमहसनो ॥३७६॥ पुन्ने जटिल भूतस्स या में इद्धि परित्तिका, ताहं तदा निरंकत्वा पब्बीज जिनसासने ॥३७७॥ पुन्ने यञ्जोन सन्तुट्टो कामधातु पुरुक्थतो, पच्छा रागञ्च दोसञ्च मोहञ्चापि समूहीन ॥३७८॥ पुन्ने विञ्च केत्र च मोहञ्चापि समूहीन ॥३७८॥ पुन्ने निवासं जानािम दिव्यवक्त्यं विसाधितं, इद्धिमा परिचत्तञ्जू दिव्यसोतञ्च पापुणि ॥३७९॥ स यस्स चत्याय पव्यज्ञितो अगारस्मा अनगारिय, सो में अत्यो अनुपत्तो सब्बसयोजनक्षयो ति ॥३८०॥

उरुवेळकस्मपो थरो

अतिहिता वीहि, खलगता सालि, न च लभे पिण्डं, कथमहं कस्सं ॥३८१॥ व्हमप्पमेय्यं अनुस्सर, पस्त्रो पीतिया फुटसरीरो होहिसि सतनभुदग्गो ॥३८२॥ धम्ममप्पमेयं—प—सघमप्पमेय्यं—प—॥३८३-३८४॥ अब्भोकासे विहरिस, सीता हेमन्तिका इमा रक्तियो । मा सीतेन परेतो विहञ्जित्यो, पविस त्वं विहार फुसितग्गळ ॥३८५॥ फुसिस्सं चतस्सो अप्पमञ्जायो ताहि च सुखितो विहरिस्सं; नाहं सीतेन विहञ्जिस्स अनिञ्जितो विहरन्तो 'ति ॥३८६॥

तेकिच्छकानि थरो

यस्स सब्रह्मचारीमु गारवो नूपलब्भित परिहायति सद्धम्मा मच्छो अप्पोदके यथा ॥३८७॥

महानागो थरा

कुल्लो सीविषक गन्त्वा अद्सं इत्थिम्ङ्झित
अपविद्धं सुसानिस्म खज्जिन्तं किमिही फुटं ॥३९३॥
आतुरं अनुचि पूर्ति पस्स कुल्ल समुस्सयं
उग्घरन्तं पग्घरन्नं बालानं अभिनन्दिनं ॥३९४॥
धम्मादासं गहेत्वान ञाणदस्सनपत्तिया
पच्चवेक्ति इमं कायं तुच्छं सन्तरबाहिरं ॥३९५॥
यथा इदं तथा एतं यथा एत तथा इदं
यथा अघो तथा उद्धं, यथा उद्धं तथा अघो ॥३९६॥
यथा दिवा तथा रित्तं यथा रात्तं तथा दिवा
यथा पुरे तथा पच्छा यथा पच्छा तथा पुरे ॥३९७॥
पञ्चअभिकेन तुरियेन न रति होति तादिसी
यथा गुकम्मचित्तस्स सम्मा धम्मं विपम्स तोति ॥३९८॥

कल्लो थेरो

मनुजस्म पमत्तचारिनो तण्हा वड्ढिति माळुवा विया, सो पलवती हुराहुरं फलिमिच्छं व वनिस्म वानरो ॥३९९॥ यं एसा सहती जम्मी तण्हा लोके विसत्तिका, सोका तस्स पबड्ढिन्ति अभिवड्ढं व भीरण ॥४००॥ यो वे तं सहती जिम्म तण्हं छोके दुरच्चयं, सोका तम्हा पपतिन्त उदिवन्दु व पोक्सरा ॥४०१॥ तं वो वदामि भहं वो यावन्तेत्य समागता तण्हाय मूलं खणथ उसीरत्यो व वीरणं, मा वो नळ व सोतो व मारो भिन्ज पुनप्पुनं ॥४०२॥ करोथ बुद्धवचन खणो वे मा उपच्चगा, खणातीता हि सोचन्ति निरयम्हि समप्पिता ॥४०३॥ पमादो रजो, पमादानुपतितो रजो, अप्पमादेन विज्जाय अव्बहे सल्लमत्तनो'ति ॥४०४॥

मालङ्क्यपुत्तो थेरो

पण्णवीसितवस्मानि यतो पब्बजितो अहं अच्छरासंघातमत्तिम्प चेतो सित्त मनज्झां ॥४०५॥ अल्द्धा चित्तस्मेकग्ग कामरागेन अहितो बाहा पग्गय्ह कन्दन्तो विहारानुपितक्खीम ॥४०६॥ सयं वा आहरिस्सामि को अत्था जीवितेन मे, कथ हि मिक्चं पञ्चक्खं कालं कुब्बंथ मादिसो ॥४०७॥ तदाह खुरमादाय मञ्चकिह उपाविसि, परिनीतो खुरो आमि धर्मान छेनुमत्तनो ॥४०८॥ ततो मे . . . (४०९,४१०=२६९,२७०) ॥४०९॥—४१०॥

मप्पदासत्थेरो

उट्टाहि निर्साद कातियान मा निहाबहुलो अहु जागरस्सु,
मा तं अलस पमत्तबन्धु कूटेनेव जिनातु मञ्चुराजा ॥४११॥
सयथापि महासमृद्वेगो एव जातिजरातिवत्तते तं,
सो करोहि सुदीपमत्तनो त्वं, न हि ताणं तव विज्जतेव अञ्ञा ॥४१२॥
सत्था हि विजेसि मग्गमेतं सङ्गा जातिजराभया अतीतं,
पुब्बापरस्तमप्पमत्तो अनुयुञ्जसु
दळहं करोहि योगं ॥४१३॥
पुरिमानि पमुञ्च बन्धनानि सघाटीखुर, मुण्डभिक्खभोजी
मा खिड्डारतिञ्च मा निहं अनुयुञ्जित्थ क्षियाय कातियान ॥४१४॥

आयाहि जिनाहि कातियान, योगक्खेमपदे मुकोविदो'सि; पप्पुय्य अनुत्तर विमुद्धि परिनिब्बाहिसि वारिनाव जोति ॥४१५॥ पज्जोतकरो परित्तरंसो वातेन विनम्यते लता व; एवम्पि तुव आनादियानो मारं इन्दसगोत्त निद्धनाहि सो वेदयितासु वीतरागो कालं कक्ष्य डवेव सीनिभूतो'ति ॥४१६॥

कातियानी थरी

मुदेसितो चक्खुमता ब्ढेनादिच्चबन्धुना सब्बसंयोजनातीतो सब्बवट्टविनासनो ॥४१७॥
निय्यानिको उत्तरणो तण्हामूलिबसोसनो
विसमूलं आघातन छेत्वा पापेति निब्बृति ॥४१८॥
अञ्जाणमूलभेदाय कम्मयन्तिघाटनो
विञ्जाणानं परिग्गहे जाणविजरिनियातनो ॥४१९॥
वेदनानं विञ्जापनो उपादानप्यसोचनो भवं अझ्गारकासु व जाणेन अनुपस्सको ॥४२०॥
महारसो सुगम्भीरो जरामच्चुनिवारणो अयोद्भिकोगअरिट्ट ॥४२१॥
कम्मं कम्मन्ति जत्वान विपाकञ्च विपाकतो पटिच्चुप्पन्नधम्मानं यथावालोकदस्सनो
महारसंमंगमो सन्तो परियोसानभद्दकोति ॥४२॥

मिगनालो थरो

जातिमदेन मत्तो'हं भोगैस्सिरिपेन च सण्डान वण्णरूपेन मदमनो अचारि'हं ॥४२३॥ नात्तनो समकं किञ्च अतिरेकञ्च मञ्ज्ञिस अनिमानहतो बालो पत्यद्वो उस्सितद्वजो ॥४२४॥ मानरं पितरञ्चापि अञ्जो पि गरुसम्मते न किञ्च अभिवादेमि मानत्यद्वो अनादरो ॥४२५॥ दिस्वा विनायकं अग्ग सारथीनं वहत्तमं तपन्तमिव आदिल्चं म्मिक्सुसंघपुरक्खतं ॥४२६॥ मानं मदञ्च छहुत्वा विप्सर्भेन चेतसा सिरसा अभिवानेसिं : सत्त मन्यं ॥४२०॥

अतिमानो च ओमानो पहीना सुसमृहता अस्मिमानो समुच्छिन्नो, सब्बे मानविषा हता'ति ॥४२८॥

जेन्तो प्ररोहितपुत्तो थेरो

यदा न वो पब्बजितो जातिया सत्तवस्सिको, इद्विया अभिभोत्वान पश्चिगन्दं महिद्धिक ॥४२९॥ उपज्झायस्स उदकं अनीतत्ता महासरा आहरामि ततो दिस्वा मं सत्या एतदब्रवी ॥४३०॥ सारिपुत्त इमं परस आगच्छन्तं कुमारक उदकुम्भकमादाय अज्झत्तं सुसमाहित ॥४३१॥ पासादिकेन वत्तेन कल्याणडरियापथो सामणेरो नुरुद्धस्स इद्विया च विसारदो ॥४३२॥ आजानियेन आजञ्जो साधुना साधु कारितो विनीतो अनुरुद्धेन कतिकच्चेन सिक्खितो ॥४३३॥ सो पत्वा परमं सन्ति सच्छिकत्वा अकुप्यत सामणेरो स सुमनो मा मं जञ्जांति इच्छतीति ॥४३४॥

सुमनो थेरो

वातरोगाभिनीतो त्वं विहरं कानने वने
पिबद्धगोचरे लूखे कयं भिक्खु करिस्सित ॥४३५॥
पीति सुखेन विपुलेन फरित्वान समुस्सयं
लूखिप अभिसम्भोन्तो विहरिस्सामि कानने ॥४३६॥
भावेन्तो सत्त बोज्झक्षे इन्द्रियानि बलानि च
झानसोखुम्मसम्पन्नो विहरिस्सं अनासवो ॥४३७॥
विष्मुन्तं किलेसेहि सुद्धचित्तं अनाविलं
अभिण्हं पच्चवेक्खन्तो विहरिस्सं अनासवो ॥४३८॥
अजझतीञ्च बहिद्धा च ये मे विज्जिसु आसवा
सब्बे असेसा उच्छिन्ना न च उपपज्जरे पुन ॥४३९॥
पञ्चक्खन्या परिञ्जाता तिहुन्ति छिन्नमूलका,
दुक्खन्या अनुष्पतो, नित्य वानि पुनक्भवोति ॥४४०॥

न्हातकमुनि थेरो

अक्कोघस्स कुतो कोवो दन्तस्स समजीविनो सम्मदञ्जाविमुत्तस्य उपसन्तस्स तादिनो ॥४४१॥ तस्सेव तेन पापियो यो कुद्धं पटिकुज्झति; कुद्धं अप्पटिकुज्झन्तो संगाम जेति दुज्जयं ॥४४२॥ उभिन्नमत्यं चरित अत्तनो च परस्स च, परं संकुपितं ज्ञात्वा यो सतो उपसम्मित ॥४४३॥ उभिन्नं तिकिच्छन्तंत अत्तनो च परस्स च जना मञ्जात्वा वालो ति ये धम्मस्स अकोविदा ॥४४४॥ उप्पज्जने स चे कोधो, आवज्ज ककचूपमं; उप्पज्जे चे रमे तण्हा, पुत्तमंसुपमं सर ॥४४५॥ सचे धावित ते चित्तं कामेमुच भवेसु च, खिष्पं निगण्ह सतिया किट्ठाद विय दुप्यमुन्ति ॥४४६॥

ब्रह्मदत्ती थरी

छन्नमतिवस्सति, विवटं नानिवस्सति.
तस्मा छन्नं विवरेष, एवन्तं नातिवस्सति ॥४४७॥
मञ्चुनन्माहतां लोको, जराय परिवारितो,
तण्हासल्लेन ओतिण्णो, इच्छाघूपायितो सदा ॥४४८॥
मञ्चुनन्माहतो लोको परिक्खितो जराय च
हञ्जात निञ्चमत्ताणो पत्तदण्डो व तक्करो ॥४४९॥
आगच्छन्नागिखन्या व मञ्चुव्याधि जराय तयो
पच्चुग्गन्तु बलं नित्य, जवो नित्य पलायितुं ॥४५०॥
अमोषं दिवमं कियरा अप्पेन बहुकेन वा;
यं यं विजहते राँत तदूनन्तस्स जीवितं ॥४५१॥
चरतो निहुतो वाणि आसीनं सयनस्म वा
उपेति चरिमा रनि, न ते कालो पमण्जितु नित ॥४५२॥

सिरिमयडो थेरो

दिपादको यमसुचि दुग्गन्धो परिहीरति नानाकुणपपरिपूरो विस्सवन्तो ततो ततो ॥४५३॥ मिगं निलीनं कूटेन बिलसेनेव अम्बुजं वानरं विय लेपेन बाघयित्त पुणुज्जनं ॥४५४॥ रूपा सद्दा रसा गन्या फोटुब्बा च मनोरमा पञ्चकामगुणा एते इत्यि रूपिस्म दिस्सरे ॥४५५॥ ये एता उपसेवित्त रत्तवित्ता पुचुज्जना, बड्ढेन्ति कटिस घोरं आचिनित्त पुनब्भवं ॥४५६॥ यो वेता परिवज्जेति सप्पस्सेव पदा सिरो सो मं विसत्तिकं लोके सतो समितवत्ति ॥४५७॥ कामेस्वादीनव दिस्वा नेक्खम्मं दट्ठु खेमतो निस्सटो सब्बकामेहि, पत्तो मे आसवक्खयो'ति ॥४५८॥

सन्बकामो धरो

उद्दानं

उरुवेळकस्सपो च थेरो तेकिच्छकानि च महानागो च कुल्लो च मालुतो सप्पदासको। कातियानो च मिगजालो जेन्तो सुमनसव्हयो न्हातमुनि ब्रह्मदतो सिरिमण्डो सब्बकामको गाथायो चनुरासीति, थेरा चेत्य चनुद्दसांति

छनिपातो निट्उतो

सत्तनिपातो

अलंकता सुबसना मालधारी विभूसिता
अल्तककतापादा पादुकारुयह वेसिका ॥४५९॥
पादुका ओरुहित्वान पुरतो पञ्जलिकता
सा मं सण्हेन मुदुना म्हितपुड्वं अभासप ॥४६०॥
युवासि त्वं पञ्चितितो तिट्ठाहि मम सासने,
भुज्ज मानुसके कामे, अहं वित्तं ददामि ते.
सञ्चत्ते पटिजानामि, अग्गिं वा ते हरामहं ॥४६१॥
यदा जिण्णा भविस्साम उभो दण्डपरायना,
उभो पि पञ्चिजिस्साम, उभयत्थ कटग्गहो ॥४६२॥
तञ्च दिस्वान याचित्तं वेसिकं पञ्जलीकतं
अलंकतं मुबसनं मञ्चुपासं व ओहितं ॥४६३॥
ततो मे. . . . (=२६९, २७०) ॥४६४-४६५॥

मुन्दरसमुद्दी थरो

परे अस्वाटकारामे वनसण्डम्हि भहियो समूलं तण्हमब्बूय्ह तत्य भही क्षियायति ॥४६६॥ रमन्तेके मृतिङ्गोहि वीणाहि पणवेहि च अहञ्च रक्खमूलस्मि रतो बुद्धस्स सासने ॥४६७॥ बुद्धो च मे वरं दण्जा सो च लब्भेय मे वरो गण्हे'हं सब्बलोकस्स निच्चं कायगतासति ॥४६८॥ ये मं रूपेन पामिसु ये च घोसेन अन्वगृ । छन्दरागवसूपेता न मं जानन्ति ते जना ॥४६९॥ अजझतञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति समन्ता वरणो बालो, स वे घोसेन बुय्हति ॥४७०॥ अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च विपस्सिति बहिद्धा फलदस्सावी सो पि घोसेन युपहति ॥४७१॥ अज्झत्तञ्च पजानाति वहिद्धा च विपस्सिति अनावरणदस्सावी, न सो घोसेन वुप्हतीति ॥४७२॥

लकुएटको थेरो

एकपुत्तो अहं आसि पियो मानु पियो पितु
बहृहि बतचरियाहि लढ़ो आयाचनाहि च ॥४७३॥
ते च मं अनुकम्पाय अत्यकामा हितेसिनो
जभो पिता च माता च बृढस्स उपनाममु ॥४७४॥
किच्छा लढ़ो अय पुत्तो सुबुमालो सुबेधितो
इम ददाम ते नाथ जिनस्स परिचारक ॥४७५॥
सत्या च मं पटिग्गय्ह आनन्द एतदब्रवि
पब्बाजेहि इमं खिप्पं, हेस्सत्याजानियो अय ॥४७६॥
पब्बाजेत्वान म सत्था विहार पाविसी जिनो;
अनोग्गतिस्म सुरियस्मि ततो चित्तं विमुच्चि मे ॥४७॥
ततो सत्या निरंकत्वा पटिसल्लानबृद्धितो
एहि भद्दा 'ति मं आह; मा मे आसूपसम्पदा ॥४७८॥
जातिया सत्तवस्सेन लढ़ा मे उपसम्पदा;
तिस्सो विज्ञा अनुप्पता अहो धम्मसुधम्मता'ति ॥४७९॥

महो थरो

दिस्वा पासादछायायं चङ्कमन्तं नक्तम
तत्थ न उपसकम्म बन्दिस्स पुरिसुत्तम ॥४८०॥
एकंसं चीवरं कत्वा सहरित्वान पाणियो
अनुचङ्ककमिस्सं विर्जं सब्बसत्तानमृत्तमं ॥४८१॥
ततो पञ्हे अपुच्छि मं पञ्हानं कोविदो विदू,
अच्छम्मी च अभीतो च ब्याकासि सत्युनो अहं ॥४८२॥
विस्सज्जितेसु पञ्हेमु अनुमोदि तथागतो,
भिक्खुसघं विलोकेत्वा इम मत्यं अभासथः ॥४८३॥
लामा अङ्गान मगघानं येसायं परिभूञ्जति
चीवरं पिण्डपातञ्च पच्चयं सयमासनं
पच्चुट्ठानं च सामीचिं, तेसं लाभा'ति च बवी ॥४८४॥

अञ्जदग्गे मं सोपाक दस्सनायोपसंकम, एसा चेव ते सोपाक भवतु उपसम्पदा ॥४८५॥ जातिया सत्त वस्सो'ह लद्धान उपसम्पदं धारेमि अन्तिमं देहं अहो बम्मसुधम्मता'ति ॥४८६॥

सोपाको थेरो

सरे हत्थेहि भञ्जित्वा कत्वान कृटिमच्छिम, तेन मे सरभङ्गो'ति नामं सम्मृतिया अह ॥४८७॥ न मय्हं कप्पते अज्ज सरे हत्थेहि भिञ्जतुं सिक्खापदा नो पञ्जाता गोतमेन यसस्मिना ॥४८८॥ सकलं समत्तं रोगं सरभक्तगो नाहसं पुच्चे, सी'यं रोगो दिद्रो वचनकरेनाति देवस्म ॥४८९॥ येनेव मग्गेन गतो विपस्सी येनेव मग्गेन सिम्बी च वेस्सभ कक्सन्धकोणागमनो च कस्सपो तेनञ्जसेन अगमासि गोतमो ॥४९०॥ बीततण्हा अनाघाना सत्त बुद्धा खयोगघा, ये ह्यं देसितो धम्मो धम्मभूतेहि तादिहि ॥४९१॥ चतारि अरियसच्चानि अनुकम्पाय पाणिनं दुक्ख समुदयो मग्गो निरोधो दुक्ख सखयो ॥४९२॥ यस्मि निब्बत्तते दुक्ख संसारस्मि अनन्तक भेदा इमस्स कायस्स जीवितस्स च सख्या अञ्जो पुनब्भवो नित्य सुविमुत्तो मिह सब्बधीति ॥४९३॥

सरभङ्गो थेरो

उद्दानं

सुन्दर समुद्दो थेरो थेरो रुकुण्टमिंद्यो भद्दो थेरो च सोपाको सरमद्रगो महाद्दसिः सत्तके पञ्चका थेरा, गाथायो पञ्चतिसतीतिः

निट्ठितो च सत्तनिपातो

अद्दनिपातो

कम्मं बहुकं न कारये, परिवज्जेय्य जनं न उय्यमे; सो उस्मुको रसानुगिद्धो अत्थं रिञ्चित यो सुखाधिवाहो ॥४९४॥ पद्भकोति हि न अवेदयुं याय बन्दनपूजना कुलेसु, सुखुम सल्ल दुरुब्बह सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो ॥४९५॥ न परस्मु पनिद्धाय कम्मं मच्चस्स पापकं अत्तना तं न सेवेय्य, कम्मबन्धू हि मातिया ॥४९६॥ न परे वचना चोरो, न परे वचना म्नि; अनानञ्च यथा वेति देवापि नं तथा विदु ॥४९७॥ परे च न विजानन्ति मयमेत्थ यमामसे : ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेधगा ॥४९८॥ जीवतेवापि सप्पञ्जो अपि वित्तपरिक्खया पञ्जाय च अलाभेन वित्तवापि न जीवति ॥४९९॥ सब्बं सुणाति सोतेन सब्बं पस्सति चक्खुना न च दिट्टं सुतं धीरो सब्बमुज्झितुमरहति ॥५००॥ चक्ख्मस्स यथा अन्धो, सोतवा बधिरो यथा, पञ्जावऽस्स यथा मुगो, बलवा दुब्बलोरिव, अथ अत्थे समुप्पन्ने सयेथ मतसायिकन्ति ॥५०१॥

महाकचायनो थेरो

अक्कोधनो अनुपनाही अमायो रित्तपेमुणो स वे तादिसको भिक्खु एवं पेच्च न सोचित ॥५०२॥ अक्कोधनो अनुपनाही अमायो रित्तपेमुणो गृत्तद्वारो सदा भिक्खु एवं पेच्च न सोचित ॥५०३॥ अक्कोधनो कल्याणसीलो यो भिक्खु एवं पेच्च न सोचित ॥५०४॥

सिरिमित्ताथरो

यदा पटममद्दिख सत्थारमकृतोभय ततो मे अह सवेगो पस्मित्वा पुरिमुत्तम ॥५१०॥ सिरि हत्थेहि पादेहि यो पणामेय्य आगत, एनादिसं सो सत्थारं आराधेत्वा विराधये ॥५११॥ तदाहं पूत्तदारञ्च धनधञ्जञञ्च छड्डीय, केसमस्सुनि छेदेत्वा पब्बीज अनगारियं ॥५१२॥ मिक्बासाजीवसम्पन्नो इन्द्रियेस् मुसंब्तो नमस्समानो सम्बद्ध विहासि अपराजितो ॥५१३॥ ततो में पणिधी आसि चेतमो अभिपत्थितो न निसीदे मुहत्तम्पि तण्हासल्ले अनूहते ॥५१४॥ तस्स मेवं विहरतो पस्स विरियपरक्कम तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कर्त बुद्धस्य सामन ॥५१५॥ पुब्बेनिवासं जानामि, दिब्बचक्ख विसोधित, अरहा दक्क्षिणेय्यो 'म्हि विष्यम्तो निरूपिध ॥५१६॥ ततो रत्या विवसने सूरियस्सूग्गमन पति सब्बं तण्हं विसोसेत्वा पल्लब्बनेन उपाविसिन्ति ॥५१७॥

महापन्थको धेरो

उद्दानं

महाकच्चायनो येरो मिरिमिलो महापन्थको एते अट्टानिपार्ताम्ह, गाथायो चतुवीसतीति अट्टानिपातो निट्टितो

नवनिपातो

यदा दुक्खं जरामरणन्ति पण्डितो अविद्सु यत्थ मिता पुथुज्जना दुक्खं परिञ्ञाय सतो 'व झार्यात, ततो र्रात परमतरं न विन्दति ॥५१८॥ यदा दुक्खस्सावर्हीन विसत्तिकं पपञ्चसंघाटदुखाधिवाहन तण्ह पहत्वान सतो 'व झायति, ततो रित परमतरं न विन्दित ॥५१९॥ यदा सिव द्वे चतुरङगामिन मग्गुत्तम सब्बिकिलेसमोधनं पञ्जाय पस्सित्वा सतो 'व झायति ततो ...।।५२०।। यदा असोकं विरज असखतं सन्त पद सब्बक्लिससोधन भावेति सङ्गोजनबन्धनिच्छद, ततो ॥५२१॥ यदा नभे गज्जित मेघदुन्दुभि धाराकृला विहुद्धगपथे समन्तती भिक्ख च पब्भारगतो 'व झायति, ततो . .।।५२२॥ यदा नदीनं कुमुमाकुलानं विचित्तवानेय्यवटसकानं तीरे निसिन्ने सूमनो 'व झार्यात, ततो . . . ।।५२३॥ यदा निसीथे रहिनम्हि कानने देवे गळन्तम्हि नदन्ति दाठिनो भिक्खु च पब्भारगतो 'व झायति, ततो . . . ।।५२४।। पदा वितक्के उपरन्धियत्तनो नगन्तरं नगविवरं समस्मितो बीतहरो विगतिबलो 'व झायति, ततो ...॥५२५॥ यदा सुखी मलिवलसोकनामनो निरमालो निब्बनथो विसल्लो सब्बासवे व्यन्तिकतो 'व झार्यात, तनो रात परमतर न बिन्दतीति ॥५२६॥

भूतो थरो

उद्दानं

भूतो तथहसो थेरो एको खग्गविमाणवा नवकम्हि निपातम्हि गाथायो पि इमानवा 'ति ।

नवनिपातो निट्ठितो

दसनिपातो

अझगारिनो दानि दुमा भदन्ते फलेमिनो छदने विष्पहाय, ते अच्चिमन्तो व पभासयन्ति, समयो महावीर भगीरसान ॥५२७॥ दुमानि फुल्लानि मनोरमानि समन्तनो सब्बदिसा पविन्त पत्त पहाय फलमाससाना, कालो इतो पक्कमनाय बीर ॥५२८॥ नेवातिसीत न पनातिउण्ह सुखा उतु अव्निया भदन्ते, पस्सन्तु त साकिया कोळिया च पच्छामुख रोहिणिय नरन्त ॥५२९॥ आसाय कस्सते खेत्तं, बीज आसाय वृष्पति आसाय वाणिया यन्ति समुद्द धनहारका याय आसाय तिट्ठामि, सा मे आमा समिज्झतु ॥५३०॥ पुनप्पुनं चेव वपन्ति बीज, पुनप्पुनं वस्सति देवराजा पुनप्पुनं स्वेतं कसन्ति कस्सका, पुनप्पुन धञ्ञामुपेति रट्ट ॥५३१॥ पुनप्पुन याचनका चरन्ति, पुनप्पुनं दानपती दर्दान्त, पुनप्पुनं दानपती ददित्वा पुनप्पुनं सम्गमुपेन्ति ठान ॥५३२॥ बीरो हवे सत्तयुगं पुनेति योम्म कुले जायति भूरिपञ्जो, मञ्ञामहं सक्कतिदेवदेवो, तया हि जातो मुनि सच्चनामो ॥५३३॥ सुद्धोदनो नाम पिता महेमिनो, बुहस्स माता पन सायनामा या बोधिसत्तं परिहरिय कुच्छिना कायस्स भेदा ति दिर्वास्म मोदित ॥५३४॥ सा गोतमी कालकता इतो चुता दिब्बेहि कामेहि समझगिभूता सा मोदित कामगुणेहि पञ्चिहि परिवारिता देवगणेहि तेहि ॥५३५॥ बुद्धस्स पुत्तो 'म्हि असप्हमाहिनो अझगीरसस्सप्पटिमस्स तादिनो पितु पिता मय्हं तुवं 'सि सक्क, धम्मेन मे गोतम अय्यको 'सीति ॥५३६॥

काकुदायीथरो

पुरतो पच्छतो वापि अपरो चे न विज्जति, अतीव फासु भवति एकस्म वसतो वने ॥५३७॥

हन्द एको गमिस्सामि अरञ्ञा बुद्धवण्णित फासु एकविहारिस्स पहितत्तस्स भिक्खुनो ॥५३८॥ योगिपीतिकरं रम्मं मत्तकृञ्जरमेवितं एको अत्थवसी खिप्पं पविसिम्सामि काननं ॥५३९॥ सुपृष्फितें सीतवने सीतले गिरिकन्दरे गत्तानि परिसिञ्चित्वा चङकमिस्सामि एकको ॥५४०॥ एकाकियो अद्तियो रमणीये महावने कदाहं विहरिस्सामि कतकिच्चो अनासवो ॥५४१॥ एवं मे कत्त्कामस्स अधिष्पायो समिज्झत्, साधियस्सामहं येव, नाञ्ञो अञ्ज्ञस्य कारको ॥५४२॥ एम बन्धामि सन्नाहं, पविसिन्यामि काननं, ने ततो नेक्विमस्मामि अप्यनो आसवक्वयं ॥५४३॥ मालुते अपवायन्तं मीते सुर्राभगन्धके अविज्जं दार्लियस्मामि निमिन्नो नगमुद्धनि ॥५४४॥ विने कुमुमसञ्ख्ने पब्भारे नृन मीतले विमुत्तिसुखेन मुखितो रमिस्मामि गिरिब्बजे ॥५४५॥ सो 'ह परिपूज्जसकप्यां चन्दो पन्नरसी यथा मब्बासवपरिक्कीणो नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥५४६॥

एकविहारियो येरो

अनागन यो पटिगच्च पस्मिनि हिनञ्च अत्य अहिनञ्च त इय विद्दिमिनो तस्स हिनेमिनो वा रन्ध न पस्मिन्न समेक्ष्यमाना ॥५४॥। आजापाननती यस्स परिपुण्णा सुभाविना अनुपुब्ब परिचिता यथा बुढेन देमिता, सो 'म लोकं पभासेति अब्भा मुनो व चिन्दमा ॥५४८॥ ओदातं वत मे चिनं अप्पमाणं सुभावित निब्बिद्धं पग्यहीतञ्च सब्बा ओभासते दिमा ॥५४९॥ जीवतेबापि सप्पञ्ञो अपि वित्तपरिक्खया, पञ्जाय च अलाभेन वित्तवापि न जीवित ॥५५०॥ पञ्जा सुतिविनिच्छनी, पञ्जा किनिसि लोकबढनी पञ्जामहितो नरो इथ अपि दुक्खेमु सुखानि विन्दन्ति ॥५५१॥ नाय अज्जतनो धम्मो न च्छेरो न पि अब्भुतो यत्थ जायेष, मायेथ तत्थ कि विय अब्भुतो ॥५५२॥ अनन्तरं हि जातस्स जीविता मरणं धुव, जाता जाता मरन्तीध, एवंधम्मा हि पाणिनां ॥५५३॥ न हेतदत्थाय मतस्स होति यं जीविनत्थ परपोरिसान मतिम्ह रुण्णं, न यसो न लोक्य, न विण्णतं समणब्राह्मणंहि ॥५५४॥ चक्क सरीरं उपहन्ति रुण्णं, निहीयती वण्णबल मती च, आनिन्दनो तस्स दिसा भवन्ति, हितेसिनो नास्स सुखी भवन्ति ॥५५५॥ तस्मा हि रुच्छेय्य कुले वसन्ते मंधाविनो चेव वहुस्मुने च, यस हि पञ्चा विभवेन किच्च तरिन्त नावाय निंद व पुण्णन्ति ॥५५६॥

महाकस्पिनो थेरो

दन्धा मय्हं गती आसि, परिभूतो पुरे अह भाता च मं पणामेसि, गच्छ दानि तुवं घरं ॥५५७॥ सोहं पणामितो सन्तो संघारामस्स कोट्टके दुम्मनो तत्थ अट्ठासि सासनिस्म अपेक्खवा ॥५५८॥ भगवा तत्थ आगन्छि, सीस मय्ह परामिस, बाहाय म गहेत्वान, सघाराम पवेसिय ॥५५९॥ अनुकम्पाय मे सत्था पादासि पादपुञ्छनि एतं सुद्ध अधिट्ठोहि एकमन्त स्वधिद्वित ॥५६०॥ तस्माह वचनं मुत्वा विहासि सामने रतो समाधि पटिपादेगि उत्तमत्थम्स पत्तिया ॥५६१॥ पुब्वेनिवास जानामि, दिब्बचन्य विसोधित तिस्मो विज्ञा अनुष्पता, कत बुद्धस्स मासन ॥५६२॥ सहस्मक्षन्मत्तानं निम्मिनित्वान पन्थको निसीदि अम्बवने रम्मे याव कालप्पवेदन ॥५६३॥ तनो में सत्था पाहेसि, दूत कालप्पवेदक पवेदितम्हि कालम्हि वेहासान्पर्सकमि ॥५६४॥ वन्दित्वा सत्थुनो पादे एकमन्तं निसीदह निसिन्न म विदित्वान अथ सत्था पटिग्गहि ॥५६५॥ आयागो सब्बलोकस्स आहुतीन पटिग्गहो पुञ्जाखेत्तं मनुस्सानं पटिगण्हित्य दक्षिणन्ति ॥५६६॥

चूलपन्थको यरो

नानाकुलमलसम्पुण्णो महाउक्कारसम्भवो चन्दनिक्कं व परिपक्कं महागण्डो महावणो ॥५६७॥ पुब्बरुहिरसम्पुण्णो गूथकूपे निगाळ्हिको आपोपम्घरणी कायो सदा सन्दति पूर्तिघं ॥५६८॥ सद्वि कण्डरसम्बन्धो मसलेपनलेपितो चम्मकञ्चुकसन्नद्धी पूनिकायी निरन्थकी ॥५६९॥ अद्वि संघाटघटितो न्हारुसूननिवन्धनी नेकेस सगतिभावा कप्पेति इग्यापय ॥५७०॥ धुवप्ययानो भरणस्स मञ्च्राजस्य सन्तिके, इधेव छड्टित्वान येनकामगमो नरो ॥५७१॥ अविज्जाय निवृतो कायो. चतुगन्थेन गन्थितो । ओघससीदनो कायो, अनुसयजालमोत्थतो ॥५७२॥ पञ्च नीवरणे युन्तां, वितक्केन समप्पितां, तण्हाम्ले नान्गता, मोहन्छदनछादितो ॥५७३॥ एवायं वत्तनी कायो कम्मयन्तेन यन्तितो, सम्पत्ति च विपत्यन्ता, नानाभयो विपज्जिन ॥५७४॥ ये' मं कायं ममायन्ति अन्धबान्ता पूष्जना बहुढेन्तिं कटीस घोर आदियन्ति पुनब्भव ॥५७५॥ ये म काय विवज्जेन्ति गुर्थालन व पन्नगं, भवमुळ विमत्वान पर्गिनब्बिस्मन्यनासवाति ॥५७६॥

कप्पो येग

विवित्त अप्पितिग्योम वाळिमिगिनिसेवित सेवे सेनामनं भिक्ख पटिसल्लानकारणा ॥५७७॥ मकारपुञ्जा आहत्वा सुमाना रिषयाहि च ततो सथाटिकं कत्वा लूख धारेय्य चीवर ॥५७८॥ नीच मनं करित्वान सपदान कुला कुल पिण्डकाय चरे भिक्ख गुनदारो मुसबुतो ॥५७९॥ लूखेन पि च सन्तुस्से, नाञ्ञ पत्ये रम बहु, रसेसु अनुगिडस्स झानेन रमनी मनो ॥५८०॥

अध्यच्छो चेव सन्तुट्ठो पविवित्तो वसे मुनि,
असंसट्ठो गहट्ठेहि अनागारेहि चूभयं ॥५८१॥
यथा जळो च मूगो च अत्तानं दस्सये तथा,
नातिवेलं पभासेय्य संघमज्झिम्ह पण्डितो ॥५८२॥
न सो उपवदे कञ्चि उपघातं विवज्जये :
संबुतो पानिमोक्खिस्म मनञ्जू चस्स भोजने ॥५८३॥
सुग्गहीतिनिमित्तस्स चित्तस्मुपादकोविदो,
समय अनुयुञ्जेय्य कालेन च विपस्सनं ॥५८४॥
विरियसातच्चसम्पन्नो युत्तयोगो सदा सिया,
न च अप्पत्वा दुक्खस्सन्तं विस्सासमेय्य पण्डितो ॥५८५॥
एवं विह्रमानस्स सुद्धिकामस्स भिक्खुनो
सीयन्ति आसवा सब्बे निब्बृतिञ्चाधिगच्छतीनि ॥५८६॥

उपसेनो क्झन्तपुत्तो थरो

विजानेय्य सकं अत्यं, अवलोकेय्याय पावचनं, यञ्चेत्य अस्सपटिरूपं सामञ्जा अज्झुपगतस्स ॥५८७॥ मित्त इध कल्याणं सिक्खाविपूलं समादानं मुस्सूसा च गरूनं एतं समणस्स पटिरूपं ॥५८८॥ बुढेमु सगारवता धम्मे अपचिति यथाभूतं संघे च चित्तिकारेः एतं समणस्स पटिरूपं ॥५८९॥ आचारगोचरे युत्तो आजीवो सोधितो अगारयहो चिनस्स सण्ठपनं एतं समणस्स पटिरूपं ॥५९०॥ चारिनं अय वारित्त इरियापथियं पसादनिय अधिचित्ते च अयोगो एतं ।।५९१।। आरञ्ज्ञकानि सेनासनानि पन्नानि अप्पसद्दानि भजनब्दानि मुनिना एतं....।।५९२॥ मीलञ्च बाहुसच्वञ्च धम्मानं पविचयो यथाभय सच्चानं अभिसमयो एतं ।।५९३।। भावेय्य अनिच्चन्ति अनत्तसञ्जां असुभसञ्जाञ्च लोकम्हि च अनभिरति एतं . . . ॥५९४॥ भावेय्य च बोज्झक्रगे इद्विपादानि इन्द्रियवलानि अट्टङ्गमग्गमरियं : एतं ।।५९५॥

तण्हं पजहेय्य मुनी, समूलके आसवे पदालेय्य, विहरेय्य विमुत्ती एतं समणस्म पटिरूपन्ति ॥५९६॥

गोतमो थेरो

उद्दानं

काळुदायी च सो थेरो एकविहारी च कप्पिनो चूळपन्थको कप्पो च उपमेनो च गोतमो सत्तिमे दसके थेरा, गायायो चेत्थ सत्ततीति दसनिपातो निट्ठितो

एकादसनिपाती

किन्तवत्थो वने तात उज्जुहानो व पावुसे वेरम्बा रमणीया ते, पविवेको हि झायिनं ॥५९७॥ यथा अब्भानि वेरम्बो वातो नुदति पाबुसे सआ मे अभिकीरन्ति विवेकपटिसञ्जुता ॥५९८॥ अपण्डरो अण्डसम्भवो सीविधकाय निकेतचारिको उप्पादयतेव मे सति सन्देहस्मि विरागनिस्सितं ॥५९९॥ यञ्च अञ्जोन रक्खन्ति यो च अञ्जोन रक्खति, स वे भिक्ख सुखं सेति कामेसु अनपेक्खवा ॥६००॥ अच्छोदिका पृथुसिला गोनङगुलमिगायुता अम्बुसेवालसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मं ॥६०१॥ विसितम्मे अरञ्ञोसु कन्दरासु गुहासु च सेनासनेमु पन्तेमु वाळिमगनिमेविते ॥६०२॥ इमे हञ्ञान्तु वञ्झन्तु दुवलं पप्पोन्तु पाणिनो सकप्प नाभिजानामि अनिरयं दोस संहितं ॥६०३॥ परिचिण्णो मया सत्था, कतं बुद्धस्स सासनं, ओहितो गष्को भारो, भवनेत्ति समृहता ॥६०४॥ यस्स चत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारियं, सो मे अत्यो अनुप्पत्तो सब्बसंयोजनक्खयो ॥६०५॥ नाभिनन्दामि मर्णं नाभिनन्दामि जीवितं कालञ्च पटिकद्भलामि निब्बिसं भतको यथा ॥६०६॥ नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवितं कालञ्च पटिकड्स्लामि सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥६०७॥

संकिच्च धेरो

उद्दानं

संकिच्च घेरो एको व कतकिच्चो अनासवो एकादस निपातम्हि, गाथा एकादसेव ता'ति एकादसनिपातो निट्ठितो

द्वादसनिपातो

सीलमेविध सिक्खेथ अस्मि लोके सुसिक्खितं सीलं हि सब्बसम्पत्ति उपनामेति सेवितं ॥६०८॥ सीलं रक्खेय्य मेधावी पत्थयानो तयो सुखे पसंसं वित्तिलाभञ्च पेच्च सग्गे च मोदनं ॥६०९॥ सीलवा हि बहू मित्ते सञ्जामेनाधिगच्छति, दुस्सीलो पन मित्तेहि धंसते पापमाचरं ॥६१०॥ अवण्णञ्च अकित्तिञ्च दुस्सीलो लभते नरो वण्णं कित्ति पसंसञ्च सदा लभित सीलवा आदिसीलं पतिट्ठा च कल्याणानञ्च मातुक पमुखं सब्बधम्मानं तस्मा सीलं विसोधये ॥६१२॥ वेला च संवरं सीलं चित्तस्स अभिभासनं, तित्यञ्च सब्बबुद्धानं, तस्मा सीलं विसोधये ॥६१३॥ सीलं बलं अप्पटिमं सीलं आयुषमुत्तमं, सीलमाभरणं सेट्टं, सीलं कवचमब्भुतं ॥६१४॥ सीलं सेतु महेसक्खो, सीलं गन्धो अनुत्तरो सीलं विलेपनं सेट्टं येन वाति दिसो दसं ॥६१५॥ सीलं सम्बलमेवग्गं, सीलं पायेय्यम्तमं, सीलं से**हो** अतिवाही येन याति दिसो दिसं ॥६१६॥ इधेव निन्दं लभति पेच्चापाये च दुम्मनो सम्बत्य दुम्मनो बालो सीलेसु असमाहितो ॥६१७॥ इधेव कित्ति लभति पेच्च सग्गे च सुम्मनो, सब्बत्य सुमनो धीरो सीलेसु सुसमाहितो ॥५१८॥ सीलमेव इध अग्गं, पञ्जावा पन उत्तमो, मनुस्सेसु च देवेसु सीलपञ्जाणतो जयन्ति ॥६१९॥

सीलक्येरो

नीचे कुलिम्ह जातो'हं दिळहो अप्पभोजनो; हीनं कम्मं ममं आसि अहोसि पुष्फछहूको ॥६२०॥ जिगुच्छितो मनुस्सानं परिभृतो च वस्भितो नीवं मन करित्वान वन्दिस्सं बहुकं जनं –।।६२१।। अथ अहसासि सम्बद्धं भिक्ल्संघपूरक्लत पविसन्तं महावीरं मगधानं पुरुत्तम ॥६२२॥ निक्लिपित्वान ब्याभिद्धग वन्दित् अपसंकीं। ममेव अनुकम्पाय अट्ठासि पुरिसुत्तमो ॥६२३॥ वन्दित्वा सत्युनो पादे एकमन्तं ठितो तदा पब्बज अहमायाचि सब्बसत्तानमृत्तमं ॥६२४॥ ततो कारुणिको सत्था सञ्बलोकानुकम्पको एहि भिक्क् 'ति मं आह, सा मे आसुपसम्गदा ॥६२५॥ सो'हं एको अरञ्जस्मि विहरन्तो अतन्दितो अकासि सत्युवचनं यथा मं ओवदी जिनो ॥६२६॥ रत्तिया पठमं यामं पुब्बजातिमनुस्सरि, रत्तिया मज्झिमं यामं दिब्बवन्यु विसोधित, र्रात्तया पश्छिमे यामे तमोखन्धं पदार्लीय ॥६२७॥ ततो रत्याविवसने सुरियस्सुग्गमनं पति इन्द्रो ब्रह्मा च आगन्त्वा मं नमस्सिंसु पञ्जलि ॥६२८॥ नमो ते पुरिसाजञ्जा, नमो ते पुरिसूत्तम, यस्स ते आसवा खीणा, दक्षिखणेय्यो'सि मारिस ॥६२९॥ ततो दिस्वान मं सत्था देवसंघपुरक्खतं सितं पातुकरित्वान इमं अत्यं अभासय ॥६३०॥ तपेन ब्रह्मचरियेन संयमेन दमेन च एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमन्ति ॥६३१॥

मुणीतो थेरो

उद्दानं

सीलवा च सुणीतो च थेरा द्वेते महिद्धिका द्वादसम्हि निपातम्हि, गाथायो चतुनीसतीति द्वादसनिपातो निट्उितो

तेरसनिपातो

याहु रहे समुक्कहो रङ्गो अद्भगस्स पद्दगु स्वाज्ज धम्मेसु उब्बंद्दो सोणो दुक्खस्स पारगु ॥६३२॥ पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च चुत्तरि भावये; पञ्च संद्रगातिगो भिक्खु ओघतिण्णो 'ति वुच्चति ॥६३३॥ उन्नळस्स पमत्तस्स बाहिरासस्स भिक्खुनो सीलं समाधि पञ्जा च पारिपूरि न गच्छति ॥६३४॥ यं हि किच्च तदपविद्धं, अकिच्चं पन कथिरति; उन्नळानं पमत्तानं तेसं वड्ढन्ति आसवा ॥६३५॥ येसञ्च सुसमारदा निच्चं कायगता सति, अकिच्चन्ते न सेवन्ति किच्चे सातच्चकारिनो सतान सम्पजानानं अत्यं गच्छन्ति आसवा ॥६३६॥ उजुमग्गम्हि अन्ताते गच्छय मा निवत्तप अत्तना चोदयत्तानं, निब्बानं अभिहारये ॥६३७॥ अच्चारद्धम्हि विरियम्हि सत्था लोके अनुतरो वीणोपमं करित्वा मे धम्मं देसेसि चक्खुमा ॥६३८॥ तस्साहं वचनं सुत्वा विहासि सासने रतो समतं पटिपादेसि उत्तमत्यस्स पत्तिया, तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनं ॥६३९॥ नेक्खम्मे अधिमुत्तस्स पविवेकञ्च चेतसो अब्यापज्झाधिमुत्तस्स उपादानक्खयस्स च ॥६४०॥ तण्हक्खयाधिमुत्तस्स असम्मोहञ्च चेतसो दिस्वा आयतनुष्पादं सम्मा चित्तं विमुच्चति ॥६४१॥ तस्सा सम्मा विमुत्तस्स सन्तचित्तस्स भिक्खुनो कतस्स पटिचयो नत्यि, करणीयं च विज्ञति ॥६४२॥

सेलो यथा एक घनो वातेन न समीरति,
एवं रूपा रसा सद्दा गन्धा फस्सा च केवला ॥६४३॥ व इट्ठा धम्मा अनिट्ठा च न प्यवेषेन्ति तादिनो; ठितं चित्तं विसञ्जुतं वयञ्चस्सानुपस्सतीति ॥६४४॥

सोगा कोळिक्सो थरो

उद्दानं

मोणो कोळिविसोथेरो एको एव महिद्धिको तेरसम्हि निपातम्हि गाथायो चेत्थ तेरसा'ति तेरसनिपातो निहितो

चुइसनिपातो

यदा अहं पञ्चिजितो अगारस्मा अनगारियं नाभिजानामि संकप्पं अनिरियं दोससंहितं ॥६४५॥ इमे हञ्ञान्तु वज्झन्तु दुक्खं पप्पोन्तु पाणिनो संकप्पं नाभिजानामि इमस्मि दीघमन्तरे ॥६८६॥ मेत्तञ्च अभिजानामि अप्यमाणं सुभावित अनुपुब्बं परिचित यथा बुद्धेन देसितं ॥६४ ॥ सब्बमित्तो सब्बसखो सब्बभूतानुकम्पको मेत्तं चिञ्च भावेमि अब्यापज्झरतो सदा ॥६४८॥ असंहीरससंकुष्पं चित्तं आमोदयामहं बह्मविहारं भावेमि अकापुरिससेवितं ।।६४९॥ अवितक्क समापन्नो सम्मासम्बुद्धसावको यरियेन तुण्हिमावेन उपेतो होति तावदे ॥६५०॥ यथापि पब्बतो सेलो अचलो सुप्पतिद्वितो, एवं मोहक्खया भिक्खु पञ्चतीव न वेधति ॥६५१॥ अनङ्गणस्स पोसस्स निच्चं मुचिगदेसिनो वालग्गमत्तं पापस्स अब्भामत्तं व खायति ॥६५२॥ नगरं यथा पच्चन्तं गुत्तं सन्तरबाहिरं एवं गोपेथ अत्तानं खणे वे मा उपन्चगा ॥६५३॥ नाभिनन्दामि. ।= ६०६,६०७) ।।६५४-६५५॥ परिचिण्णो. . . (=६०४,६०५) ॥६५६-६५७॥ सम्पादेत्थ पमादेन, एसा मे अनुसासनी; हन्दाहं परिनिब्बिस्सं, विष्यमुत्तो'म्हि सब्बिधीति ॥६५८॥

रेवतो थेरो

यथापि भद्दो आजञ्जो घुरे युत्तो घुरस्सहो मिषतो अतिभारेन संयुगं नातिवत्तति ॥६५९॥

एव पञ्ञाय ये तिता समुद्दो वारिना यथा न परे अतिमञ्ज्ञान्ति, यरियधम्मो'व पाणिन ॥६६०॥ काले कालवसम्पत्ता भवाभववस गता नरा दुक्ख निगच्छन्ति ते'ध सोचन्ति माणवा ॥६६१॥ उन्नता सुखधम्मेन दुक्खधम्मेन ओनता इयेन बाला हय्यन्ति यथाभूत अदस्मिनी ॥६६२॥ ये च दुक्खे सुखस्मिञ्च मज्झे सिब्बनिमज्झगू ठिता ते इन्द्रखीलो व, न ते उन्नतओनता ॥६६३॥ न हैव लाभे नालामें न यसे न च कित्तिया न निन्दाय पससाय न ते दुक्ख सुखम्हि च ॥६६४॥ सब्बत्य ते न लिप्पन्ति उदविन्दु व पोक्खरे, सब्बत्य सुखिता वीरा सब्बत्य अपराजिता ॥६६५॥ धम्मेन च अलाभो यो यो च लाभो अधम्मिको अलाभो धम्मिको सेय्यो यञ्चे लाभो अधम्मिको ॥६६६॥ यसो च अप्पबुद्धीन विञ्ञान अयसो च यो अयसो च सेय्यो विज्ञान न यसो अप्पबृद्धिन ॥६६७॥ दुम्मेधेहि पससा च विञ्जाहि गरहा च या गरहा'व सेय्यो विञ्जाहि यञ्चे बालप्पससना ॥६६८॥ मुखञ्च काममयिक दुक्खञ्च पविवेकिय पविवेकिय दुक्ख सेय्यो यञ्चे काममय सुख ॥६६९॥ जीवितञ्च अधम्मेन धम्मेन मरणञ्च य मरण धम्मिक सेय्यो यञ्च जीवे अधम्मिक ॥६७०॥ कामकोपपहीना ये सन्तचित्ता भवाभवे चरन्ति लोके असिता, नित्य तेस पियापिय ॥६७१॥ भावियत्वान बोज्झङ्गगे इन्द्रियानि बलानि च पप्पुय्य परम सन्ति परिनिब्बन्ति अनासवा ति ६७२॥

गोदत्तो थरो

उद्दान

रेवतो नेव गोदत्तो थेरा ते महिद्धिका नुइसम्हि निपातम्हि, गाथायो अट्टनीसतीति **नुइसनिपातो निद्वितो**

सोळसनिपातो

एस भिय्यो पसीदामि सुत्वा धम्मं महारसं; विरागो देसितो धम्मो अनुपादाय सब्बसो ॥६७३॥ बहुनि लोके चित्रानि अस्मि पुथु विमण्डले मथेन्ति मञ्जो सङ्ककप्यं सुभ राग्पसंहितं ॥६७४॥ रजमुपातं वातेन यथा मेघो पसामये। एवं सम्मन्ति संकप्पा यदा पञ्जाय पस्सति ॥६७५॥ सब्बे संखारा अनिच्चा'ति यदा पञ्जाय परसति । अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥६७६॥ सब्बे संखारा दुक्खा'ति-सब्बे धम्मा अनत्ता'ति यदा पञ्जाय पस्सति । अथ निब्बिन्दती दुक्खे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥६७७-६७८॥ बुद्धानुबुद्धो यो थेरो कोण्डञ्ञो तिब्बनिक्खमो । पहीनजातिमरणो ब्रह्मचरियस्स केवली ॥६७९॥ ओघपासो दळ्हो खीलो पब्बतो दुष्पदालियो; । छेत्वा खीलञ्च पासञ्च मेलं छेत्वान दक्ष्मिरं तिण्णो पारंगतो झायी मुत्तो सो मारबन्धना ॥६८०॥ उद्धतो चपलो भिक्खु मित्ते आगम्म पापके । संसीदिति महोर्घास्म उम्मिया पटिकृज्जितो ॥६८१॥ अनुद्धतो अचपलो निपको संवृतिन्द्रियो । कल्याणिमत्तो मेघावी दुक्खस्सन्तकरो सिया ॥६८२॥ कालापब्बङ्ग मंकासो . . . (=२४३,२४४) ॥६८३-६८४॥ नाभिनन्दामि . . . (=६०६, ६०७) ॥६८५-६८६॥ परिचिण्णो. (==६०४) ॥६८७॥ यस्स चत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारियं, -सो मे अत्यो अनुष्पत्तो, कि मे सन्दिवहारेना'ति ॥६८८॥

भञ्जाकोग्रहञ्जो थेरो

मनुस्सभूतं सम्बुद्ध अत्तदन्तं समाहितं इरियमानं ब्रह्मपथे चित्तस्सूपसमे रतं ॥६८९॥ य मनुस्सा नमस्सन्ति सब्बधम्मान पारगुं देवापि तं नमस्सन्ति, इति मे अरहतो सुतं ।।६९०।। सब्बसयोजनातीतं वना निब्बनमागतं कामेहि निक्खम्मरतं मृत्तसेला व कञ्चनं ॥६९१॥ स वे अञ्चन्त रूची नागी हिमवावञ्जी सिलुच्चये, सब्बेसं नागनामान सञ्चनामो अनुत्तरोः ॥६९२॥ नागं वो कित्तयिस्सामि, नहि आगु करोति सो, सोरच्चं अविहिंसा च पादा नागस्स ते दूवे ॥६९३॥ सित च सम्पजञ्ञाञ्च चरणा नागस्स ते परे सद्धाहत्यो महानागो, उपेक्ला सेतदन्तवा ॥६९४॥ सति गीवा, सिरो पञ्जा, वीमसा धम्मचिन्तना, धम्मकुच्छि समावासो, विवेको तस्म वालिध ॥६९५॥ सो झायी अस्सासरतो अञ्झत्त सूसमाहितो, गच्छं समाहितो नागो, ठिनो नागो समाहितो ॥६९६॥ सयं समाहितो नागो, निसिन्नो पि समाहितो सब्बत्थ संबुतो नागो, एसा नागस्य सम्पदा ॥६९७॥ भुञ्जति अनवज्जानि, सावज्जानि न भुञ्जति. घासं अच्छादनं लढा सिर्नाध परिवज्जय, ॥६९८॥ संयोजन अणु थुल सब्ब छेत्वान बन्धन, येन येनेव गच्छति अनपेक्खोव गच्छति ॥६९९॥ यथापि उदके जातं पुण्डरीक पवड्ढति, नोपलिप्पति तोयेन सूचिगन्धं मनोरम ॥७००॥ तथेव च लोके जातो बुद्धो लोके विहरति, नोपलिप्पति लोकेन तोयेन पदुमं यथा ॥७०१॥ महागिनि पज्जिलतो अनाहारो पसम्मति अङ्गारेस् च सन्तेस् निब्बतो'ति पव्च्चति ॥७०२॥ अत्यस्सायं विञ्ञापनी उपमा विञ्जूहि देसिता, विञ्ञिसन्ति महानागा नागं नागेन देसितं ॥७०३॥

वीतरागो बीतदोसो वीतमोहो अनासवो स रीरं त्रिजंह नागो परिनिब्बस्सत्यनासवो'ति ॥७०४॥

उदायी थेरो

तत्रुहानं भवति

कोण्डञ्ञो च उदायी च थेरा हेते महिद्धिका सोळसम्हि निपातम्हि, गायायो हे च तिस चा'ति

सोळसनियातो निट्टितो

वीसतिनिपातो

यञ्जात्यं वा धनत्यं वा ये हनाम मयं पुरे अवसेमं भयं होति, वेधन्ति विलपन्ति च ॥७०५॥ तस्स ते नित्य भीत्ततं, भिय्यो वण्णो पसीदति; कस्मा न परिदेवेसि एवरूपे महब्भये ॥७०६॥ नित्थ चेतिसकं दुक्खं अनपेक्खस्स गामणि, अतिक्कन्ता भया सब्बे खीणं सयोजनस्म वे ॥७०७॥ खीणाय भवनेतिया दिट्ठे धम्मे यथातथे न भय मरणे होति भारनिक्खेपने यथा ॥७०८॥ मुचिण्ण ब्रह्मचरियं मे, मग्गो चापि सुभावितो, मरणे मे भयं नित्य रोगानिमव सखये ।।७०९।। सुचिण्णं ब्रह्मचरियं मे मग्गो चापि सुभावितो, निरस्सादा भवा दिट्ठा, विसं पित्वान छिड्डितं ॥७१०॥ पारगू अनुपादानो कतकिच्चो अनासवो तुट्टो आयुक्खया होति मृत्तो आघातना यथा ॥७११॥ उत्तमं धम्मतो पत्तो सब्बलोके अनित्यको आदित्ता व घरा मुत्तो मरणस्मि न मोचिति ॥७१२॥ यदित्थ संगतं कञ्चि भवो च यत्थ लब्भित, सब्बं अनिस्सरं एतं, इति उत्तं महेसिना ॥७१३॥ यो तं तथा पजानाति यथा बुद्धेन देसितं, न गण्हति भवं किञ्चि मुतत्तं व अयोगुळं ॥७१४॥ न मे होति अहोसिन्ति, भविस्सन्ति न होति मे, संखारा विभविस्सन्ति : तत्य का परिदेवना ।।७१५।। मुद्धं धम्मसमुप्पादं सुद्धं संखारसन्तर्ति पस्सन्तस्स यथाभूतं न भयं होति गामणि ॥७१६॥

तिणकदूसमं लोकं यदा पञ्जाय पस्सति ममत्तं सो असंविन्दं नित्य मेति न सोचिति ॥७१७॥ उक्कण्ठामि सरीरेन, भवेनम्हि अत्थिको, सो'यं भिरिजस्सति कायो अञ्जो च न भविस्सति ॥७१८॥ य वो किच्च सरीरेन त करोथ यदिच्छथ. न मे तप्पच्चया तत्थ दोमो पेमं च हेहिति ॥७१९॥ तस्स त वचन सुत्वा अब्भुत लोमहसनं सत्थानि बिक्खिपित्वान माणवा एतदब्रवु ।।७२०।। कि भट्टन्ते करित्वान, को वा आचारियो तव, किस्स सासनमागम्म लभते त असोकता ॥७२१॥ सब्बञ्जा सब्बदस्सावी जिनो आचरियो मम महाकारुणिको सत्था सञ्बलोकतिकिच्छको ॥ ७२२॥ तेनायं देसितो धम्मो खयगामी अनुत्तरो तस्स सासनमागम्म लभते तं अमोकता ॥७२३॥ मृत्वान चोरा इसिनो सुभासितं निक्खिप्प, सत्थानि च आवुधानि च तम्हा च कम्मा विरमम् एके, एके च पब्बज्जमरोचियस् ॥७२४॥ त पब्बजित्वा सूगतस्म सामने भावेत्वा बोज्झङगवलानि पण्डिता उदग्गचित्ता सुमना कतिन्द्रिया फ्सिम्, निब्बानपद असम्बतन्ति ॥७२५॥

अधिमुत्तो येरो

समणस्स अह विना पारापियस्स भिक्षुनो एककस्स निसिन्नस्य पिविवित्तस्य झायिनो ॥७२६॥ किमानुपुब्ब पुरिसो कि वतं कि समाचारं अत्तनो किच्चकारि 'स्स न च किञ्चि विहेठये ॥७२७॥ इन्द्रियानि मनुस्सानं हिताय अहिताय च अरिक्खितानि अहिताय रिक्खितानि हिताय च ॥७२८॥ इन्द्रियानेव सारक्खं इन्द्रियानि च गोपयं अत्तनो किच्चकारि'स्स न च किञ्च विहेठये ॥७२९॥

चक्खुन्द्रियञ्चे रूपेसु गच्छन्तं अनिवारयं अनादीनवदस्सावी, सो दुक्ला न हि मुच्चित ॥७३०॥ सोतिन्द्रियञ्च सद्देसु गच्छन्त अनिवारय अनादीनवदस्सावी, सो दुक्खा न हि मुच्चति ॥७३१॥ अनिस्सरणदस्सावी गन्धे चे पटिसेवति, न सो मुच्चित दुक्खम्हा गन्धेमु अधिमुच्छितो ॥७३२॥ अम्बिलमधुरम्गञ्च तित्तकमामन्स्सर रसतण्हाय गधितो हदय नाव बुज्झति ॥७३३॥ सुभान्यप्पटिकुलानि फोट्टब्बानि अनुस्सरं रनो रागाधिकरणं विविध विन्दते दुखं ॥७३४॥ मनञ्चेतेहि धम्मेहि यो न सक्कोति रक्खितु ततो नं दुक्यमन्वेति मब्बेहेतेहि पञ्चहि ॥७३५॥ पुब्बलोहितसम्पुण्ण बहुस्स कुणपरस च नरबीर कतं वर्गां समुगामिव चित्तितं ॥७३६॥ कटुकं मधुरस्माद पिय निबन्धन दुखं खुर व मधुना लित्त उल्लित्त नाव बुज्झित ॥७३७॥ इत्थिरूपे इत्थिरमे फोटुब्बे पि च इत्थिया इत्थिगन्धेसु सारत्तो विविध विन्दते दुल ॥७३८॥ इत्थिसोतानि सब्बानि सन्दन्ति पञ्च पञ्चस्, तेस आवरण कातू यो सक्कोति विरियवा, ॥७३९॥ सो अत्थवा'सो धम्मद्रो, सो दक्खो, सो विचक्खणो करेय्य रममानो हि किच्च धम्मत्थसहित ॥७४०॥ अथो मीदति सञ्ज्ञत वज्जे किच्चं निरत्यकं, न त किच्चन्ति मञ्जित्वा अप्यमत्तो विचक्खणो ॥७४१॥ यञ्च अत्थेन मञ्जूनं या च धम्मगता रति तं समादाय वत्तेथ, स हि वे उत्तमा रति ॥७४२॥ उच्चावचे हुपाये हि परेसमभिजिगीसाति हत्वा वधित्वा अथ सोचियत्वा आलोपति साहसा यो परेसं ॥७४३॥ तच्छन्तो आणिया आणि निहन्ति बलवा यथा इन्द्रियानि, न्द्रियेहेव निहन्ति कुसला तथा ॥७४४॥

सद्धं विरियं समाधिञ्च सतिपञ्जाञ्च भावयं पञ्च पञ्चहि हरःवान अनीषो याति बाह्यणो ॥७४५॥ सो अत्यवा सो धम्मट्टो कत्वा वाक्यानुसासनिं सक्वेन सक्वं बुद्धस्स, सो नरो सुखमेधतीति ॥७४६॥

पारापरियो थेरो

चिररतं वतातापो धम्मं अनुविचिन्तयं सम चित्तस्स नालत्थं पुच्छ समणबाह्मणे ॥७४७॥ को सो परगतो लोके, को पत्तो अमतोगधं, कस्स धम्म पटिच्छामि पर्मत्यविजाननं ॥७४८॥ अन्तोवद्भकगतो आसि मच्छो व घसमामिस, बद्धो महिन्दपासेन वेपचित्यासुरी यथा ॥ १४९॥ अञ्चामि न न मुञ्चामि अस्मा सोकपरिद्वा को मे बन्ध मुञ्चं लोके सम्बोधि वेदयिस्सिति ॥७५०॥ समणं ब्राह्मण वा कं आदिसन्त पभद्भगुन, कस्स धम्मं पटिच्छामि जरामच्चुपवाहनं ॥७५१॥ विचिकिच्छाकद्रखागिधत सारम्भबलसञ्ज्ञुनं कोधप्पत्तमनत्थद्धं अभिजप्पपदारणं ॥ ७५२॥ तण्हाधनुसमुद्वानं द्वे च पन्नरसायुनं पस्स ओरसिकं बालं भेत्वान यदि ठित ॥७५३॥ अनुदिद्रिन अप्पहानं सकप्प सरतेजित तेन विद्धो पवेधामि पत्त व मालुतेरितं ॥७५४॥ अज्झलं मे ममुद्राय खिष्प पच्चति मामक, छक्स्सायतनी कायो यत्थ सरति सब्बदा ॥७५५॥ त न परसामि तेकिच्छं यो मे त सल्लमुद्धरे नाना रज्जेन सत्येन नाञ्ञीन विचिकिच्छितं ॥७५६॥ को मे असत्थो अवणो सल्लमब्भन्तरा पस्सय अहिंसं सब्बगत्तानि सल्ल मे उद्धरिस्सति ॥७५७॥ धम्मप्पति हि सो सेट्रो विसदोसपवाहको गम्भीरे पतितस्स मे यलं पाणिव दस्सये ॥७५८॥ रहदे'हं अस्मि ओगाळ्हो अहारियरजमन्तिके माया उस्स्य्यसारम्भ योनमिद्धमपत्यटे ॥७५९॥

उद्धच्चमेघथनितं संयोजनवलाहकं वाहा बहन्ति कुद्दिट्टं संकप्पा रागनिस्सिता ॥७६०॥ सबन्ति सब्बधी सोता, लता उब्भिज्ज तिट्ठति; ते सोते को निवारेय्य'तं ळतं को हि छेच्छति ॥७६१॥ बेलं करोथ भट्टन्ते सोतानं सन्निवारणं, मा ते मनोमयो सोतो स्क्लंव सहसा लुवे ।।७६२।। एवं मे भयजातस्स अपारापारमेसतो ताणो पञ्जाबुघो सत्या इसिसघनिसेवितो ॥७६३॥ सोपानं सुकतं सुद्धं धम्मसारमयं दळ्ह पादासि वुयुहमानस्म माभायीति च मन्नवि ॥७६४॥ सतिपट्टानपासादं आरुय्ह पच्चवेक्लिस यन्तं पुब्बे अमाञ्ज्ञिस्सं सक्कायाभिरत पजं ॥७६५॥ यदा च मग्गमइक्तिं नावाय अभिरुह्न अनिधट्ठाय अतानं नित्थमद्क्षिमुत्तमं ॥७६६॥ सल्ल अत्तसमुद्वानं भवनेत्ति पभावित एतेसं अप्पवत्ताय देसेसि मग्गमुत्तम ।।७६७।। दीघरत्तानुसयितं चिररत्तपतिद्वितं बुद्धो मे पानुदी गन्धं विसदोसपवाहनो'ति ॥७६८॥

तेलकानि थेरो

पस्स चित्तकतं बिम्बं अरुकायं समुस्सितं आतुरं बहुसंकप्यं, यस्स नित्य घुवं ठिति ॥७६९॥ पस्स चित्तकतं रूप मणिना कुण्डलेन च अट्ठितचेन ओनद्धं सह वत्थेहि सोभित ॥७७०॥ अलत्तककता पापा मुखं चुण्णकमिक्वतं अल बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७१॥ अट्ठापदकता केसा, नेता अञ्जन मिक्वता अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७२॥ अञ्जनी'व नवा चित्ता पृतिकायो अलंकतो अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७३॥ ओदहि मिगवो पासं, नासादा वाकुरं मिगो; भुत्वा निवापं गच्छाम कत्दन्ते मिगवन्षके ॥७०४॥

छिन्ना पासा मिगवस्स, नासादा वाकुरं मिगो, भुत्वा निवापं गच्छाम सोचन्ते मिगलुद्धके ॥७७५॥ पस्सामि लोके सधने मनुस्से, लढ़ान विन्तं न ददन्ति मोहा; लुद्धा धनं सम्निचयं करोन्ति भिय्यो च कामे अभिपत्थयन्ति ॥७७६॥ राजा पसयह प्पथवि विजेत्वा ससागरन्त महिमावसन्तो ओरं समृद्दस्स अतित्तरूपो पारं समुद्दस्स पि पत्थयेथ ॥७७७॥ राजा च अञ्जो च बहु मनुस्सा अवीततण्हा मरणं उपेन्ति; ऊना व हुत्वान जहन्ति देह, कामेहि लोकम्हि न हत्थि तित्ति ॥७७८॥ कन्दन्ति नं ञानि पिकरिय केसे अहो बता नो अमरा'ति चाह, वत्येन न पारुनं नीहरित्वा चित समोधाय नतो दहन्ति ॥ ७७९॥ सी डयहति मुलेहि तुज्जमानी एकेन वत्थेन पहाय भोगे; न मिय्यमानस्स भवन्ति ताणा ज्ञानी च मित्ता अथवा सहाया ॥७८०॥ दायादका तस्स धन हरन्ति. सत्तो पन गच्छति येन कम्म. न मिय्यमानं धनमन्वेति किञ्च पूत्ता च दारा च धनञ्च रद्र ॥७८१॥ न दीषमायु लभने धनेन न चापि वित्तेन जर विद्वन्ति' अप्पञ्हि न जीवितमाह धीरा असम्मत विष्परिणामधम्म ॥७८२॥ अद्धा दलिद्दा च फुसन्ति फस्स, बालों च धीरों च तथेव फुट्टो; बालो हि बाल्या विधतो व सेति, घीरो च न वेधति फस्सफुट्रो ॥७८३॥ तस्मा हि पञ्जांब धनेन सेय्यो याय वोसान इधाधि गच्छति.

अब्योसितस्था हि भवाभवेस् पापानि कम्मानि करोन्ति मोहा ॥७८४॥ उपेति गढभञ्च पदञ्च लोक संसारमापज्ज परम्पराय, तस्सप्यपञ्जा अभिसद्दहन्तो उपेति गढभञ्च परञ्च लोकः ॥७८५॥ चोरो यथा सन्धिमुखं गहीतो सकम्मुना हञ्ञाति पापधम्मो, एवं पजा पेच्च परम्हि लोके सकम्मुना हुञ्जति पापधम्मो ॥७८६॥ कामा हि चित्रा मधुरा मनोरमा विरूपरूपेन मथेन्ति चित्तं: आदीनवं कामगुणेसु दिस्वा तस्मा अहं पब्बजितो'म्हि राजा ॥७८७॥ द्मप्फलानीव पतन्ति माणवा दहरा च व्ड्ढा च सरीरभेदा; एतम्पि दिस्दा पञ्चिजनो'म्हि राजा अप्पण्णकं सामञ्जामेव सेय्यो ॥७८८॥ मद्धायाहं पब्बजितो उपेतो जिनसासने, अवज्जा मयुह पन्त्रजा, अनणो भ्ञ्जामि भोजनं ॥७८९॥ कामे आदित्ततो दिस्वा जातरूपानि सत्थतो गब्भे ओक्कन्तितो दुक्खं निरपेसु महब्भयः ॥७९०॥ एतमाहीनव दिस्वा मवेग अर्लाभ तदा, मी'हं विद्धो तदा सन्तो सम्पत्तो आवसक्तवयं ॥७९१॥ परिचिष्णो. . . . (= ६०४) ॥७९२॥ यम्मन्थाय पब्बजितो. . . (यस्म ६०५) सब्बम योजनक्खयो'ति ॥७९३॥

रट्डपालो थेरो

रूपं दिस्वा सित मुट्ठा पियनिमित्त मनसि करोतो; सीरत्तिचत्तो वेदेति तञ्च अज्ज्ञोम तिट्ठति ॥७९८॥ तस्स वड्ढिन्ति वेदना अनेका रूपसम्भवा, अभिज्ञा च विहेसा च चित्तमस्मूपहञ्ज्ञति, एवमाचितो दुक्व आरा निब्बान वुच्चति ॥७९५॥ सह सुत्वा सित मुट्ठा . . . (७९४,७९५;) ॥७९६–७९७॥ गन्ध घत्वा. . . . (गन्ध सम्भवा ॥७९८–७९९॥

रसं भोत्वाः (रससम्भवां) ॥८००-८०१॥ फस्सं फुरसः . . . (फस्ससम्भवा) ॥८०२–८०३॥ धम्मं ञत्वा. . . (धम्मसम्भवा) ॥८०४–८०५॥ न सो रज्ज्जिति रूपेस्; रूपं दिस्वा पनिस्सतो विरत्तचित्तो वेदेति तञ्च नज्झोस तिद्वति ॥८०६॥ यथास्स पस्सतो रूपं सेवतो वापि वेदनं खिय्यति नोपचिय्यति एवं सो चरती सतो; एवं अपचिनतो दुक्लं सन्तिके निब्बान बुज्बित ॥८०७॥ न सो रज्जिति सद्देसु, सद्द सुत्वा पितस्सतो (.. गन्धे.) सुगन्धं घत्वा . . . रसेसु रस भोत्वा फस्सेसु फर्स फुर्स . . . धम्मेमु धम्म ङात्वा पतिस्सतो) विरत्त चित्तो वेदेति तञ्च नञ्झोस तिट्र ति ॥८०८-८१०॥ 613-618-618 II यथास्स सुणतो सद्दं (घायतो गन्धं, सायतो रसं, । फुस्सतो फस्स, विजानतो धम्मं)-सेवतो वापि वेदनं खिय्यति नोपचिय्यति एवं सो चरती सतो; एवं अपचिनतो दुक्खं सन्तिके निब्बान वुच्चति ॥८०९,८११,८१३,८१५,८१७॥

मालुक्यपुत्तो थेरो

परिपुष्णकायो सुरूचि सुजातो चारुदस्सनो मुवष्णवष्णो'मि भगवा, सुसुक्कदाटो'सि विरियवा ॥८१८॥

नरस्स हि सुजातस्स ये भवन्ति वियञ्जना
सब्बे ते तव कार्यास्म महापुन्सिलक्खणा ॥८१९॥
पसन्नतेतो सुमुखो ब्रहा उजु पतापवा
मज्झे समणसंघस्स आदिच्चो व विरोचिस ॥८२०॥
कल्याणदस्सनो भिक्खु कञ्चनसन्निभत्तचो
किन्ते समणभावेन एवं उत्तमविण्णनो ॥८२१॥
राजा अरहिस भिवतुं चक्कवित रथेसभो
चातुरन्तो विजितावी जम्बुसण्डस्स इस्सरो ॥८२२॥

खत्तिया भोजराजानो अनुयन्ता भवन्ति ते, राजाभिराजा मनुजिन्दो रज्जं कारेहि गोतम ॥८२३॥ राजाहमस्मि सेला'ति भगवा धम्मराजा अनुत्तरी, धम्मेन चक्कं वत्तीम चक्कं अप्पटिवत्तियं ॥८२४॥ सम्बद्धी पटिजानासि इति सेली बहाणो धम्मराजा अनुत्तरी धम्मेन चक्क वर्त्तीम इति भाससि गोतम ॥८२५॥ कोनु सेनापति भोतो सावको सत्थरन्वयो, को इमं अनुवत्तेति धम्मचक्कं पवत्तितं ॥८२६॥ मया पवत्तितं चक्कं सेला 'ति भगवा घम्मचक्कमनुत्तरं सारिपुत्तो नुवत्तेति अनुजातो तथागत ॥८२७॥ अभिञ्जोयं अभिञ्जातं भावेतब्बञ्च भावितं. पहातब्बं पहीन मे, तस्मा बृद्धो'स्मि ब्राह्मणं ॥८२८॥ विनयस्म् मयी कड्स्ब, अधिमुच्चस्स् ब्राह्मण दुल्लभं दस्सनं होति सम्बुद्धानं अभिण्हसो ॥८२९॥ येसं वे दल्लभो लोके पात्भावो अभिण्हसो, सो'हं ब्राह्मण बुढ़ो'स्मि सल्लकत्तो अनुत्तरो ॥८३०॥ ब्रह्मभूतो अतितुलो मारसेनप्पमहनो सब्बामित्ते वसीकत्वा मोदामि अकुतोभयो ।।८३१॥ इदं भोन्तो निसामेथ यथा भासति चन्खुमा सल्लकत्तो महावीरो, सीहो व नदती वने ॥८३२॥ ब्रह्मभूतं अतित्लं मारसेनप्पमद्दनं को दिस्वा न प्यसीदेय्य अपि कण्हाभिजातिको ॥८३३॥ ये मं इच्छति अन्वेत्, यो वा निच्छति गच्छतुः इघाहं पञ्जिजस्सामि वरपञ्जस्स सन्तिके ॥८३४॥ एतञ्चे रुच्चति भोतो सम्मासम्बद्धसासन मयम्पि पञ्जितसाम वरपञ्जास्स सन्तिके ॥८३५॥ बाह्मणा तिसता इमे याचन्ति पञ्जलीकता ब्रह्मचरियं चरिस्साम भगवा तव सन्तिके ॥८३६॥ स्वाखात ब्रह्मचरियं सेला'ति भगवा सन्दिद्विकमकालिकं यथा अमोचा पब्बज्जा अप्पमत्तस्स सिक्खतो ॥८३७॥

यन्तं सरणमागम्म इतो अट्टीम चक्खुमा, सत्तरत्तेन भगवा दन्तम्हा तब सासने ॥८३८॥ तुवं बुद्धो, तुवं सत्था, तुवं माराभिभू मृनि, तुवं अनुसये छेत्वा तिण्णो तारेसि मं पत्रं ॥८३९॥ उपधी ते समतिक्कन्ता, आसवा ते पदालिता, सीहो व अनुपदानो पहीनभयभेरवो ॥८४०॥ भिक्खवो तिसता इमे तिट्टीन्त पञ्जलीकता ! पादे वीर पसारेहि, नागा बन्धन्तु सत्थुनो'ति ॥८४१॥

सेलो थरो

या तं मे हत्थिगीवाय सुखुमा वन्था पधारिता, सीलीनं ओदनो भुत्तो सुचिमसूपसेचनो ॥८४२॥ सो'ज्ज भद्दो सातितको उञ्छापत्ता गतेरतो झायति अनुपादानो पुत्तो गोघाय भद्दियो ॥८४३॥ पंसुकूली सातिनको उञ्छापत्तागने रतो झीयति अनुपादानो पुत्तो गोधाय भहियो ॥८४४॥ पिण्डपाती सातनिको—प—तेचीवरी माततिको—प सपदानचारी--प-एकासनी--प-पत्तपिण्डी —-प ---खलुपच्छाभत्ती---प--आरञ्जिको ---प---हक्खमूलिको---प--अब्भोकासी --प--सोसानिको---प---यथासन्थतिको ---प---नेसज्जिको---प---अप्पिच्छो---प---सन्तुट्टो-प-पविवित्तो-प-असंसट्टो --प--आरद्धविरियो माततिको--प--।।८४५-८६१।। हित्वा सतपलं कंसं सोवण्ण सनराजिकं अग्गहिं मत्तिकापत्तं, इदं दुतियाभिसेचन ॥८६२॥ उच्चे मण्डलिपाकारे दळ्हमट्टालकोट्ट के रिक्सतो लग्गहत्थेहि उत्तसं विहरि पुरे ॥८६३॥ सो'ज्ज भद्दो अनुत्रासी पहीनभयभेरवो झायति वनमोगय्ह पुत्तो गोधाय भद्दियो ॥८६४॥ सीलक्खन्धे पतिद्वाय सति पञ्जाञ्च भावय पापुणि अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनक्खयन्ति ॥८६५॥ महियो काळिगोधाय पुत्तो

गच्छं वदेसि समण ठितो 'मिह ममञ्च बुसि ठितमद्वितो'नि पुच्छामि तं समण एतमत्यंः कस्मा ठितौ त्वं अहमट्टि तो'म्हि ॥८६६॥ ठितो अहं अङगुलिमाल सब्बदा सब्बेम् भूतेस् निधाय दण्डं त्वञ्च पाणेसु असञ्जनो'सि तस्मा ठितो'ह तुवमद्वितो'सि ॥८६॥। चिरस्स वत मे महिनो महेसि महावन समणो पच्चपादि; सो मं चजिस्सामि सहस्सपापं सूत्वान गाथं तव धम्मय्त्तं ॥८६८॥ इत्वेव चोरी असिमाव्यञ्च सोब्भे पपाते नरके अन्वकासि, अवन्दि चोरो मुगतस्य पादे तत्थेव पब्विज्जिमयाचि बुद्ध ॥८६९॥ बढ़ो च खो कारुणिको महेसिओ सत्या लोकस्म सदेवकस्स तमेहि भिक्खु'ति तदा अवोच, एसेव तस्म अहु भिक्खुभावो ॥८७०॥ यो पूब्बे पमज्जित्वान पच्छा सो न प्पमज्जित, सो'ह लोक पभामेति अब्भा मृत्तो व चन्दिमा ॥८७१॥ यस्म पाप कत कम्म कुमलेन पिथीयति, मो'हं लोकं पभामेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७२॥ यो हवे दहरो भिक्ख युञ्जती बुद्धमासने, सो'हं लोक पभामेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७३॥ दिसा हि मे धम्मकथ मूणन्त्, दिसा हि मे युञ्जन्त बृद्धसासने दिसा हि मे ते मनुस्मे भजन्तु ये धम्ममेवादपयन्ति सन्ती ॥८७४॥ दिसा हि मे खन्तिवादान अविरोधप्पसंसन स्णन्तु धम्म कालेन तञ्च अन्विधीयन्तु ॥८७५॥ न हि जातू सो मम हिमे अञ्जं वा पन कञ्चिन, पष्प्रय परमं सन्ति रक्खंय्य तसथावरे ॥८७६॥ उदके हि नयन्ति नेत्तिका, उसकारा नमयन्ति तेजनं, दारुं नमयन्ति तच्छका, अत्तान दमयन्ति पण्डिता ॥८७७॥ दण्डेनेके दमयन्ति अझक्सेहि कसाहि च; अदण्डेन असत्थेन अहं दन्तों मिह तादिना ॥८७८॥ अहिंसको 'ति मे नामं हिंसकस्स पूरे सतो अज्जाहं सच्चनामो'म्हि न नं हिसामि कञ्चिन ॥८७९॥

चौरो अहं पुरे आसि अङ्गुलिमालो 'ति विस्सुतो; उय्हमानो महोघेन बुद्धं सरणमागम ॥८८०॥ लोहितपाणि पुरे आसि अद्भगुलिमालो'ति विस्सुतो; सरणागमनं पस्स; भवनेत्ति समूहता ॥८८१॥ तादिसं कम्मं कत्वान बहुं दुग्गतिगामिनं फुट्टो कम्मविपाकेन अनणो भुञ्जामि भोजनं ॥८८२॥ पमादमनुष्ञान्ति बाला दुम्मेधिनो जना, अप्पमादञ्च मेघावी धन सेट्रं व रक्खिति ॥८८३॥ मा पमादमनृयुञ्जेथ मा कामरतिसन्थवं, अप्पमत्तो हि झायन्तो पप्पोति परम सुखं ॥८८४॥ स्वागतं नापगतं नेतं दुम्मन्तितं मम; सम्बभत्तेसु धम्मेसु यं सेट्टं तद्पागम ॥८८५॥ स्वागतं नापगतं नेतं दुम्मन्तितं मम; तिस्सो विज्जा अनुष्यत्ता कतं बुद्धस्स सासनं ॥८८६॥ अरञ्जो रुक्खमूले वा पब्बतेमु गुहासु वा तत्थ तत्थेव अट्टासि उब्बिग्गमनसो तदा ॥८८७॥ सुखं संयामि ठायामि सुख कप्पेमि जीवित बहत्यपासो मारस्स; अहो सत्थानुकम्पितो ॥८८८॥ ब्रह्मजञ्चो पुरे आसि, उदिच्चो उभतो अहुं, सो'ज्ज पुत्तो सुगतस्स धम्मराजस्स सत्युनो ॥८८९॥ वीततण्ही अनादानी गुत्तद्वारी सुसंबुती; अघमूलं विमत्वान पत्तो मे आसवक्खयो ॥८९०॥ परिचिण्णो मया सत्था, कतं बुद्धस्स सासनं, ओहितो गरुको भारो, भवनेनि समृहता'ति ॥८९१॥

श्रङ्गुलिमालो थेरो

पहाय माता पितरो भिगनीञातिभातरो
पञ्च कामगुणे हित्वा अनुमृद्धी'व झायति ॥८९२॥
समेतो नञ्चगीतेहि सम्मताळप्पबोषनो
न तेन सुद्धिमञ्झगमा मारस्स विसये रतो ॥८९३॥
एतञ्च समतिकम्म रतो बुद्धस्य सासने
सम्बोधं समतिकम्म अनुमृद्धी'व झायति ॥८६४॥

रूपा सद्दा रसा गन्धा फोटुब्बा च मनोरमा एते च समतिक्कम्म अन्रुढो'व झायति ॥८९५॥ पिण्डपातपटिक्कन्तो एको अद्तियो मनि एसति पंसुकूलानि अनुरुद्धो अनामवी ॥८९६॥ विचिनि अग्गही घोवि रजयी धारयी मृति पसुक्लानि मतिमा अनुरुढो अनासवो ॥८९ ॥। महिच्छो च असन्तुद्रो संसद्दो यो च उद्धतो. तस्स धम्मा इमे होन्ति पायका संकिलेसिका ॥८९८॥ सतो च होति अप्पिच्छो मनाद्रो अविघानवा पविवेकरतो विनो निच्चमारद्वयीरियो ॥८९९॥ तस्म धम्मा इमे होन्ति कुसला बोधियपक्किका अनामवो च सो होति, इति वृत्तं महेसिना ॥९००॥ मम सकष्पमञ्जाय सत्था लोकं अननरे मनोमयेन कायेन इद्धिया उपसक्ति ॥९०१॥ यदा मे अह सकप्पो तनो उत्तरि देसिय, निष्पषञ्चरतो बुद्धो निष्पषञ्चमदेसयि ॥९०२॥ तस्साहं धम्ममञ्ज्ञाय विहासि सासने रती, तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कत बृद्धस्स सामन ॥९०३॥ पञ्चपञ्जासबस्सानि यतो नेसज्जिको अहं, पञ्च बीसति वस्सानि यतो मिद्धं समूहतं ॥९०४॥ नाहु अस्सासपस्मासो ठितचित्तस्म तादिनाः; अनेजो सन्तिमारबभ चक्तुमा परिनिब्तुनो ॥९०५॥ असल्लीनेन चित्तेन वेदन अज्झवासिय: पज्जोतस्सेव निब्बान विमोक्खो चेतसो अह ॥९०६॥ एते पच्छिमका दानि मुनिनो फस्सपञ्चमा नाञ्जो धम्मा भविस्सन्ति सम्बुद्धे परिनिब्बुते ॥९०७॥ नित्य दानि पुनावासो देवकायस्मि जालिनि; विक्खीणो जातिसंसारो, नित्य दानि पुनब्भवो ॥९०८॥ यस्स मुहुत्ते सहस्सदा लोको सविदितो, स ब्रह्मकप्यो वसि इद्भिगुणे चुतुपपाते काले पस्सति देवता स भिक्खु ॥९०९॥ अन्नभारो पूरे आसि दिळहो धासहारको, समणं पटिपादेसि उपरिद्वं यसस्सिनं ॥९१०॥

सो'म्हि सक्यकुले जातो अनुरुद्धो'ति मं विद्, अपेतो नच्चगीतेहि सम्मताळप्पबोधनो ॥९११॥ अथहसासि सम्बद्धं सत्थारं अकुतोभयं, तिसम चित्तं पसादेत्वा पञ्जीज अनगारियं ॥९१२॥ पुरुषेनिवासं जानामि यत्य मे उसितं पुरे, तावर्तिसेसु देवेसु अट्टासि सक्कजातिया ॥९१३॥ सत्तवखत्तु मनुस्सिन्दो अहं रज्जमकारीय चातुरन्तो विजितावी जम्बुसण्डस्स ६स्सरो, अदण्डेन असत्येन घम्मेन अनुसासीय ॥५१४॥ इतो सत्त इतो सत्त संमारानि चतुर्स निवासमभिजानिस्सं देवलोके ठितो तदा ॥९१५॥ पञ्चिद्धगके समाधिम्हि सन्ते एकोदिभाविते पटिप्पस्सद्धिलद्धम्हि, दिब्बचवर्ष् विमुज्झि मे ॥९१६॥ बुत्तूपपातं जानामि सत्तानं आयति गति इत्यभावञ्ञाया भाव झाने पञ्चक्रिगके ठितो ॥९१७॥ परिचिण्णो मया सत्था-प-समूहता ॥९१८॥ वज्जीनं वेळुवगामे अहं जीवितसखया हेट्रतो वेळुगुम्बस्मि निज्बायिस्सं अनासवो'ति ॥९२०॥

श्रनिरुद्धो थेरो

समणस्स अहु चिन्ता पुष्फितम्हि महावने
एकगास्स निसिन्नस्स पविवित्तस्स झायिनोः
अञ्ज्ञाया लोकनायम्हि तिट्ठन्ते पुरिसुत्तमे
इरियं आसि भिक्खूनं, अञ्ज्ञाथा दानि दिस्सते ॥९२१॥
सोतवातपरित्तानं हिरिकोपीनछादनं,
मत्तद्विय अभुञ्जिंसु सन्तुट्ठा इतरीतरे ॥९२२॥
पणीतं यदि वा लूखं अप्यं वा यदि वा बहुं
यापनत्यं अभुञ्जिंसु अगिद्धा नाधिमुच्छिता ॥९२३॥
जीवितानं परिक्खारे भेसज्जे अथ पच्चये
न बाळ्हं उस्सुका आसुं यथा ते आसवक्खये ॥९२४॥
अरञ्जे रुक्खमूलेसु कन्दरासु गृहासु च
विवेकमनुबूहन्ता विहिस्सु तप्परायना ॥९२५॥

नीचनिविद्वा सुभरा मुद्र अस्थद्यमानसा अव्यासेका अमुखरा अत्यचिन्तावसानुगा ॥९२६॥ ततो पासादिकं आसि गतं भूतं निसेवितं सिनिद्धा तेलकारा व अहोसि इरियापथो ॥९२७॥ सञ्जासवपरिक्लीणा महाझायी महाहिता निब्बुता दानि ते थेरा, परित्ता दानि तादिसा ॥९२८॥ कुसलानञ्च धम्मानं पञ्जाय च परिक्खया सब्बाकारबरूपेत लुज्जते जिनसासनं ॥९२९॥ पापकानञ्च धम्मानं किलेसानञ्चयो उत् उपट्टिताविवेकाय ये च सद्धम्मसेसका ॥९३०॥ ते किलेसा पवड्ढन्ता आविसन्ति बहुं जन, कीळन्ति मञ्जो बालेहि उम्मत्तेहि व रक्खसा ॥९३१॥ किलेसेहाभिभूता ते तेन तेन विधाविता नरा किलेसवत्युसु सथगाहे व घोसिते ॥९३२॥ परिच्वजित्वा सद्धम्मं अञ्जामञ्जोहि भण्डरे, दिट्टि गतानि अन्वेन्ता इदं सेय्यो'ति मञ्जरे ॥९३३॥ घनञ्च पुत्तं भरियञ्च छड्ड यित्वान निग्गता कटच्छिभिक्सहेतु पि अकिच्चानि निसेवरे ॥९३४॥ उदरावदेहकं भुत्वा सयन्ततुत्तानसेय्यका, कथा वदेन्ति पटिबुद्धा या कथा सत्थु गरहिता ॥९३५॥ सञ्बकारक सिप्पानि चित्ति कत्वान सिक्खरे, अव्पसन्ता अज्ञत्तं सामञ्जत्थों ति अच्छति ॥९३६॥ मित्तकं तेलं चुण्णञ्च उदकासनभोजन गिहीन उपनामेन्ति आकड्मबन्ता बहुत्तरं ॥९३७॥ दन्तपोणं कपिट्र ञ्च पुष्फलादनियानि च पिण्डपाते च सम्पन्ने अम्बे आमलकानि च ॥९३८॥ वेसज्जेसु यथा वेज्जा, किच्चाकिच्चे यथा गिही, गणिका व विभूसायं, इस्सरे खत्तिया यथा ॥९३९॥ नेकतिका बञ्चनिका कृटसक्खी अवादका बहूहि परिकप्पेहि आमिसं परिभुञ्जरे ॥९४०॥ लेस कप्पे परियाये परिकप्पे'नुधाविता जीविकत्था उपायेन संकड्डन्ति बहुं धनं ॥९४१॥

उपहुपेत्त परिसं कम्मतो नो च धम्मतो, धम्मं परेसं देसेन्ति लाभतो नो च अत्थतो । १९४२।। संघलाभस्स भण्डन्ति सघतो परिवाहिरा, परलाभोपजीवन्ता अहिरिका'व न लञ्जरे ॥ १९४३।। नान्युत्ता तथा एके मुण्डा संघाटिपाध्ता सम्भावनं ये विच्छन्ति लाभसक्कारमुच्छिता ॥ १४४॥ एवं नानप्ययानम्हि नि दानि सुकर तथा अफुसितं वा फुसितु फुसितं वानुर्रावस्त्र ॥ १४५॥ यथा कण्टकट्टानम्हि चरेय्य अनुपाहनो सित उपहुपेत्वान, एवं गामे मुनी चरे ॥ १४६॥ सिरत्वा पुब्बके योगी तेसं वत्तमनुस्सरं किञ्चापि पच्छिमो कालो फुसेय्य अमतं पर ॥ १४७॥ इदं बत्वा सालवने समणो भावितिन्द्रयो ॥ १४८॥ बाह्मणो परिनिब्बायि इसि स्वीणपुन्नभवो'ति

पारापरियो थरो

उद्दानं

अधिमुत्तो पारापरियो तेलकानि रट्टपालो मालुड्स्क्य सेलो भहियो अङगुलि दिब्बचक्खुको पारापरियो दसेते विसम्हि सुपरिकित्तिता, गाथायो देसता होन्ति पञ्चतालीस उत्तरिन्ति

वीसतिनियातो निद्उतो

तिंसनिपातो

पासादिके बहू दिस्वा भावितत्ते सुसंबुते इसि पण्डरसोगोत्तो अपुच्छि फुस्समव्हयं. ॥९४९॥ किछन्दा किमधिप्पाय किमाकप्पा भविस्मरे अनागतम्हि कार्लाम्ह तं मे अक्खाहि पुच्छितो ॥९५०॥ सुणोहि वचनं मय्हं इसि पण्डरसञ्हय, सक्कच्चं उपधारेहि, आचिक्खिस्साम्यनागतं ॥९५१॥ कोधना उपनाही च भक्ष्वी थम्भी सठा बहु इस्सुकी नानावादा च भविस्मन्ति अनागते ॥९५२॥ अञ्जातमानिनो धम्मे गम्भीरे तीरगोचरा लहुका अगरु धम्मे अञ्ञासञ्ज्ञामगारवा ॥९५३॥ बाहू आदीनवा लोके उप्पन्जिसन्ति' नागते; सुदेसित इमं धम्मंकिलिसिस्सन्ति दुम्मती ॥९५४॥ गुणहीनापि सघम्हि वोहरन्ति विसारदा वरुवन्तो भविस्सन्ति मुखरा अस्मुतादिनो ॥९५५॥ गुणवन्तो पि संघम्हि ओरहरन्ता ययत्थतो दुब्बला ते भविस्सन्ति हिरिमना अनित्थका ॥९५६॥ रजतं जातरूपञ्च खेत्तं वथुं अजेळकं दासीदासञ्च दुम्मेधा सादिधिस्मन्ति'नागते ॥९५७॥ उज्झानस्राञ्जनो बाला सीलेसु असमाहिता उन्नळा विचरिस्सन्ति कलहाभिरता मगा ॥९५८॥ उद्धता च भविस्सन्ति नीलचीवरपारुता; कुहा बद्धा लपा सिद्धगी चरिस्सन्त्यरिया विय ॥९५९॥ तेलसंहेहि केसेहि चपला अञ्ञानिक्का रिधयाय गम्मिस्सन्ति दन्तवण्णकपारुता ॥९६०॥

अजेगुच्छं विमुतेहि सुरत्तं भरहद्धजं जिगुच्छिस्सन्ति कासावं ओदातेमु समुच्छिता ॥९६१॥ लाभकामा भविस्सन्ति कुसीला हीनवीरिया, किच्छन्ता वनपत्तानि गामन्तेसु वसिस्सरे ॥९६२॥ ये ये लाभं लभिस्सन्ति मिच्छाजीवरता सदा. ते ते च अनसिक्खन्ता भजिस्सन्ति असयता ॥९६३॥ ये ये अलाभिनो लाभं, न ते पूज्जा भविस्सरे, सुपेसले पि ते धीरे सेविस्सन्ति न ते तदा ॥९६४॥ मिलक्ख्रजनं रत्तं गरहन्ता सकं धजं तित्थियानं धज केचि धारेसन्त्यवदातकः ॥९६५॥ अगारवो च कासावे तदा तेस भविस्सति पटिसंखा च कासावे भिक्खूनं न भविस्सति ॥९६६॥ अभिभूतस्स दुक्लेन सल्लविद्धस्स रूप्पतो पटिसंखा महाघोरा नागस्सासि अचिन्तिया ॥९६७॥ छद्दन्तो हि तदा दिस्वा सुरत्तं अरहद्धजं तावदेव भणी गाथा गजो अत्थोपसंहिता ॥९६८॥ अनिक्कसावो कासावं यो वत्थं परिदहिस्सति अपेतो दमसच्चेन, न सो कासावमरहति ॥९६९॥ यो च वन्तकसावस्स सीलेसु सूसमाहितो उपेतो दमसञ्चेन, स वे कासावमरहति ॥९७०॥ विपन्नसीलो दुम्मेघो पाकटो कामकारियो विब्भन्तिचत्तो निस्सुक्को, न सो कासावमरहति ॥९७१॥ यो च सीलेन सम्पन्नो वीतरागो समाहितो ओदातमनसंकप्पो स वे कासावगरहित ॥९७२॥ उद्धतो उन्नळो बालो सीलं यस्म न विज्जति, ओदातकं अरहति, कासावं कि करिस्सति ॥९७३॥ भिक्ख च भिक्खुनियो च दुर्हचित्ता अनादरा तादीनं मेत्तचित्तानं निग्गण्हिस्सन्ति'नागते ॥९७४॥ सिक्खापेन्तापि थेरेहि वाला चीवरधारणं न सृणिस्सन्ति दुम्मेघा पाकटा कामकारिया ॥९७५॥ ते तथा सिक्सिता बाला अञ्जामञ्जां अगारवा नादियिस्सन्तुपज्झाये खलुङको विय सार्राथ ॥९७६॥

एवं अनागतद्वानं पटिपत्ति भविस्सति
भिन्नकुनं भिन्नकुनीनञ्च पत्ते कालम्हि पिच्छमे ॥९७७॥
पुरा आगच्छते एतं अनागतं महन्भयं
सुब्बचा होष सिस्तला अञ्जानञ्जां सगारवा ॥९७८॥
मेत्त्रांचित्ता कारुणिका होष सीले सुसंवृता
आरद्धविरिया पहितत्ता निच्चं दाळ्हपरककमा ॥९७९॥
पमादं भयतो दिस्वा अप्पमादञ्च सेमतो
भावेषट्ट क्रिगकं मग्गं फुस्सन्ति अमतं पदं नित ॥९८०॥

फुस्सत्थेरो

यथाचारी यथासतो सतिमा यथा संकष्प चरियाय अप्पमत्तो अज्झत्तरतो सुसमाहिनतो एको सन्तुमितो, तमाहु भिक्खं ॥९८१॥ अल्लं सुक्खंञ्च भुञ्जन्तो न वाळह सुहितो सिया, उनुदरो मिताहारो सतो भिक्ख परिब्बजे ॥९८२॥ चतारो पञ्च आलोपे अभुत्वा उदक पिवे, अलं फासुविहाराय पहितत्तस्स भिक्खुनो ॥९८३॥ कप्पियतञ्च आदेति चीवर इदमत्थिकः, अलं फासुविहाराय पहितत्तस्य भिक्खुनो ॥९८४॥ पल्लडकेन निसिन्नस्स जण्णुके नाभिवस्सति, अलं. । ।९८५॥ यो सुखं दुक्खतो अह, दुक्खं अहक्खि सल्लतो. उभयन्तरेन नाहोसि, केन लोकस्मि कि सिया ॥९८६॥ मा मे कदाचि पापिच्छो कुसीतो हीनवीरियो अप्पस्मुतो अनादरो, केन लोकस्मि कि सिया ।।९८७।। बहुस्सुती च मेधावी सीलेसु मुसमाहितो चेतो समयमन्युत्तो अपि मुद्धनि तिद्वतु ॥९८८॥ यो पपञ्चमनुयुत्तो पपञ्चाभिरतो मगो, विराधयी च सो निब्बानं योगक्लेमं अनुत्तर ॥९८९॥ यो च पपञ्च हित्वान निप्पपञ्चपथे रतो, आराधयी सो निब्बान योगक्लेमं अन्तरं ॥९९०॥

गामे वा यदि वा'रङ्जो निम्ने वा यदि वा थले, यत्थ अरहन्तो विहरन्ति तं भूमि रामणेय्यक ॥९९१॥ रमणीया अरञ्जानि, यत्थ न रमती जनो, बीतरागा रमिस्सन्ति न ते कामगवेसिनो ॥९९२॥ निधीनं व पवत्तारं यं पस्से वज्जदस्सिनं निग्गयहवादिं मेधावि, तादिसं पण्डितं भजे; तादिसं भजमानस्य सेय्यो होति न पापियो ॥९९३॥ ओवदेय्यानुसासेय्य असब्भा च निवारये, सतं हि सो पियो होति असतं होति अप्पियो ॥९९४॥ अञ्जास्स भगवा बुद्धो धम्मं देसेसि चक्लुमा, धम्मे देसियमानम्हि सोतमोधेतिमत्थिको ॥९९५॥ तम्मे अमोघं सवनं, विमुत्तो'म्हि अनासवो नेव पुब्बेनिवासाय न पि दिब्बस्स चक्ख्नो ॥१९६॥ चेतोपरियायइद्विया चृतिया उपपत्तिया सोतधातुविसुद्धिया पणिधि मे न विज्जति ॥९९७॥ रुक्खमूल व निस्साय मुण्डो सघाटिपारुतो पञ्जाय उत्तमो थेरो उपतिस्सो'व झायति ॥९९८॥ अवितक्कं समापन्नो सम्मासम्बद्धसावको अरियेन तृष्हिभावेन उपेतो होति तावदे ॥९९९॥ यथापि पञ्जतो सेलो अचलो सुपतिदितो, एवं मोहक्खया भिक्ख पब्बतीव न वेधति ॥१०००॥ अनुक्रगणस्य पोसस्स निच्चं मुचिगवेसिनो वालग्गमत्तं पापस्स अब्भामत्तं व खायति ॥१००१॥ नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवित, निक्खिपस्यं इमं कायं सम्पजानो पतिस्यतो ॥१००२॥ -प--- निब्बिसं भतको यथा ॥१००३॥ उभयेन मिदं मरणं एव नामरण पच्छा वा पुरे वा; पटिपज्जय मा विनस्सय, खणो वे मा उपच्चगा ॥१००४॥ नगरं यथा पच्चन्तं गुत्तं सन्तरबहिरं एव गोपेथ अत्तानं, खणो वे मा उपच्चगा, खणातीता हि सोचन्ति नरयम्हि सम्पायता ॥१००५॥

उपसन्तो उपरतो मन्तभाणी अनुद्धतो धुनाति पापके धम्मे दुमपत्तं व मालुतो ॥१००६॥ उपसन्तो---प---अब्बहि पापके धम्मे दुमएतं व मालुतो ॥१००७॥ उपसन्तो अनायासो विष्पसन्नमनाविलो कल्याणसीलो मेघावी दुक्वस्सन्तकरो सिया ॥१००८॥ न विस्ससे एकतियेसु एवं अगारिसु पब्बजितेसु चापि; साध् पि हुत्वान असाध् होन्ति, असाधु हुत्वा पुन साधु होन्ति ॥१००९॥ कामच्छन्दो च व्यापादो थीनमिद्धञ्च भिक्लुनो उद्रच्चं विचिकिच्छा च पञ्च ते चित्तकेलिसा ॥१०१०॥ यस्म सक्करियमानस्म असक्कारेन समाधि न विकम्पति अप्पमादविहारिनो ॥१०११॥ तं झायिनं सानतिकं सुखुमदिद्विविपस्सक उपादानक्खयारामं आहू सप्पुरिसो इति ॥१०१२॥ महासमुद्दो पथवी पब्बतो अनिलो पि च उपमाय न युज्जन्ति सत्यु वरिवमुत्तिया ।।१०१३।। चक्कान्वत्तको येरो महाञाणी समाहितो पथवापग्गि समानो न रज्जिति न दुस्यति ॥१०१४॥ पञ्जापारमितं पत्तो महाबुद्धि महामुनि अजळो जळसमानो सदा चरति निब्बुतो ॥१०१५॥ परिचिण्णो मया सत्था ---प-- ।।१०१६।। सम्पादेषप्पमादेन, एसा मे अनुसासनी; हन्दाह परिनिब्बिस्स, विष्यमुत्तो'म्हि सब्बिधीति ॥१०१७॥

सारिप्रतो थेरो

पिसुनेन च कोधनेन मच्छरिना च विभूतिनन्दिना सिंखतं न करेय्य पण्डितो; पापो कापृरिसेन सगमो ।।१०१८।। सद्धेन च पेसलेन च पञ्जावता बहुस्सुतेन च सिंखतं हि करेय्य पण्डितो; भद्दो सप्पुरिसेन संगमो ।।१०१९।। पस्स चित्तकतं विम्बं---प--।।१०२०।।

बहुस्सुतो चित्तकथी बुढस्स प्ररिचारको पन्नभारो विञ्जुत्तो सेय्यं कप्पेति गोतमो ॥१०२१॥ खीणासवो विसञ्जुत्तो सङगातीतो सुनिब्बुतो भारेति अन्तिमं देहं जातिमरणपारगु ॥१०२२॥ यस्मि पतिद्विता धम्मा बुद्धस्सादिच्बबन्धुनो निब्बानगमने मग्गे सो'यं तिद्वति गोतमो ॥१०२३॥ द्वासीति बुद्धतो गण्हि द्वे सहस्सानि भिक्खुतो चतुरासीति सहस्सानि ये'मे धम्मा पर्वात्तनो ॥१०२४॥ अप्पसुत्तो'यं पुरिसो बलिबद्दो व जीरति ', मंसानि तस्स बङ्ग्रन्ति, पञ्जा तस्स न वड्ढिति ॥१०२५॥ बहुस्सुतो अप्पसुतं यो सुतेनाति मञ्जाति, अन्घो पदीपधारो व तथेव पटिभाति मं ॥१०२६॥ बहुस्सुतं उपासेय्य सुतञ्चन विनासये; तं मूलं अद्वाचिरयस्स; तस्मा घम्मधरो सिया गा१०२७॥ पुब्बापरञ्जू अत्थञ्जू निरूत्तिपदकोविदो सुगाहीतञ्च गण्हाति अत्यञ्चोपपरिक्खति ॥१०२८॥ बन्त्या छन्दिकतो होति, उस्सहित्वा तुलेति त, समये सो पदहति अज्झनं सुसमाहितो ॥१०२९॥ बहुस्सुतं धम्मधरं सप्पञ्ञां बुद्धसावकं धम्मविञ्ञाणमाकद्भव तं भजय तथाविध ॥१०३०॥ बहुस्सुतो घम्मधरो कोसारक्लो महेमिनो चक्खु सब्बस्स लोकस्स पूजनेय्यो बहुस्मृतो ॥१०३१॥ धम्मारामो धम्मरतो घम्मं अनुविचिन्तयं धम्मं अनुस्सरं भिक्खु सद्धम्मा न परिहायति ॥१०३२॥ कायमञ्छेरगरुनो हिय्यमाने अनुद्वहे सरीरसुखगिद्धस्य कुतो समणकासुता ॥१०३३॥ न पक्खन्ति दिसा सब्बा, घम्मा न पटिभन्ति मं गते कल्याणमित्तम्हि अन्धकारं व खायति ॥१०३४॥ अब्भतीतसहायस्स अतीतगतसत्युनो नित्थ एनादिसं मित्तं यथा कायगता सित ॥१०३५॥

ये पुराणा अतीता ते, नवेहि न समेति मे, स्वज्ज एको'व झायामि वस्सुपेतोव पक्खिमा ॥१०३६॥ दस्सनाय अतिक्कन्ते नानावेरज्जके बहु मा वारियत्थ सोतारो, पस्सन्तु समयो ममं ॥१०३७॥ दस्सनाय अतिक्कन्ते नाना वेरज्जके पुष् करोति सत्या ओकासं न निवारेति चक्खमा ॥१०३८॥ पण्णवीसति वस्सानि सेखभूतस्स मे सतो न कामसञ्जा उप्पत्जि, पस्त धम्मसूधम्मतं ॥१०३९॥ पण्णवीसति वस्सानि सेखभूतस्स से सतो न दोससञ्जा उपज्जि, पस्स घम्मसुधम्मतं ॥१०४०॥ पण्णवीसति वस्सानि भगवन्तं उपद्राह मेत्तेन कायकम्मेन--मेत्तेन विचकम्मेन---मे---त्तेन मनोकम्मेन छाया व अनपायिनी ॥१०४१॥ बुद्धस्स चद्रकमन्तस्स पिट्टि तो अनुचद्रकमिं, १०४३॥ धम्मे देसियमानिम्ह ञाणं मे उदपज्जय ॥१०४४॥ अह सकरणीयो'म्हि सेखो अप्पत्तमानसो, सत्यु च परिनिब्बान यो अम्हं अनुकम्पको ॥१०४५॥ तदासियं भिसनकं, तदासि लोमहंसनं सब्बाकारवरूपेते सम्बद्धे परिनिब्बुते ॥१०४६॥ बहुस्सुतो धम्मधरो कोसारक्को महेसिनो चक्खु सब्बस्स लोकस्स आनन्दो परिनिब्बुतो ॥१०४७॥ बहुस्सुतो धम्मधरो-प-अन्धकारे तमोनुदो, गतिमन्तो सतीमन्तो धितिमन्तो च यो इसि ॥१०४८॥ सद्धम्माधारको थेरो आनन्दो रतनाकरो ॥१०४९॥ परिचिष्णो मया सत्था--प--।।१०५०।।

श्रानन्दो थेरो

उद्दानं

फुस्सो उपतिस्सो आनन्दो तयो'ति मे पिकत्तिना; गाथायो तत्थ संस्नाना सतं पञ्च च उत्तरीतिः

तिसनिपातो निद्वितो

चत्तालीसनिपातो

न गणेन पुरक्सतो चरे, विमनो होति, समाधि दुल्लभो; नानाजनसगहो दुक्लो इति दिस्वान गणं न रोचये ।। १०५१।। न कुलानि उपब्बजे मुनि, विमनो होति, समाधि दुल्लभो; सो उस्सुको रसानुगिद्धो अत्थं रिञ्चित यो सुखावहो ॥१०५२॥ पड़को 'ति हि जं अवेदयुं यायं वन्दनपूजना कुलेसु, सुखुम सल्लं दुरुब्बहं, सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो ॥१०५३॥ सेनासनम्हा ओरुयुह नगरं पिण्डाय पाविसि, भुज्जन्तं पुरिसं कुट्ठि सक्कच्चं तं उपद्रहि ॥१०५४॥ सो तं पक्केन हत्थेन आलोपं उपनामिय; आलोपं पक्लिपन्तस्स अङगुली पेत्य छिज्जय ॥१०५५॥ कुड्डमूलञ्च निस्साय आलोपन्त अभुञ्जिम, भुञ्जमाने च भत्ते वा जेगुच्छं में न विज्जति ॥१०५६॥ उत्तिद्वपिण्डो आहारो पुतिमत्तञ्च ओसध सेनासनं रुक्खमूलं पसकूलञ्च चीवरं : यस्सेते अभिसम्भुत्वा स वे चातुदिस्सो नरो ॥१०५७॥ यत्थ एके विहञ्जन्ति अरुहन्तो मिलुच्चयं तस्स बुद्धस्स दायादो सम्पजानो पतिस्सतो इद्धिबलेनुपत्थद्धो कस्सपो अभिरूहति ॥१०५८॥ पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुय्ह कस्सपो झायति अनपादानो पहीनभयभेरवो ॥१०५९॥ पिण्डपानपटिक्कन्तो मेलमारुयृह कम्सपो झायति अनपादानो डय्हमानेसु निब्बुतो ॥१०६०॥ पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुयृह कस्सपो झायति अनपादानो कतकिच्चो अनासवो ॥१०६१॥

करेरिमालावितता भूमिभागा मनोरमा कुञ्जराभिरुद्धा रम्मा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६२॥ नीलब्भवण्णा रुचिरा वारिसीता सुचिन्धरा इन्दगोपकसञ्खन्ना ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६३॥ नीलब्भक्टसदिमा कुटागार्वरूपमा बारणाभिरुदा रम्मा ते सेला रमयन्ति म ॥१०६४॥ अभिवट्टा रम्मतला नगा इसिभि सेविता अब्भुन्नदिता सिखीहि ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६५॥ अलं शायितकामस्स पहितत्तस्स मे सतो, अलं मे अत्यकामस्स पहितत्तस्स भिक्खुनी; ॥१०६६॥ अल में फासुकामस्स पहितत्तस्स भिक्खुनो; अल में योगकामस्स पहिनत्तस्स तादिनो ॥१०६७॥ उम्मापुष्फवसमाना गगना वब्भछादिता नाना दिजगणाकिण्णा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६८॥ अनाकिण्णा गहट्ठेहि मिगसंघनिसेविता नानादिजगणाकिण्णा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६९॥ अच्छोदिका (---११३, ६०१) ॥१०७०॥ न पञ्चअगिकेन तुरियेन रति मे होति तादिसी यथा एकग्गचित्तस्स सम्मा धम्म विपत्सतो ॥१०७१॥ कम्मं बहक (=४९४) ॥१०७२॥ कम्मं बहक न कारये, परिवज्जेय्य अनत्थनेय्यमेतं किच्छति कायो किलमति, दुक्खितो सो समथ न विन्दति ॥१०७३॥ ओट्रपहतमत्तेन अत्तानं पि न पस्सति, पत्थद्भगीवो चरति, अहं सेय्यो 'ति मञ्जाति ॥१०७४॥ असेय्यो सेय्यसमानं बालो मञ्जाति अत्तानं. न तं विञ्ञा पसंसन्ति पत्यद्धमनसं नरं ॥१०७५॥ यो च सेय्यो 'हं अस्मीति, नाहं सेय्यो 'ति वा पुन, हीनो 'हं सदिसो वा 'ति विघास न विकम्पति ॥१०७६॥ पञ्ञावन्तं तथावादि सीलेसु सुसमाहितं चेतो समयसंयुत्तं तञ्च विञ्ञा पसंसरे ॥१०७७॥ यस्स सब्बह्मचारीस् गारवो न्पलब्भति, आरका होति सद्धम्मा नभसो पुथवी यथा ॥१०७८॥

येसञ्च हिरिओत्तप्यं सदा सम्मा उपद्वितं, विश्ळुहब्रह्मचरिया, तेसं खीणा पुनब्भवा ॥१०७९॥ उद्धतो चपलो भिक्ख पंसूक्लेन पारतो कपि व सीहचम्मेन न सो तेन्पसोभित ॥१०८०॥ अनुद्धतो अचपलो निपको संवृतिन्द्रियो सोभति पंसुकुलेन सीहो व गिरिगब्भरे ॥१०८१॥ एते सम्बहुला देवा इद्धिमन्तो यसस्सिनो दस देवसहस्सानि सब्बे ते ब्रह्मकायिका ॥१०८२॥ धम्मसेनापति धीरं महाझायि समाहितं सारिपुत्तं नमस्सन्ता तिद्रन्ती पञ्जलीकता ॥१०८३॥ नमो ते पुरिस्साजञ्जा, नमो ते पुरिसूत्तम, यस्स ते नाभिजानाम य पि निस्साय झायति ॥१०८४॥ अच्छेरं वत बुद्धानं गम्भीरो गोचरो सको, ये मयं नाभिजानाम वालवेधी समागता ॥१०८५॥ तं तथा देवकायेहि पूजितं पूजनारहं सारिपुत्तं तदा दिस्वा कप्पिनस्स सितं अह ॥१०८६॥ यावता बुद्धखेत्तम्हि ठापयित्वा महामुनि षुतगणे विसिद्ठो 'हं सदिसो मे न विज्जति ॥१०८७॥ परिचिण्णो मया सत्था--प--।।१०८८।। न बोबरे न सयने भोजने नुपलिप्पति गोतमो अनप्पमेय्यो मुळालिपूप्पं विमलं व अम्बना निक्खम्मनिन्नो तिभवाभिनिस्सटो ।।१०८९।। सतिपद्भानगीवो सो सद्धाहत्थो महाम्नि पञ्जासीसो महाञ्चाणी सदा चरति निब्बतो 'ति ॥१०९०॥

महाकस्सपो थेरो

उद्दानं

चतालीस निपातम्हि महाकस्सपसव्हयो एको 'व थेरो, गाथायो चत्तालीस दुवे 'पि चा 'ति **चतालीसनिपासो निद्दितो**

पञ्जासनिपातो

कदा नु 'हं पञ्चतकन्दरासु एकाकियो अद्दुतियो विहस्सं अनिच्चतो सब्बभवं विपस्सं, तं मे इदं तं नु कदा भविस्सिति ॥१०९१॥ कदा नु 'हं भिन्नपटन्घरो मुनि कासाववत्थो अममो निरासयो रागञ्च दोसञ्च तथेव मोहं हन्त्वा सुखी पवनगतो विहस्सं ॥१०९२॥ कदा अनिच्चं वधरोगनीळं कायं इमं मच्चुजरायुपद्दुतं विषस्समानी वीतभयो विहस्सं एको वने तं नु कदा भविस्सति ॥१०९३॥ कदा नु हैं भयजनिन दुक्खावहं तण्हालतं बहुविधानुवस्ति पञ्ञामयं तिखिणमीस गहेत्वा छेत्वा वसे, तम्पि कदा भविस्सति ॥१०९४॥ कदा नु पञ्जामयमुग्गतेजं सत्तं इसीनं सहसादियित्वा मारं ससेनं सहसा भिञ्जस्सं सीहासने, तं नु कदा भिवस्सिति ॥१०९५॥ कदा नु 'हं सब्भि समागमेसु दिट्ठो भवे घम्मगरूहि तादिहि यथा वदस्सीहि जितिन्द्रियेहि पघानियो तं नुकदा भविस्सति ॥१०९६॥ कदा न मं तन्द्रिखुदापिपासा वातातपा कीटसिरिसपा वा निबाधियस्सन्ति न तं गिरिब्बजे अत्तत्थियं, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९७॥ कदा नु स्त्रो यं विदितं महेसिना चत्तारि सच्चानि सुदुद्स्सानि समाहितत्तो सतिमा अगच्छं पञ्जाय तं, तं नुकदा भविस्सति ॥१०९८॥ कदा नुरूपे अमिते च सद्देगन्धे रसे फुसितब्बे च धम्मे आदित्ततो 'हं समथेहि युत्तो पञ्जाय दुक्खं, तदिदं कदा मे ॥१०९९॥ कदा नु 'हं दुब्बचनेन वुत्तो ततो निमित्तं विमनो न हेस्सं, अयो पसट्ठो पि ततो निमित्तं तुट्ठो न हेस्सं, तदिदं कदा मे ॥११००॥ कदा नु कट्ठे च तिणे लता च खन्धे इमे 'हं अभिते च धम्मे अज्ञात्तिकानेव च बाहिरानि च समं तुलेय्यं तदिदं कदा में ।।११०१।। कदा नुमं पावुसकालमेघो नवेन तोयेन सचीवरं वने इसिप्पयातम्हि पथे वजन्तं ओवस्सते, तं नु कदा भविस्सति ॥११०२॥

कदा मयूरस्स सिल्पण्डिनो वने दिजस्स सुत्वा गिरिगब्भरे रुतं पच्चुट्टहित्वा अमतस्स पट्टिया संचिन्तये, तं नु कदा भविस्सति ॥११०३॥ कदा नु गद्भगं यमुनं सरस्सति पातालखित्तं बळवामुखञ्च असज्जमानो पतरेय्यमिद्धिया विभिसनं, तं नु कदा भविस्सति ॥११०४॥ कदा नु नागो व संगामचारी पदालये कामगुणेसु छन्दं निब्बज्जयं सब्बसुभं निमित्तं झाने युतो, तं नु कदा भविस्सति ॥११०५॥ कदा इणट्टो व दळिह्को निभि आराधयित्वा धनिकेहि पीळितो तुट्ठो भविस्सं अधिगम्म सासनं महेसिनो, तं नु कदा भविस्सति ॥११०६॥ बहूनि वस्सानि तयाम्हि याचितो अगारवासेन अल नु ते इदं; तं दानि मं पब्बजितं समान किं कारणं चित्तं तुवं न युञ्जिस ॥११०७॥ ननु अहं चित्त तयाम्हि याचितो गिरिब्बजे चित्रछदा विहङ्गमा महिन्दघोसत्यनिताभिगज्जिनो ते तं रिमस्सन्ति वनम्हि झायिनं ॥११०८॥ कुलिम्ह मित्ते च पिये च ञातके खिड्डारित कामगुणञ्च लोके सब्बं पहाय इदमज्झुपागतो, अयो पि त्वं चित्त न मय्ह तुस्सिस ॥११०९॥ ममेव एतं नहि तं परेसं, सन्नाहकाले परिदेवितेन कि सब्बमिदं चलं इति पेक्लमानो अभिनिक्लीम अमतं पदं जिगीसं ।।१११०॥ सुवुत्तवादी द्विपदानमुत्तमो महाभिसक्को नरदम्मसारिथ चित्तं चलं मक्कटसिन्नभं इति अवीतरागेन सुदुन्निवारियं ॥११११॥ कामाहि चित्रा मधुरा मनोरमा अविद्यु यत्य सिता पृथुज्जना ते दुक्खमिच्छन्ति पुनब्भवेसिनो चित्तेन नीता निरये निरंकता ॥१११२॥ मयूरकोञ्चाभिरुदम्हि कानने दीवीहि ब्यग्बेहि पुरक्खतो वसं कार्ये अपेक्खं जह मा विराये इतिस्सु मं चित्तपुरे नियुञ्ञासि ॥१११३॥ भावेहि झानानि च इन्द्रियानि च बालानि बोज्झङ्गसगाधिभावना तिस्सो च विज्जा फुस बुद्धसासने इतिस्सु मं चित्त पुरे नियुञ्जिस ॥१११४॥ भावेहि मग्गं अमतस्स पत्तिया निय्यानिकं सब्बदुक्खखयोगधं अत्यद्भगिकं सब्बिकलेससोधनं इति स्यु...॥१११५॥ दुक्खन्ति खन्धे पटिपस्स योनिसो, यतो च दुक्खं समुदेति तं जह, इघेव दुक्खस्स करोहि अन्तं इति स्सू ...।।१११६॥ **अनिच्चं दुक्खन्ति विपस्स योनिसो सुरुञं अनत्ता 'ति अधं वधन्ति च,** मनोविचारे उपरुन्धि चेतसो, इति स्सु ...।।१११७।। मुण्डो विरूपो अभिसापमागतो कपालहत्थो 'व कुलेसु भिक्खसु, ं ंयुञ्जस्सु सत्थु वचने महेसिनो, इति स्सु ...।।१११८।।

सुसंव्तत्तो विसिखन्तरं चर कुलेसु कामेसु असङगमानसो चन्दो यथा दोसिनपुण्णमासिया इति म्सु ...॥१११९॥ आरञ्जिको होति च पिण्डपातिको, मोसानिको होति च पंसुकूलिको, नेसज्जिको होति सदा धुते रतो इति स्यु . . . ॥११२०॥ रोपेत्वा रक्खानि यथा फलेसी मूले तरुं छेत् तमेव इच्छसि, तथूपमं चित्त इदं करोसि यं मं अनिच्चम्हि चले नियुञ्जसि ॥११२१॥ अरूपदूरंगम एकचारि न ते करिस्सं बचनं इदानि 'ह, दुक्खा हि कामा कटुका महब्भया, निब्बानमेवाभिमनो चरिस्स ।।११२२।। नाहं अलक्ल्या अहिराकताय वा न चित्त हेतू न च दूरकन्तना आजीवहेतू च अहं न निक्खाम, कतो च ते चित्त पटिस्सवो मया ॥११२३॥ अप्पिच्छता सप्पृरिसेहि विणिता मक्खप्पहान बूपसमी दुक्खस्स इति स्सु मं चित्त तदा नियुञ्जसि, इदानि त्व गच्छिसि पुब्बचिष्ण ॥११२४॥ तण्हं अविज्जञ्च पियापियञ्च मुभानि रूपानि सुखा च वेदना मनापिया कामगुणा च वन्ता, वन्ते अह आगमितु न उस्सहे ॥११२५॥ सब्बत्थ ते चित्त वची कतं मया, बहूसु जातिसु न मे 'सि कोपितो अज्झत्तसम्भवो कतञ्ञाताय ते, दुक्खे चिरं सर्सारत तया करे ॥११२६॥ त्वञ्ञोव नो चित्त करोसि ब्राह्मणो त्व खत्तिया राजदिसी करोसि, वेस्सा च सुद्दा च भवाम एकदा, देवत्तनं वापि तवेव वाहसा ॥११२७॥ तवेव हेतू असुरा भवामसे, त्वंमूलकं नेरियका भवामसे, अथो तिरच्छानगतापि एकदा, पेतत्तनं वापि तवेव वाहसा ।।११२८।। न नून दुब्भिस्सिस म पुनप्पुनं मुहु मुहु वारणिकं व दस्सहं; उम्मत्तकेनेव मया पलोभिसः; किञ्चापि ते चित्त विराधित मया ॥११२९॥ इदं पुरे..... (=७७) ॥११३०॥ सत्या च मे लोकिमम अधिद्रहि अनिच्चतो अद्भुवतो असारतो; पक्खन्द म चित्त जिनस्स सासने, तारेहि ओघा महती सुदुत्तरा ॥११३१॥ न ते इदं चित्त यथा पुराणकं, नाह अलं तुय्ह वसे निवत्तितुं; महेसितो पब्बजितो 'म्हि सासने, न मादिसा होन्ति विनासधारिनो ॥११३२॥ नगा समुद्दा सरिता वसुन्धरा दिसा चतस्सा विदिसा अधोदिसा सब्बे अनिच्चा तिभवा उपद्दुता, कृहि गतो चित्त सुखं र्रामस्ससि ॥११३३॥ धी धी परं कि मम चित्त काहसि, न ते अल चित्त वसानुवत्तको न जातु भस्तं दुभतो मुखं छुपे, धिरत्थु पूरं नवसोतसन्दिन ॥११३४॥

वराहणेय्यविगाळ्हसेविते पन्भारकूटे पकटे 'व सुन्दरे नवम्बुना पावुसिसत्तकानने तर्हि गुहा गेहगतो रिमस्सिस ॥११३५॥ सुनीलगीवा सुसिखा सुपेखुणा सुचित्तपत्तच्छदना विहंगमा सुमञ्जुषोसत्य निताभिगज्जिनो ते तं रिमस्सन्ति वनम्हि झायिनं ॥११३६॥ उट्टम्हि देवे चतुरङगुले तिणे सम्पुष्फिते मेघनिभम्हि कानने नगन्तरे विटिपसमो सियस्सं, तं मे मुदु होहिति तूलसिन्नभ ॥११३७॥ तथा तु कस्सामि यथापि इस्सरो; यं लब्भती तेन पि होतु में अलं; तं त करिस्सामि यथा अतन्दितो बिळारभस्तं व यथा सुमह्तिं ॥११३८॥ तथा तु कस्सामि यथापि इस्सरो, यं लब्भती तेन पि होतु मे अलं विरियेन त मय्ह वसानयिस्सं गजं व मत्तं कुसलंडकुसग्गहो ॥११३९॥ तया सुदन्तेन अवद्वितेन हि हयेन योग्गाचरियो व उज्जुना पहोमि मग्गं पटिपज्जित् सिव चित्तानुरक्लीहि सदानुसेवितं ॥११४०॥ आरम्मणे त बलसा निबन्धिसं नागं व थम्भिम्ह दळ्हाय रज्जुया, तं में सु गुत्त सतिया सुभावितं अनिस्मित सब्बभवेसु हेहिसि ॥११४१॥ पञ्ञाय छेत्वा विषथानुसारिनं योगेन निगय्ह पथे निवेसिय दिस्वा समुदयं विभवञ्च सम्भवं दायादको हेहिसि अग्गवादिनो ॥११४२॥ चतुब्बिपल्लासवस अधिद्वितं गामण्डलं व परिनेसि चित्त म नन् सङ्जोजनबन्धनच्छिदं संसेवसे कारुणिक महाम्नि ॥११४३॥ मिगो यथा सेरि सुचित्तकानेन रम्मं गिरि पाविसि अब्भमालिन, अनाकुले तत्थ नगे रिमस्ससि, असमयं चित्तपराभविस्सिस ॥११४४॥ ये तुय्ह छन्देन वसेन वित्तिनो नरा च नारी च अनुभोन्ति यं सुखं, अविद्दसू मारवसानुवत्तिनो भवाभिनन्दी तव चित्त सेवका 'ति ॥११४५॥

तालपुटो येरो

उद्दानं

पञ्ञासिम्ह निपातिम्ह एको तालपुटो सुचि, गायायो तत्थ पञ्ञास पुन पञ्च च उत्तरी'ति।

पञ्जासनिपातो समत्तो

सहिकनिपाती

आरञ्जाका पिण्डपातिका उञ्छापत्तागतेरता दालेमु भच्चुनो सेनं अज्झत्तं सुसमाहिता ॥११४६॥ आरञ्जाका पिण्डपानिका उञ्छापत्तागतेरता धुनाम मच्चुनो सेनं नळागारं व कुञ्जरो ॥११४७॥ रुक्षमूलिका सातिनका उज्छापनागते रता दालेम् सुसमाहिता ॥११४८॥ रुक्खमूलिका . .सान उञ्छ र धुनाम. कुञ्जरो ॥११४९॥ अद्विकञ्चलकृटिको मंसन्हारूपसिब्बिन धिरत्थु पूरे दुग्गन्धं परगत्ते ममायसे ॥११५०॥ गूथभस्ते तचोन है उरगण्डिपसाचिनि नन सोतानि ने काये यानि सन्दित सञ्बदा ।।११५१।। तव सरीरं नवसोतं दुग्गन्धं कार्पिरबन्ध, भिस्कुर्गरवज्ज्येते तं मीळ्ड् व यथा स्चिकामो ॥११५२॥ एवञ्चे त जनो ञञ्जा यथा जानामि तं अहं, आरका परिवज्जेय्य गृथद्वानं व पावुमो ।।११५३।। एवमेतं महावीर यथा समण भासिस, एत्धचेके विसीदन्ति पद्धकम्हि व जरगावो ॥११५४॥ आकासम्हि हलिद्दाय यो मञ्ञोध रजेतवे अञ्जोन वापि रङ्गेन, विघातुदयमेव त ॥११५५॥ तदा काससमं चित्तं अज्ञत्त सुसमाहित, मा पापचित्ते आहरि अग्गिक्खन्धं व पक्लिमा ॥११५६॥ पस्स चित्तकतं बिम्बम्---प---।।११५७।। तदासिय भिसनकं, तदासि लोमहसनं अनेकाकारसम्पन्ने सारिपुत्तम्हि निब्बुते ।।११५८।।

अनिच्चा वत संखारा—प—॥११५९॥ मुख्मं पटिविज्झन्ति वालग्गमुसुना यथा, ये पञ्च खन्धे पस्सन्ति परतो न च अत्तनो ॥११६०॥ ये च परसन्ति संखारे परतो न च अत्तनो, पञ्चब्याधिसु निपुणं वालग्गं उसुना यथा ॥११६१॥ सत्तिया विय ओमट्ठो . . . (---३९, ४०,) ॥११६२-११६३॥ चोदितो भावितत्तेन सरीरन्तिमधारिना मिगारमातु पासादं पादझगुट्ठेन कम्पीय ॥११६४॥ न यिदं सिथिलमारब्भ न इद अप्पेन थामसा निब्बानमधिगन्तब्ब सब्बगन्थ पमोचन ॥११६५॥ अयञ्च दहरो भिक्लु, अयमुत्तमपोरिसो । धारेति अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनं ॥११६६॥ विवरमनुपतन्ति विज्जुता वेभारम्स च पण्डवस्स च । नग विवरगतो च झायति पुत्तो अपिटिमस्स नादिनो ॥११६७॥ उपसन्तो उपरतो पन्तसेनासनो मुनि । दायादो बुद्धसेट्टस्स ब्रह्मना अभिवन्दितो ॥११६८॥ उपसन्तं उपरतं पन्तसेनासनं मुनि । दायाद बुद्धसेट्ठस्स वन्द बाह्मण कस्सप ॥११६९॥ यो च जातिसत गच्छे सब्बा ब्राह्मणजानियो। मोत्तियो वेदसम्पन्नो मनुस्सेसु पुनप्पुन ॥११७०॥ अज्झायको पि चे अम्स तिण्णं वेदान पारगू। एतस्स बन्दानायेकं कल नम्बति मोळीम ॥११७१॥ यो सो अट्ट विमोक्खानि पूरे भत्त अपस्मिय । अनुलोम पटिलोमं, ततो पिण्डाय गच्छति ॥११७२॥ तादिस भिक्त् माहरि, मात्तान खणि ब्राह्मण । अभिप्यसादेहि मन अरहन्तम्हि तादिने । बिप्पं पञ्जिलिको वन्द मा ते विजिटि मत्थकं ॥११७३॥ न सो पस्सति सद्धमं मंसारेन पुरक्लतो । अचङकनं जिम्हपयं कुमग्गमनुधावति ॥११७४॥ कामी व माळ्हसल्लित्तो संखारे अधिमुच्छितो । पगाळ्हो लाभसक्कारे तुच्छो गच्छति पोड्रिलो ॥११७५॥

इमञ्च पस्स आयन्तं सारिपुत्तं सुदस्सं । विमुत्तं उभतोभागे अज्झत्तं सुसमाहित ॥११७६॥ विसल्लं खीणसंयोगं ते विज्जं मच्चुहायिनं । दक्खिणेय्यं मनुस्सानं पुञ्जाखेत्तमनुत्तर ॥११७७॥ एते सम्बहुला देवा इद्धिमन्तो यसस्मिनो । दस देवसहम्सानि सब्बे ब्रह्मपुरोहिता । मोग्गल्लानं नमस्सन्ता तिट्ठन्ती पञ्जलीकताः ॥११७८॥ नमो ते पुरिसाजञ्जा, नमो ते पुरिमुत्तम । यस्स ते आसवा खीाण, दक्क्षिणेय्यो 'सि मारिम ॥११७९॥ पूजितो नरदेवेन उपन्नो मरणाभिभ्। पुण्डरीक व तोयेन सखारे नोपलिप्पति ॥११८०॥ यस्से मुहुने सहस्मधा लोको संविदितो, स ब्रह्मकण्गो । वसी इद्धिगुणे चुतूपपाते काले पस्सिन देवता स भिक्ख ॥११८१॥ सारिपुत्तो व पञ्जाय सीलेन उपसमेन च । यो पि पारंगनो भिक्खु एनावपरमो सिया ।।११८२।। कोटिसतसहस्सस्य अत्तभावं खणेन निम्मिने । अह विकुब्बनामु कुमलो वसीधृतो 'म्हि इद्विया ॥११८३॥ समाधिविज्जावसि पारमीगनो मोगगल्लानगोत्तो असितस्स सासने । घीरो समुच्छिन्दि समाहितिन्द्रियो नागो । यथा पुतिलत व बन्धन ॥११८४॥ परिचिण्णो . . . (---६०४, ६०५) ।।११८५-११८६॥ कीदिसो निरयो आसि यत्थ दुस्सी अपच्चथ । विधुर सावकमासज्ज ककुसन्धञ्च ब्राह्मणं, ११८७॥ सतमासि अयोसङकु सब्बे पञ्चत्तवेदना ईदिमो निरयो आसि यत्य दुस्सी अपच्चथ विधुरं सावकमामज्ज ककुसन्धञ्च ब्राह्मण ॥११८८॥ यो एतमभिजानानि भिक्क बुद्धस्य सावको, तादिमं भिक्खुमासज्ज कण्ह दुक्ख निगच्छिस ॥११८९॥ मज्झे सागरस्मि तिट्ठन्ति विमाना कप्पट्रायिनो वेळुरियवण्णा रुचिरा अञ्चिमन्तो पभस्मरा अच्छरा तत्थ नच्चन्ति पुथू नानत्तविष्णयो, ॥११९०॥ यो एतमभि--प-कण्ह दुक्ख निगच्छसि ।।११९१।।

यो वे बुद्धेन चौदितो भिक्ख संघरस पेश्वतो मिगारमातु पासादं पादङगुट्ठेन कम्पयि ॥११९२॥ यो एतमभि ...।।११९३।। यो वेजयन्तपासादं पादङगट्ठेन कम्पयि इद्धिवलेन्पत्थद्धो सवेञोसि च देवता ॥११९४॥ यो एतमभि० ॥११९५॥ यो वेजयन्त पासादे सुखं सो परिपुच्छति. अपि आवुसो जानासि तण्हक्खयविमुत्तियो; — तस्स सक्को वियाकासि पञ्ह पुट्ठो यथातथ ॥११९६॥ यो एतमभि०।।११९७॥ यो ब्रह्मानं परिपुच्छति सुधम्माय अभिनोसभ अज्जापि ते आवुमो सा दिद्वि या ते दिद्वि पुरे अह, पस्ससि वीति वत्तन्त ब्रह्मलोको पभस्सर, ॥११९८॥ तस्स ब्रह्मा वियाकामि पञ्हं पुर्ठो यथातथं न मे मारिस सदिड्डिया मे दिद्वि पूरे अह, ॥११९९॥ पस्सामि वीतिवत्तन्त ब्रह्मलोके पभस्सर; सो'हमज्ज कथ वज्जं. अह निच्चो 'म्हि सामतो, --१२००॥ यो एतमभि०..।१२०१॥ यो महानेरुनो कुट विमोक्लेन उपस्सिय, वनं पुब्बविदाहान ये च भ्मिसयारना,---१२०२॥ यो एतमभि०. . ॥१२०३॥ नं वे अभिग चेतयति अह बाल दहामीति, बालो च जलितमस्मि आसज्ज नं पडयुर्हात, गा१२०४॥ एवमेव तुव मार आसज्ज नं तथागत सय दहिस्समत्तानं बालो अग्गि व सम्फूमं ॥१२०५॥ अपुञ्ञ फसवी मारो आसज्ज नं तथागं; कि नुमञ्ज्ञासि पापि म न से पापं विषच्चति ॥१२०६॥ करतो ते मिय्यते पाप चिररनाय अन्तक, भार निब्बिन्द बुद्धम्हा, आस मा कासि भिक्ष्वस ॥१२०७॥ इति मारं अतज्जेसि भिक्ख भेसकळावने, ततो सो दुम्मनो यक्सो तथेव अन्तरधायतीति ।।१२०८।। इत्य मुदं आयस्मा महामोग्गल्लानो थेरो गाथायो अभासित्थीति

उद्दानं भवतिः

सिंदुकम्हि निपातिम्हि मोग्गलानो बहिद्धिको एको 'व थेरो, गाथायो अट्टमिंद्व भवन्ति ता 'ति

महानिपातो

निक्खन्तं वतः मं सन्तं अगारस्मा अनगारियं वितक्का उपधावन्ति पगब्भा कण्ह्तो इगेः ॥१२०९॥ उग्गपुत्ता महिस्सासा सिक्खिता दङ्हधम्मिनो समन्ता परिकिरेय्युं सपस्स अपलायिनं ।।१२१०।। सचे पि एत्तका भिय्यो आगमिस्मन्ति इत्थियो, नेव म ब्याधियम्सन्ति धम्मे स्विम्ह पतिद्वितो ॥१२११॥ स किहि मे मुतं एतं बुद्धस्मादिच्च बन्धुनो निब्बानगमन मग्ग, तत्थ में निरतो मनो ॥१२१२॥ एवमेवं विहरन्त पापिम उपगच्छिस, तथा मच्च करिस्सामिः न मे मग्गं उदिस्वसि ॥१२१३॥ अरिंत रित च पहाय सब्बसो गेहसितञ्च त्रितक्क वनथं न करेय्य कृहिञ्चि, निब्बनथा अवनथो स हि भिक्खु ॥१२१४॥ यमिध पथविञ्च विहास रूपगत जगतोगध किञ्चि, परिजिय्यति सब्बमनिच्च एवं समेच्च चरन्ति मुत्तन्ता ॥१२१५॥ उपधीसु जना गथिनासे दिट्ट मुते पटिधे च मुते च, एत्य विनोदय छन्दमनेजो, यो हेत्य न लिप्पति मुनि तमाहु ॥१२१६॥ अटु सद्वि सिका सवितनका पुथुज्जनताय अधम्मनिविद्वा, न च वग्गगतिस्स कुहिञ्चि, नु पन पदुम्लगाही स भिक्खु ॥१२१ ॥। दब्बो चिररत्तं समाहितो अकुहको निपको अपिहालु सन्तं पदमञ्ञाहगमा मुनि, पटिच्च परिनिब्बुनो कह्विति कालं ॥१२१८॥ मानं पजहस्मु गोतम मानपथञ्च जहस्सु असेग; मानपथं हि समुच्छितो विप्पटिसारी हुत्वा चिररतं ॥१२१९॥ मक्खेन मविखता पजा मानहता निरयं पतन्ति, सोचन्ति जना चिररत्तं मानहता निरयं उपपन्ना ॥१२२०॥

न हि सोचिति भिक्षु कदाचि मग्गजिनो सम्मा पटिपन्नो, कित्तिञ्च सुखञ्चानुभोति, घम्मदसो'ति तमाहु तयतं ।।१२२१॥ तस्मा अखिलो इधममानवा निवरणानि पहाय विस्द्धो मानञ्च पहाय असेसं विज्जायन्तकरो समितावी ॥१२२२॥ कमरागेन डय्हामि. चित्त मे परिडय्हति, साधु निब्बापनं बृहि अनुकम्पाय गोतम ॥१२२३॥ सञ्जाय विपरियेसा चित्तन्ते परिडयुहति; निमित्तं परिवज्जेहि सुभं रागूप संहितं ॥१२२४॥ असुभाय चित्तं भावेहि एकमां सुसमाहितं, सतिकायगता त्यत्थु निब्बिदा बहुलो भव ।।१२२५।। अनिमित्तञ्च भावेहि, मानानुसयमुज्जह, ततो मानाभिसमया उपसन्तो चरिस्ससि ॥१२२६॥ तमेव वाच भासेय्य, यायत्थान न तापये परे चन बिहिसेय्य, सावे वाचा मुभासिता ॥१२२७॥ पियवाचमेव भासेय्य या वाचा पटिनन्दिता यं अनादाय पापानि परेस भासते पियं ॥१२२८॥ सच्चं वे अमता वाचा एसन धम्मो सनन्तनो; सच्चे अत्थे च धम्मे च आहु सन्तो पतिद्विता ॥१२२९॥ यं बुडो भासती वाच खेम निब्बानपत्तिया दुक्ष्वस्सन्तर्किरियाय, स वे वाचानमुत्तमा ।।१२३०।। गम्भीरपञ्जो मेधावी मग्गामग्गस्स कोविदो सारिपुत्तो महापञ्जो धम देसेति भिक्ख्नं ॥१२३१॥ संखितेन पि देमेति वित्थारेन पि भासति, सीलिकायेव निग्घोसो पटिभान उदीव्यति ॥१२३२॥ तस्स तं देसयन्तस्स सुणन्ता मध्रं गिर सरेन राजनीयेन सवनीयेन वग्गुना उदग्गचित्ता मुदिता सोतं ओधेन्ति भिक्खवो ॥१२३३॥ अज्ज पन्नरसे विसुद्धिया भिक्खू पञ्चसता समागता संयोजन बन्ध निच्छदा अनीघा खीणपुनब्भवा इसी ॥१२३४॥ चक्कवत्ती यथा राजा अमच्च परिवारितो समन्ता अनुपरियेति सागरन्तं महिं इमं ॥१२३५॥

एवं विजितसगामं सत्थवाहं अनुत्तरं सावका पयिरुपासन्ति ते विज्जा मच्चु हायिनो ॥१२३६॥ सब्बे भगवतो पुत्तो, पलापो एत्थ न विज्जित; तण्हा सल्लस्स हन्तारं वन्दे आदिच्चबन्धुनं ॥१२३७॥ परोसहस्सं भिक्खनं सुगतं पयिरुपासति देसेन्त विरजं धम्मं निब्बानं अवृतोभयं ॥१२३८॥ सुणन्ति धम्मं विपुलं सम्मासम्बुद्धदेसितं; सोभित वत सम्बुद्धो भिक्ख् संघपुरक्कतो ॥१२३९॥ नागनामो'सि भगवा, इसीनं इसि सत्तमो. महामेघो व हत्वान सावके अभिवस्ससि ।।१२४०।। दिवा विहारा निक्खमा सत्युदस्सनकम्यता सावको ते महावीर पादे वन्दति विक्रिगसो ॥१२४१॥ उम्मग्गपथं मारस्स अभिभुय्य चरति पभिज्ज खिलानि, तं पस्सथ बन्धन पम्ञचकरं असितं व भागसो पविभज्ज ।।१२४२।। ओघस्सिहि नित्यरणत्थं अनेक विहितं मग्गं अक्खासि, तस्मिञ्च अमते अक्खाते धम्मदसाठिता असंहीरा ॥१२४३॥ पुण्जोतकरो अतिविज्ञ सब्बद्वितान मतिककममद्दा, ञात्वा च सच्छिकत्वा च अग्गं सो देसिय दसद्धान ॥१२४४॥ एवं सुदेसिते धम्मे को पमादो विजानतं धम्मं, तस्माहि तस्स भगवतो सासने अप्पमत्तो सदा नमस्स मनुसिक्खे ।।१२४५।। बुढ़ानुबुद्धो यो थेरो कोण्डञ्जो तिब्बनिक्खमो, लाभी सुख विहारानं विवेकानं अभिण्हसो ॥१२८६॥ यं सावकेन पत्तब्वं सत्यसासनकारिना, सब्बस्स तं अनुप्पनं अप्पमत्तस्स सिक्खतो ॥१२४७॥ महानुभावो ते विज्जो चेतो परियकोविदो कोण्डञ्जो बुद्धदायादो पादे वन्दति सत्धुनो ॥१२४८॥ नागस्स पस्से आसीनं मुनि दुक्खस्स पारग्ं सावका परियुपासन्ति ते विज्जा मच्चुहायिनो ॥१२४९॥ चेतसा अनुपरियेति मोग्गलानी महिद्धिको चित्तं नेसं समन्वेसं विष्यमुत्तं निरूपिष ॥१२५०॥

एवं सब्बद्धगसम्पन्नं मृति दुक्खस्स पारगुं अनेकारसम्पन्नं पयिरूपासन्ति गोतमं ॥१२५१॥ चन्दो यथा विगतवलाहके नभे विरोचति, वीतमलो व भानुमा, एवस्पि अझगीरसत्वं महाम्नि, अतिरोचिस यससा सब्बलोकं ॥१२५२॥ कावेय्यमत्ता विचरिम्ह पुब्बे गामा गामं पुरा पुरं, अथद् सामि सम्बुद्धं सब्ब धम्मान पारगु ॥१२५३॥ सो मे धम्म मदेदेसि मुनि दुक्खस्स पारगुं; धम्मं सुत्वा पसीदिम्ह, सद्धा नो उदपञ्जथ ॥१२५४॥ तस्साहं वचनं सुन्वा खन्धे आयतनानि च धारुयो च विदित्वा न पन्बींज अनगारियं ॥१२५५॥ बहूनं वत अत्थाय उप्पज्जन्ति तथागता इत्थीनं पुरिसानञ्च ये ते सासनकारका ।।१२५६॥ तेस खो वत अत्थाय बोधि अज्झगमा मुनि . भिक्खूनं भिक्खुनीनञ्च ये नियामगतंदसा ॥१२५७॥ सुदीसता चक्लुमता बुद्धेनादिच्चबन्धुना चत्तारि अरियसच्चानि अनुकम्पाय पाणिनं ॥१२५८॥ दुक्लं दुक्लसमुप्पादं दुक्लस्स च अतिवकमं अरियट्व डिलाकं मर्ग्ग दुक्खूपसम गामिनं ॥१२५९॥ एवमेते तथा वृत्ता, दिट्ठा मेते यथा तथा; सदत्थो में अनुष्पत्तो, कतं बुद्धस्स सासनं ॥१२६०॥ स्वागतं वत मे आसि मम बुद्धस्स सन्तिके; सम्बिभत्तेसु धम्मेसु य सेट्टं तदुपार्गाम ॥१२६१॥ अभिज्ञापार मिष्पत्ती सोतधार विसोधितो ते विज्जो इद्धिप्पत्तो'म्हि चेतो परियकोविदो ॥१२६२॥ पुच्छामि सत्थारमनो मपञ्ञां दिट्ठेव भ्रम्मे यो विचिकिच्छानं छेत्वा. अगाळवे कालमकासि भिक्षु जाती यसस्सी अभिनिब्बुतत्तो ॥१२६३॥

निग्रोधअप्पो इति तस्स नामं तया कतं भगवा ब्रह्मणस्स, सोतं नमस्सं अचरि मृत्य पेक्लो आरद्धविरियो दळ्हधम्मदस्सी ॥१२६४॥ तं सावकं सक्कमयम्पि सब्बे अञ्जातुनिच्छाम समन्त चक्छः समवद्विता नो सवनाय सोत, तुवं नु सत्था त्वमनुत्तरो'सि ।।१२६५।। छिन्देव नो विचिकिच्छ, ब्रुहि मे तं, परिनिब्बुत वेदय भूरिपञ्ञा मज्झेव नो भास समन्तचक्ख सक्को व देवान सहस्सनुत्तो ॥१२६६॥ ये केचि गन्धा इध मोहमग्गा अञ्जाणपक्या विचिकिच्छट्राना, तथागतं पत्वा न ते भवन्ति, चक्खम्हि एतं परम नरानं ॥१२६७॥ न चेहि ञातू पूरिसो किलेसे वातो यथा अब्भघनं विहाने, तमो वस्स निब्बतो सब्बलोके, जोतिमन्तो पि न पभासेय्यु ॥१२६८॥ धीरा च पञ्जोतकरा भवन्ति, तं तं अह धीर तथेव बञ्जो. विपस्सिनं जानम्पापगिमम्ह, परिसाय नो अविरोहि कप्पं ॥१२६९॥ खिप्पं किरं एरय वग्गु वग्गुं हसो व पग्गह सनिकं निकुजं विन्द्स्सेरेन स्विकप्पितेन, सब्बेव ते उज्ज्ञगता सुणोम ॥१२७०॥ पहीनजातिमरणं असेसं निग्गयह धोनं वदेस्सामि धम्मं. न कामकारो हि पूथ्ज्जनानं, सखेय्यकारो'वव तथागतानं ।।१२७१।। सम्पन्न वैय्याकरणं तवेद समुञ्जापञ्जास्स सम्ग्गहीतं ; अयमञ्जलि पश्चिमो सुप्पणामितो, मा मोहयि जानमनोमपञ्जा ।।१२७२।। परोवरं अरियधम्म विदित्वा मा मोहिय जानमनोमिवरिय,

वारि यथा घम्मनिघम्मतत्तो वाचाभिकङखामि, सूत पवस्स ।।१२७३॥

यदित्थयं ब्रह्मचरियं अचारि कप्पायनो किच्चि'स्स तं अमोघं; निब्बायि सो आहु सोपादिसेसो; यथा विमुत्तो अहु तं सुणोम ॥१२७४॥ अच्छोच्छि तण्हं इघ माम रूपे'ति भगवा, तण्हाय सोत दीघरनानुसयितं अतारि जाति मरणं असेसं इच्चब्रवि भगवा पञ्चसेट्टो 11१२७५॥ एस सूत्वा पमीदामि वचो ते इसिसत्तम, अमोघं किर मे पुट्रंन मं बञ्चेसि ब्राह्मणो ॥१२७६॥ यथावादी तथाकारी अह बुद्धस्स सावको, अच्छेच्छि मच्चुनो जालं तथ मायाविनो-दळ्हं ।।१२७७॥ अद्दस भगवा आदि उपादानस्स किप्पयो, अच्चगा वत कप्पायनो मच्चुधेय्यं सुदुत्तरं ॥१२७८॥ तं देवदेवं वन्दामिपुत्तं ते द्विपदुत्तम अनुजात महाबीर नागं नागस्स ओरसन्ति ॥१२७९॥ इत्थ सुदं आयस्मा वद्धगीसोथेरो गायायो अभासित्था'ति, महानिपातो निट्ठति। सत्तर्तिम्हं निपताम्हि वद्भगीसो पटिभाणवा एको 'वत्थेरो' नत्थङ्गो, गाथायो एकसत्तति । सहस्सं होन्ति ता गाथ। तीणि सट्टि सर्तानि च थेरा च द्वे सता सिट्ट चत्तारो च पकामिता। सीहनादं नदित्वान बुद्धपुत्ता अनासवा खेमन्तं पापुणित्वान अग्गिक्खन्धा व निक्बेता'ति।

निद्विता थेरगाथायो